राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 दक्षिण एशिया के प्रवासियों ने अमेरिका को समृद्ध किया.........

बीसीसीआई सचिव जय शाह पर रहेगी नजर, बन सकते हैं चेयरमैन......... 11

वर्ष : 12 | अंक : 98 | पटना, शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

नीट-यूजी फिर कराने के लिए यह ठोस आधार हो कि पूरी परीक्षा की शुचिता हुई है प्रभावित : न्यायालय

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट-यूजी 2024 को नए सिरे से कराने के लिए यह ठोस आधार होना चाहिए कि पूरी परीक्षा की शुचिता प्रभावित हुई है। भारत के प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने विवादों में घिरी राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक (नीट-यूजी) 2024 से जुड़ी याचिकाओं पर अहम सुनवाई शुरू की। पीठ ने कहा कि इसके सामाजिक प्रभाव हैं। न्यायालय ने नीट-यूजी से जुड़ी याचिकाओं से पहले सूचीबद्ध मामलों की सुनवाई स्थगित कर दी और कहा, हम आज मामले पर सुनवाई करेंगे। लाखों युवा छात्र इसका इंतजार कर रहे हैं, हमें सुनवाई करने और निर्णय लेने दीजिए। पीठ ने परीक्षा रद्द करने, पुनः परीक्षा कराने और पांच मई को हुई परीक्षा में कथित अनियमितताओं की अदालत की निगरानी में जांच कराने का अनुरोध कर रहे याचिकाकताओं से यह दिखाने के लिए कहा कि प्रश्न पत्र व्यवस्थागत तरीके से लीक किया गया और उससे पूरी परीक्षा पर असर पड़ा, इसलिए इसे रद्द करना जरूरी है। सीजेआई ने कहा, पुनः परीक्षा कराने के लिए यह ठोस आधार होना चहिए कि पूरी परीक्षा की शुचिता पर असर पड़ा है। इस मामले की जांच के मुद्दे पर पीठ ने कहा, सीबीआई जांच कर रही है। सीबीआई ने हमें जो बताया है

अगर उसका खुलासा कर दिया जाता है तो इससे जांच पर असर पड़ेगा। इस मामले की सुनवाई जारी है। उच्चतम न्यायालय 40 से अधिक याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है। इनमें राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी की याचिका भी शामिल है, जिसमें उसने, परीक्षा में कथित अनियमितताओं को लेकर विभिन्न उच्च न्यायालयों में उसके खिलाफ लंबित मामलों को उच्चतम न्यायालय में स्थानांतरित करने का अनुरोध किया है। उच्चतम न्यायालय ने 11 जुलाई को नीट-यूजी 2024 से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई 18 जुलाई तक टाल दी थी। इन याचिकाओं में नीट-यूजी 2024 के आयोजन में कथित अनियमितताओं एवं कदाचार की जांच करने, परीक्षा रद्द करने और नये सिरे से परीक्षा आयोजित करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। पांच मई को 23.33 लाख से अधिक छात्रों ने 571 शहरों के 4,750 केंद्रों पर नीट-यूजी परीक्षा दी थी। इन शहरों में 14 विदेशी शहर भी शामिल थे। केंद्र और एनटीए ने उच्चतम न्यायालय में दाखिल अपने हलफनामों में कहा था कि बड़े पैमाने पर गोपनीयता के उल्लंघन के किसी भी सबूत के अभाव में परीक्षा को रद्द करना प्रतिकूल होगा और यह लाखों ईमानदार उम्मीदवारों को गंभीर रूप से खतरे में डालेगा।देश भर के सरकारी और निजी संस्थानों में एमबीबीएस, बीडीएस, आयुष और अन्य संबंधित पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए एनटीए द्वारा राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक (नीट-यूजी) परीक्षा आयोजित की जाती है।

पटना एम्स के तीन छात्रों से पूछताछ

नई दिल्ली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक प्रश्नपत्र लीक मामले में एम्स पटना के तीन छात्रों से पूछताछ की है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। जिन छात्रों से पूछताछ की गई है, उनके बारे में फिलहाल कोई जानकारी नहीं दी गई है। अधिकारियों ने बताया कि सीबीआई ने राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान जमशेदपुर के 2017 बैच के सिविल इंजीनियर पंकज कुमार उर्फ आदित्य को मंगलवार को गिरफ्तार किया था। आरोप है कि कुमार ने हजारीबाग में राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी के ट्रंक से नीट-यूजी का प्रश्नपत्र चुराया था। अधिकारियों के मुताबिक, बोकारो निवासी कुमार को पटना से गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि सीबीआई ने राजू सिंह नामक व्यक्ति को भी गिरफ्तार किया है, जिसने कथित तौर पर पेपर चुराने में कुमार की मदद की थी। सिंह को हजारीबाग से गिरफ्तार किया गया। मेडिकल प्रवेश परीक्षा में कथित अनियमितताओं की जांच कर रही सीबीआई ने छह प्राथमिकी दर्ज की हैं।

संक्षिप्त खबरें

प्रधानमंत्री मोदी ने अश्वनी वैष्णव को दी जन्मदिन की बधाई

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को केंद्रीय रेल मंत्री अश्वनी वैष्णव को उनके जन्मदिन पर बधाई दी। प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर लिखा, केंद्रीय मंत्री अश्वनी वैष्णव को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। वह उन प्रमुख क्षेत्रों में प्रयासों का नेतृत्व कर रहे हैं जो भारत के विकास को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण हैं। वह लंबा और स्वस्थ जीवन जिएं। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में अश्विनी वैष्णव को दूसरी बार रेल मंत्रालय के अलावा बेहद अहम सूचना प्रौद्योगिकी के साथ ही सूचना एवं प्रसारण जैसे तीन बड़े मंत्रालयों की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वैष्णव आईएएस की नौकरी छोड़ने के बाद कॉरपोरेट की दुनिया में भी रहे हैं। इसके बाद वे राजनीति में आए।18 जुलाई, 1970 को राजस्थान के पाली जिले में जन्मे वैष्णव की शुरूआती पढ़ाई सेंट एंथोनी कान्वेंट स्कूल, जोधपुर में हुई।

न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह, न्यायमूर्ति आर महादेवन ने ली उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश पद की शपथ

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने गुरुवार को न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह और न्यायमूर्ति आर महादेवन को शीर्ष अदालत के न्यायाधीश पद की शपथ दिलाई। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने शीर्ष अदालत परिसर में आयोजित एक समारोह में दोनों न्यायाधीशों को पद की शपथ दिलाई। इस अवसर पर शीर्ष अदालत के अन्य न्यायाधीशों, अनेक वरिष्ठ अधिवक्ताओं समेत कई गणमान्य लोग मौजूद थे। शीर्ष अदालत में न्यायाधीश बनने से पहले न्यायमूर्ति कोटिश्वर जम्मू-कश्मीर और लद्दाख उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और न्यायमूर्ति महादेवन मद्रास उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश थे। मूल रूप से मणिपुर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे न्यायमूर्ति सिंह अपने राज्य के पहले न्यायाधीश हैं जिन्हें उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश के पद पर पदोन्नत किया गया। न्यायमूर्ति महादेवन मूलतः तमिलनाडु उच्च न्यायालय से आते हैं। दोनों न्यायाधीशों के शपथ ग्रहण के साथ ही शीर्ष अदालत के लिए कुल निर्धारित 34 न्यायाधीशों की संख्या पूरी हो गई।

बिहार भाजपा प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में अभिनन्दन प्रस्ताव पारित

भाजपा ने 2025 में फिर से बिहार में एनडीए की सरकार बनाने का लिया संकल्प

- 2025 बिहार विस चुनाव में 2010 से भी अधिक सीटें जीतेंगे : सम्राट
- कांग्रेस का 13 राज्यों में कोई सांसद नहीं : विनोद तावड़े
- अगले विधानसभा चुनाव में फिर से एनडीए की सरकार बननी तय : विजय

प्रात : किरण

पटना। बिहार की राजधानी पटना के श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल के सुशील मोदी सभागार में गुरूवार को बिहार भाजपा विस्तृत कार्यसमिति की बैठक हुई। इस बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर उनके अभिनन्दन प्रस्ताव पास किया गया। बैठक के बाद भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि इस बैठक में अभिनन्दन प्रस्ताव पास किया गया तथा आने वाले 2025 के विधानसभा चुनाव में फिर से एनडीए की पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने को लेकर संकल्प लिया गया। उन्होंने बताया कि बैठक में देश के प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी जी का अभिनंदन किया गया। पंडित नेहरू के बाद नरेंद्र मोदी जी ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद संभालने का काम किया। इस बैठक में बिहार की जनता और कार्यकताओं का भी अभिनन्दन किया गया। उन्होने बिहार की जनता का अभिनन्दन करते हुए कहा कि प्रदेश की जनता 2009, 2014,2019 हो 2024 हो लगातार एनडीए को समर्थन देने का काम कर रही है। जनता ने तो विरोधियों को दो अंकों तक भी नहीं पहुंचने दिया। श्री चौधरी ने कहा कि कार्यसमिति की बैठक में नरेंद्र मोदी जी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर अभिनंदन प्रस्ताव पारित किया गया। यह भी संकल्प लिया गया कि 2025 के चुनाव में बिहार की जनता के आशीर्वाद से 2010 से भी अधिक सीट जीतेंगे। बिहार में फिर से सरकार बनाने का काम करेंगे। इससे पहले इस बैठक की शुरूआत वंदे मातरम के सामूहिक गान से हुआ। बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि देश में पहली बार नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में किसी गठबन्धन कि सरकार तीसरी बार बनी है। विपक्ष में 33 पार्टियां भी मिलकर उतनी सीटें नहीं ला सकी। श्री चौधरी ने भाजपा को कमिटमेंट वाली पार्टी बताते हुए कहा कि 1950 में जो हमने वायदा किया था, वह अब जाकर पूरा हुआ। कश्मीर से धारा 370 हटाया गया। इस देश में कोई पार्टी ऐसी नहीं जिसकी कोई विचारधारा हो। भाजपा कभी अपनी विचारधारा से समझौता नहीं करती।

इस मौके पर उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि आज देश तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव परिणाम ने साबित किया है कि देश की जनता एनडीए के साथ है। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में फिर से एनडीए की सरकार बनेगी। बिहार के प्रभारी विनोद तावड़े ने दावा करते हुए कहा कि अगले विधानसभा चुनाव में एनडीए पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी। उन्होंने बिहार के कार्यकर्ता को हिन्द का सितारा बताते हुए कहा कि इस कार्य समिति की बातों को आगे तक ले जाएं। उन्होंने कहा कि एनडीए की प्राथमिकता बिहार को विकसित बनाना है और इसमें हम सब को लग जाना है। संगठन महामंत्री भीखू भाई दलसानिया ने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम लगाने के अभियान को 15 अगस्त तक बढ़ा दिया गया है। उन्होंने कहा कि 30 जुलाई तक सभी जिला में कार्यसमिति की बैठक कर ली जाए तथा 15 अगस्त तक सभी मंडालों मे कार्यसमिति हो जाये। उन्होंने लोकसभा चुनाव परिणाम को लेकर जनता को अभिनन्दन करने की भी कार्यकताओं से अपील की। इस मौके पर एक प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका शुभारंभ प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने किया। इस प्रदर्शनी के जरिये दिवंगत नेता सशील कुमार मोदी के जीवन को दशार्या गया। प्रदर्शनी में केंद्र और प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को भी प्रदर्शित किया गया। बैठक के अंत मे राज्यसभा साँसद धर्मशीला गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। बैठक में मंच पर प्रभारी विनोद तावड़े, प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी, उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, केंद्रीय गृह राज्यमंत्री नित्यानंद राय, केंद्रीय मंत्री सतीश चंद्र दुबे, केंद्रीय मंत्री राज भूषण चौधरी, मंत्री मंगल पांडेय, राष्ट्रीय मंत्री ऋतुराज सिन्हा, सांसद राधामोहन सिंह, संजय जायसवाल, क्षेत्रीय संगठन महामंत्री नागेंद्र जी, प्रदेश संगठन महामंत्री भीखू भाई दलसानिया सहित कई नेता मौजूद रहे।

बैठक में अभिनन्दन प्रस्ताव किया गया पारित

बैठक में अभिनन्दन प्रस्ताव पारित किया गया। इससे पहले पूर्व अध्यक्ष डॉ संजय जायसवाल ने अभिनन्दन प्रस्ताव पेश किया, जिसका अनुमोदन पूर्व अध्यक्ष राधामोहन सिंह, उप मुख्यमंत्री विजय सिन्हा, मंत्री मंगल पांडेय, केंद्रीय मंत्री नित्यानन्द राय, मंत्री रेणु देवी, जनक चमार, कृष्णनंदन पासवान ने किया। इसके बाद कार्यसमिति के सदस्यों ने हाथ उठाकर उसका समर्थन किया और यह प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए की पूर्ण बहुमत के साथ तीसरी विजय लोकतान्त्रिक भारत के इतिहान में एक बड़ी उपलब्धि है। यह नरेन्द्र मोदी की बतौर प्रधानमंत्री विलक्षण उपलब्धियों, कार्यकताओं के परिधम एवं जनता के स्नेह और आशीर्वाद का साझा नतीजा है। यह कार्यसमिति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, आप सभी कार्यकताओं एवं जनसामान्य का अभिनंदन करती है। प्रस्ताव में कहा गया कि विकसित भारत हर पीढ़ी के भारतीय का सपना रहा है। भारत को 2047 तक विकसित बनाने के लक्ष्य को आत्मसात करते हुए प्रधानमंत्री जी ने इसकी दिशा दिखाई है, और कहा है कि भारत के युवाओं में हर वह शक्ति है को इसे एक विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकती है। प्रधानमंत्री जी ने विगत 10 वर्षों में विकसित भारत की आधारशिला रखी है, और उसका ही प्रभाव है की बम, तकनीक अवसंचना, श्रम उत्पादकता एवं हथियारों के मामले में हमने आत्मनिर्भरता हासिल करने के दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं।

ट्रेन हादसा: डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के 8 कोच पटरी से उतर गए, दो की मौत

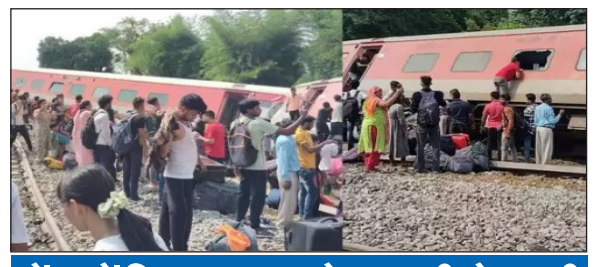

गोंडा में डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस पटरी से उतरी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उत्तर प्रदेश के गोंडा में चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस के 8 कोच पटरी से उतर गए। रेलवे के मुताबिक हादसे में 2 यात्रियों की मौत हुई है और 8 यात्री घायल हुए हैं। रेलवे के मुताबिक लोको पायलट ने हादसे से पहले धमाके की आवाज सुनी थी। दुर्घटनाग्रस्त ट्रेन के डिब्बे में कई यात्री फंसे हुए थे जिन्हें रेस्क्यू टीम ने निकाल लिया है। जानकारी के मुताबिक हादसे में ट्रेन का एक एसी कोच बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने घटना का संज्ञान लिया और अधिकारियों को घटनास्थल पर तुरंत पहुंचने का निर्देश दिया था। जानकारी के मुताबिक एसडीआरएफ और रेलवे की टीम की ओर से जारी रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। इस बीच रेलवे ने मुआवजे का ऐलान कर दिया है। रेलवे की ओर इस हादसे को लेकर बयान जारी किया गया है। बयान के मुताबिक दोपहर 2 बजकर 37 मिनट पर चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ एक्सप्रेस (159904) हादसे का शिकार हो गई। दोपहर दो बजे यह ट्रेन गोंडा से रवाना हुई थी। करीब 27 किमी की दूरी तय करने के बाद झिलाही स्टेशन से 4 किमी आगे यह ट्रेन पटरी से उतर गई। चार से पांच कोच डिरेल हुए हैं। डिब्रुगढ़ एक्सप्रेस के सभी यात्रियों को स्पेशल बसों से मनकापुर रेलवे स्टेशन ले जाया जा रहा है। वहां से एक स्पेशल ट्रेन चलाई जायेगी और यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाया जाएगा। बताया जा रहा है कि यह हादसा गोंडा शहर से करीब 27 किलोमीटर की दूरी पर हुआ है।ट्रेन के पटरी से उतरते ही यात्रियों में हड़कंप मच गया। लोग घबराकर चिल्लाने लगे। दुर्घनाग्रस्त डिब्बे में कई यात्री फंसे हुए हैं जिन्हें रेस्क्यू टीम ने बाहर निकाला। हादसे के बाद रेलवे की मेडिकल टीम भी मौके पर पहुंची। एंबुलेंस से घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। पूर्वोत्तर रेलवे की महाप्रबंधक सौम्या माथुर ने घटनास्थल का जायजा लिया। उन्होंने दो रेल यात्रियों की मौत की पुष्टि करते हुए बताया कि मृतकों की शिनाख्त की जा रही है। हादसे में 31 रेल यात्री घायल हुए हैं, जिनमें दो की हालत गंभीर है। 26 घायलों को मनकापुर सीएचसी व तीन अन्य को सीएचसी काजीदेवर में भर्ती कराया गया है। नौ घायलों को गोंडा मेडिकल कॉलेज भेजा गया। पूर्वोत्तर रेलवे ने जानकारी दी है कि पटरी से उतरी ट्रेन में फंसे यात्रियों को बस से गोंडा के पास मनकापुर स्टेशन लाया जा रहा है। उनके लिए मनकापुर से डिब्रूगढ़ तक रास्ते में स्टॉपेज के साथ एक विशेष ट्रेन की व्यवस्था की गई है।

सौ किमी थी रफ्तार :

24 कोच वाली ट्रेन के इंजन के बाद एसी के छह कोच लगे थे, जिनमें दो कोच पटरी से उतरकर पलट गए। इसके बाद एसी के चार अन्य कोच भी पलट गए। विभागीय सूत्रों के अनुसार हादसे के समय ट्रेन की रफ्तार करीब सौ किमी प्रतिघंटे से अधिक थी। दुर्घटना के बाद डीएम नेहा शर्मा और एसपी विनीत जायसवाल के साथ अन्य अफसरों ने मौके पर पहुंचकर राहत कार्य तेज कराया। डीएम ने बताया कि दो शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, जबकि घायलों का बेहतर उपचार कराया जा रहा है। आसपास के ग्रामीणों ने पलटे एसी कोच के शीशे तोड़कर अंदर फंसे यात्रियों को बाहर निकाला। एसडीआरएफ, पुलिस व आरपीएफ के जवानों ने मोर्चा संभाल लिया।

अभियान आतंकियों ने घाटी के मैदान को छोड़कर घने जंगलों में बनाया नया ठिकाना.........

सेना ने पीर पंजाल की दक्षिणी पहाड़ियों में शुरू किया ऑपरेशन सर्प विनाश

- प्राकृतिक गुफाओं और सुरंगों को छिपने के लिए आतंकी बना रहे हैं सहारा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। जम्मू संभाग के डोडा जिले में एक कर्नल और तीन जवानों की शहादत के बाद सेना ने सीमा पार से घुसपैठ करके जंगलों में छिपे आतंकवादियों का सफाया करने के लिए ऑपरेशन सर्प विनाश शुरू कर दिया है। कश्मीर घाटी के सपाट इलाकों को छोड़कर इस बार आतंकियों ने पीर पंजाल की दक्षिणी पहाड़ियों में नया ठिकाना बनाया है। यहां के घने जंगलों की प्राकृतिक गुफाओं और सुरंगों में छिपकर आतंकी लगातार सेना को निशाना बना रहे हैं। पीर पंजाल की दक्षिणी पहाड़ियों में बड़ी-बड़ी चट्टानों से सुरंग और गुफाएं बनी हैं, जिनका इस्तेमाल 90 के दशक में सीमा पार से घुसपैठ करने वाले आतंकी करते थे। तब सेना ने बड़ी संख्या में तैनाती करके यहां से आतंकवाद का पूरी तरह सफाया कर दिया था। उस समय यहां आतंकरोधी ग्रिड बनाई गई थी लेकिन खात्मे के बाद हटा ली गई। इस इलाके में शांति आने के बाद सेना की तैनाती भी कम कर दी गई लेकिन अब सेना की कमी से आतंकियों ने फिर यहां ठिकाना बना लिया है। सीमा पार से करीब 50 आतंकियों ने घुसपैठ की है। इस समय राजौरी, पुंछ में 12 और डोडा, रियासी में 20 आतंकियों की संख्या है। यह आतंकी इन्हीं जंगलों में छिपकर लगातार रास्ते बदल रहे हैं, क्योंकि उन्हें घने जंगलों के बारे में जानकारी है। जम्मू संभाग में 78 दिनों में हुए 11 आतंकी हमलों की जिम्मेदारी कश्मीर टाइगर्स ने ली है, जो मसूद अजहर के संगठन जैश-ए-मोहम्मद का दूसरा नाम है। इन आतंकियों को पीओके में ट्रेनिंग मिली है। आतंकवादी हमलों के बीच पिछले माह एक खुफिया रिपोर्ट में पुंछ और राजौरी सेक्टर में करीब 40 विदेशी आतंकवादियों के मौजूद होने की जानकारी दी थी। सेना ने डोडा जिले में एक कर्नल और तीन जवानों की शहादत का बदला लेने के लिए ऑपरेशन सर्प विनाश शुरू कर दिया है। इस क्षेत्र में आतंकवादियों की तलाश में भारतीय सेना ड्रोन और हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल कर रही है, क्योंकि आतंकी पहाड़ियों की ऊंचाई पर बैठकर सेना को निशाना बना रहे हैं। आतंकियों की खोज में स्नीपर डॉग यूनिट को भी लगाया गया है। ऑपरेशन का जायजा लेने के लिए सेना के वरिष्ठ अधिकारी गुरुवार को मौके पर पहुंचे हैं। इसके बावजूद जम्मू-कश्मीर में डोडा जिले के एक वन क्षेत्र में चार घंटे के अंतराल में सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच दो बार गोलीबारी हुई है। जिले के भट्टा इलाके में बुधवार की देर रात को पाकिस्तानी आतंकवादियों के बीच गोलीबारी हुई है। डोडा जिले के एक जंगल में गुरुवार तड़के आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में दो जवान घायल हो गए हैं। कुपवाड़ा जिले के केरन इलाके में गुरुवार को सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई, जिसमें सुरक्षाबलों ने दो आतंकवादियों को मार गिराया है। राजौरी जिले के सुंदरबनी में नियंत्रण रेखा पर बीती रात लगभग नौ बजे सीमांत क्षेत्र दादर के पास संदिग्ध गतिविधि के बाद सेना ने गोलीबारी की है लेकिन जंगलों के भीतर छाई धुंध से अभी तक संदिग्धों का कुछ पता नहीं लग पाया है।

घुसपैठ की कोशिश नाकाम, दो आतंकवादी ढेर

श्रीनगर। सुरक्षा बलों ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में गुरुवार को नियंत्रण रेखा के पास घुसपैठ की कोशिश नाकाम करते हुए दो आतंकवादियों को मार गिराया। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इलाके में घुसपैठ की खुफिया सूचना के आधार पर तलाशी अभियान चलाया जा रहा था। तलाशी अभियान के दौरान वहां छिपे हुए आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर गोलीबारी शुरू कर दी। सुरक्षा बलों ने जवाबी कार्रवाई की, जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गयी। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गये, मारे गये आतंकवादियों की नहीं की जा सकी है।

18 से 31 जुलाई तक नि:शुल्क बनेगा जनवितरण दुकानों पर आयुष्मान कार्ड

एक करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रक्रिया प्रारंभ : मंगल

- वंचित लाभार्थियों के लिए विशेष अभियान सुनहरा अवसर

प्रात : किरण

पटना। स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि गुरुवार से राज्य की जनवितरण प्रणाली दुकानों पर आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रक्रिया विशेष अभियान के तहत शिविर लगाकर प्रारंभ कर दी गयी है, जो 31 जुलाई तक चलेगी। इस दौरान एक करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस अभियान अंतर्गत आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री - जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के लाभार्थियों का कार्ड निर्गत किया जाएगा। आयुष्मान कार्ड की उपलब्धता से आर्थिक रुप से कमजोर लोगों व गरीबों को मुफ्त इलाज कराने की सुविधा मिलती है। शिविर में पात्र लोगों को लाने की जिम्मेदारी सभी बीडीओ को दी गई है। बीडीओ इस अभियान का अनुश्रवण करेंगे। अभियान की सफलता के लिए जिलाधिकारी व सिविल सर्जन को संचालन व अनुश्रवण का जिम्मा सौंपा गया है। श्री पांडेय ने कहा कि आयुष्मान कार्ड निर्गत करने में किसी प्रकार की असुविधा न हो इसका विशेष ख्याल रखा जा रहा है। राज्य में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत 1.79 करोड़ राषन कार्डधारी परिवार हैं। जिनमें से अब तक लगभग 1 करोड़ 39 लाख 87 हजार 827 परिवार का कार्ड बन चुका है। जिसके तहत 2 करोड़ 95 लाख 9 हजार 726 लाभार्थी का कार्ड निर्माण किया जा चुका है। शत - प्रतिशत कार्ड बनाने के लक्ष्य को फलीभूत करने की दिशा में ये विशेष अभियान संचालित किया जा रहा हैं। इस अभियान के तहत आयुष्मान कार्ड बिल्कुल मुफ्त बनेगा। राज्य के सभी जन वितरण प्रणाली दुकानों पर सीएससी के वीएलई द्वारा कार्ड बनाया जा रहा है। श्री पांडेय ने कहा कि कैंप में पात्र लाभार्थियों के बैठने की व्यवस्था और ऑपरेटर के लैपटॉप, प्रिंटर, बायोमेट्रिक मशीन और एंड्राइड मोबाइल के साथ बैठने की व्यवस्था की गयी है। आयुष्मान भारत योजना के तहत सूचीबद्ध विभिन्न अस्पतालों में ईलाज की सुविधा मुहैया करवायी जाती है। गरीब व जरूरतमंद लोगों के लिये आयुष्मान भारत कार्ड वरदान के रूप में साबित हुआ है।

इस योजना के तहत आयुष्मान कार्ड धारकों को प्रतिवर्ष ईलाज के लिये पांच लाख तक की सुविधा मुहैया करायी जाती है। जिन लोगों ने अब तक कार्ड नहीं बनाया है, उनके लिए यह सुनहरा मौका है। कार्ड बनवाने के लिए पारिवारिक पहचान के लिए राशन कार्ड और खुद की पहचान के लिए आधार कार्ड लेकर जनवितरण प्रणाली की दुकान पर जाना अनिवार्य होगा। प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना से छूटे लोगों के लिए मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना का कार्ड बनाया जाएगा।

संक्षिप्त खबरें

जिमी शेरगिल एचएमडी 105 और 110 अभियान के चेहरा बने

पटना। ह्यूमन मोबाइल डिवाइस (एचएमडी) ने अपने एचएमडी 105 और 110 फीचर फोन के लिए अभिनेता जिमी शेरगिल की विशेषता वाला एक नया अभियान शुरू किया है। हिंदी और पंजाबी सिनेमा में अपनी भूमिकाओं के लिए जाने जाने वाले शेरगिल खूब चलेगा अभियान के मुख्य आकर्षण हैं, जो आउट-ऑफ-होम (ओओएच), सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर फैला हुआ है। एचएमडी इंडिया और एपीएसी के उपाध्यक्ष रवि कुंवर ने कहा कि जिमी का मजबूत, लचीला और भरोसेमंद व्यक्तित्व हमारे फीचर फोन की भावना को पूरी तरह से दशार्ता है, जिन्हें टिकाऊ, भरोसेमंद और आम लोगों के लिए सुलभ होने के लिए डिजाइन किया गया है। वहीं शेरगिल ने गठबंधन के बारे में अपना उत्साह साझा किया, जिसमें एचएमडी के फीचर फोन की विश्वसनीयता और पहुंच पर प्रकाश डाला। पटना में यह अभियान काफी चर्चा में है। स्थानीय बाजारों में एचएमडी 105 और 110 मॉडल की मांग में उछाल की उम्मीद है।

बंद घर का तालाकाट कर लाखों की जेवरात ले उड़े चोर

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत गोलारोड बैंक कालोनी रोड नंबर तीन ए में बैंक अधिकारी के बंद घर का ताला काटकर चोरो ने 50 हजार नगद समेत करीब डेढ़ लाख के जेवरात ले उड़े सूचना मिलते ही पहुंची पुलिस छानबीन करते हुए आस पास के सीसीटीवी फूटेज खंगालने में जुटी है। इस संबध में बैंक अधिकारी मुकुंद माधव ने लिखित शिकायत किये है। उन्होने बताया कि 13 जुलाई की सुबह वे रांची के लिए निकले थे। 18 जुलाई की सुबह वापस आये। जब घर पहुंचे तो बाहरी परिसर के मुख्य द्वार का ताला लगा मिला। जब अंदर गये तो ताला टूटा था। घर के प्रथम तल व दूसरे तल के सभी कमरे के अंदर रखे गोदरेज का ताला टूटा था। गोदरेज का लाकर टूटा था। उसमे रखे नगद और जेवरात गायब थे। मुकुंद ने बताया कि चोरो ने करीब 50 हजार नगद व चांदी के सिक्का व कुछ जेवरात ले उड़े सूचना पर पहुंची पुलिस छानबीन करते हुए आस पास के सीसीटीवी फूटेज खंगाला। जिसमे 15 जुलाई की रात करीब 01:05 बजे दो संदिग्ध घर के पास घुमते दिख रहा है। पुलिस मामला दर्ज कर कार्रवाई में जुटी है।

एक युवक का शव बरामद, नशे का आदी था मृतक

दानापुर। थाना क्षेत्र के अंतर्गत तकीयपर स्थित नाले से एक 22 वर्षीय युवक का शव बरामद किया गया है। युवक की पहचान तेजपुर आसाम का रहने वाला अनारूल के रूप में की है। फिलहाल वह नासरीगंज स्थित किराये के मकान में रहता था व फेरी कर कबाड़ चुनने का कार्य करता था और वह नशे का आदी था। जानकारी के अनुसार गुरूवार की दोपहर लोगों ने एक युवक को तरीयापर स्थित एक सामुदायिक भवन के पास स्थित नाले में पड़ा देखा। लोगों ने तत्काल इसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी जो मौके पर पहुंच युवक को बाहर निकाला पर तबतक उसकी मौत हो चूकी थी। स्थानीय लोगों के मुताबिक मृतक तेजपुर आसाम राज्य का रहने वाला था जो नासरीगंज किराये के मकान में रहकर फेरी कर कबाड़ चुनने का कार्य करता था। मृतक अनारूल ब्राउन सुगर जैसी नशे का आदी था। दो वर्ष पहले उसकी नशे की लत के चलते उसकी पत्नी भी उसे छोड़ चूकी थी। लोगों के मुताबित मृतक के शरीर पर सिर्फ पैंट था। उसके शरीर पर इन्जेक्शन के कई निशान थे। वहीं स्थानीय पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज मृतक के परिजनों को सूचित कर दिया है।

संगत कीजै साधु की कभी न निष्फल होय : मंहत ब्रजेश मुनि महाराज

फतुहा। गुरुवार को कबीरपंथी आश्रम कबीर साईं मंदिर मीठापुर में सत्संग भजन भण्डारा का आयोजन महंथ ब्रजेश मुनि महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित किया गया। सद्गुरु कबीर साहेब की प्रगट वाणी व्यक्त करते हुए कहा- संगत कीजै साधु की कभी न निष्फल होय। लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय। कबीर साहेब कहते हैं कि मनुष्य को सदा अच्छे व्यक्तियों या महापुरुषों की संगति करनी चाहिए। साधु से संगति कभी व्यर्थ नहीं जाती। उसका सुपरिणाम व्यक्ति को अवश्य प्राप्त होता है। लोहा काला-कुरूप होता है, किन्तु पारस का स्पर्श होने पर वह भी अति सुन्दर सोना बन जाता है। यह सत्संग का ही प्रभाव है। इस अवसर पर मंहत डॉक्टर डी भास्कर, संत अशोक दास, इंस्पेक्टर अमरेंद्र पासवान, संत करसन मुनि, संत महेश मुनि उपस्थित थे। इस दौरान महिला श्रद्धालु ने कबीर एवं साई भजनों की स्तुति भक्ति मती रूबी देवी, उषा देवी, चन्देश्वर गजेन्द्र झा ने वातावरण को भक्तिमय बनाया।

छोटे बच्चों को डेंगू से बचाएं, मच्छरदानी और बच्चों में डालें स्वच्छता के पालन की आदत

डेंगू लक्षण को पहचानें, ससमय इलाज से करें रोग का निदान

प्रात :किरण संवाददाता

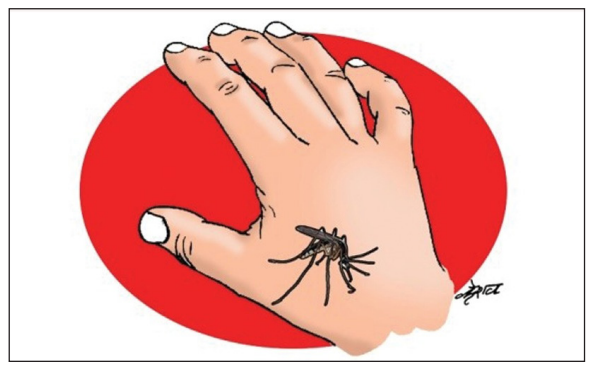

पटना- बारिश के मौसम में सर्वाधिक खतरा डेंगू का होता है. बच्चे इससे खासकर ज्यादा प्रभावित होते हैं क्यूंकि वह घर के बाहर स्कूल एवं खेलने के लिए जाते हैं। इसलिए अपने छोटे बच्चों को इससे बचाने के लिए सतर्क रहें. हालांकि डेंगू के मच्छर किसी को भी काट सकते हैं किन्तु छोटे बच्चे की रोग प्रतिरोधक शक्ति दूसरों से कम होती है. इसलिए उन्हे सुरक्षा की जरूरत भी ज्यादा है।

जाने क्या हैं सुरक्षा के उपाय :

अपर निदेशक सह राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि ने डेंगू मादा एडीज मच्छर के काटने से होता है इसलिए इससे बचाव के लिए मच्छरदानी का उपयोग करना सबसे आसान और बेहतर उपाय है. इसलिए बच्चों को हमेशा मच्छरदानी में सुलाएँ. एडीज मच्छर दिन में भी सक्रिय रहते हैं। इसलिए बाहर खेलने जाते समय भी बच्चों को पूरे शरीर को ढंकने वाले कपडे पहनाएं और शरीर के खुले हिस्से में मच्छर भगाने वाली क्रीम का इस्तेमाल करें. गंदगी और जलजमाव डेंगू फैलने का सबसे बड़ा कारण है इसलिए अपने आस-पास साफ सफाई रखें. खाली बर्तन,डब्बे,गमले,घर के आस-पास की नालियाँ समय समय पर साफ करें गंदा पानी न जमने दें. घर को अंधकार मुक्त और हवादार बनाएँ तथा जमे हुये पानी पर कीटनाशक का प्रयोग कर मच्छरों को नष्ट कर दें।

लक्षणों को पहचानें और ससमय इलाज कराएं:

डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि डेंगू ,मलेरिया या टाइफाइड इन सब के बुखार और लक्षण लगभग एक से हैं. किन्तु फिर भी सामान्य से अधिक तेज बुखार, तेज सिरदर्द, आंखों के पीछे दर्द, मांसपेशियों में सूजन और तेज दर्द, हड्डियों में दर्द, उल्टी और जी मीचलाना, भूख और स्वाद ना लगना, शरीर पर काले चकत्ते पड़ जाना जैसे लक्षण दिखते ही सतर्क हो जाएँ. ये सब डेंगू के लक्षण भी हो सकते हैं इसलिए बच्चे को तुरंत चिकित्सक के पास ले जाएँ तथा डेंगू का टेस्ट जरूर करवाएँ। ताकि टेस्ट से पता चल सके की यह सामान्य डेंगूबुखार, रक्तस्रावी डेंगू या डेंगू सिंड्रोम है. इससे चिकित्सकों को सही इलाज करने में मदद मिलेगी और बच्चे को इस जानलेवा रोग से कोई नुकसान नहीं होगा. बिना चिकित्सकीय परामर्श के कोई भी दवा खुद से ना दें।

बच्चों में डालें स्वच्छता के पालन की आदतः

डॉ. अशोक कुमार ने बताया कि सभी को स्वच्छता का पालन करना हितकर है. बच्चों में यह आदत डालना एक साकारात्मक पहल साबित होगी क्यूंकि बच्चे घर से बाहर स्कूल जाते समय अथवा खेलते समय कई तरह की चीजों के संपर्क में आते हैं. बच्चों को समझाएं कि जहाँ तक हो सके बाहर की चीजों का सेवन करने से बचें. उन्हें पौष्टिक भोजन दें,ज्यादा पानी की सलाह दें ताकि बच्चा स्वस्थ रहे।

ई-रिक्शा के कारोबार में 12.60 लाख रुपया ठगी का मामला

- पीड़ित ने सुलतानगंज थाना में निदेशकों पर दर्ज कराया मामला

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रोफेसर कालोनी निवासी जसमीन से ई-रिक्शा के कारोबार में 12.60 लाख रुपया ठगी करने का मामला प्रकाश में आया है। इस संबंध में सुल्तानगंज थाना में मामला दर्ज कराया गया है। पुलिस मामला दर्ज कर छानबीन कर रही है।

पुलिस को दिए आवेदन में कहा गया है कि जनवरी, 2022 में कंपनी के निदेशक कृष्णा ने मोबाइल पर संपर्क कर ई-रिक्शा के उत्पादन, विनिर्माण व विपणन की करने की बात कही। उन्होंने नई परियोजना के बारे में बताते हुए ई-रिक्शा को किराया पर चलाने के लिए निविदा का प्रस्ताव दिया। एक ई-रिक्शा की कीमत 1.65 लाख बताया गया। उन्होंने बताया कि एक ई-रिक्शा मद में 1.65 लाख का निवेश करने पर प्रति माह 11 माह तक दस हजार रुपया का भुगतान किया जाएगा।

12वें माह में 95 हजार दिया जाएगा। उनसे मिले प्रस्ताव पर उन्होंने विचार करने के बाद निवेश भी किया। इसके बाद कंपनी द्वारा समय-समय पर राशि भी दी गई। जब राशि लौटाने की बारी आई, तो वे टाल-मटोल करने लगे। वह लालच देकर सात और ई-रिक्शा दिए।

जब कंपनी द्वारा 12.60 लाख देने की बारी आई, तो कंपनी निदेशक ने फोन रिसीव करना बंद कर दिया। उसके बाद रुपए लौटाने के नाम पर तरह-तरह की धमकी दिया जाने लगा। बाद में पीड़ित ने थाना में प्राथमिकी दर्ज करा कंपनी के निदेशकों से 12.60 लाख की वसूली के लिए कानूनी कार्रवाई की गुहार लगाई है।

व्यापार प्रकोष्ठ सांसद रविशंकर का 21 को करेगा अभिनंदन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

खाजेकलां के पानी टंकी स्थित रतन पैलेस में भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ पटना महानगर की ओर से 21 जुलाई को अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया है। इसमें सांसद रविशंकर प्रसाद का अभिनंदन किया जाएगा। संयोजक पंकज गुप्ता ने बताया कि आयोजन में विधानसभा अध्ययक्ष नंदकिशोर यादव, नगर विकास मंत्री नितिन नवीन, विधायक अरुण कुमार सिन्हा व संजीव चौरसिया, प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक राजू गुप्ता, महापौर सीता साहू व उपमहापौर रेशमी चंद्रवंशी शामिल होंगी। इसकी तैयारियों को ले बैठक हुई। इसमें प्रवक्ता संजीव कुमार सिन्हा, सह संयोजक मुकेश कुमार मंटू, पंकज सिन्हा, विमल कुमार बिट्टू, राजीव रंजन सिंह आदि शामिल हुए।

प्रवास के दौरान भगवान जगन्नाथ का हुआ श्रृंगार पूजन व भजन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

गोपीनाथ जी गली स्थित 129 वर्ष प्राचीन जगन्नाथ मंदिर से 13 दिनों के प्रवास में लल्लू बाबू के कूचा स्थित मंदिर में रह रहे भगवान जगन्नाथ की पूजा-अर्चना आचार्य पंडित रामानंद पांडेय की देखरेख में चल रहा है। गुरुवार को भगवान गोवद्धर्धन पर्वत उठाए भक्तों को दर्शन दिए। आयोजन में आचार्य सुरेश मिश्र ने पूजा-अर्चना कराई। कृष्ण पांडेय ने भजन कीर्तन की प्रस्तुति दी। आयोजन में सचिव गणोश प्रसाद रोहगती, हर्षकृष्ण रोहगती, सचिच्दानंद शर्मा, अंबुज रोहतगी, कृष्ण कुमार सिन्हा, प्रह्लाद अग्रहरि, कृष्णा जायसवाल, राजीव रोहगती, संजीव सिन्हा, अखिल, धुव्र, चंदन सिंह, भानू शर्मा, विशाल आदि शामिल थे। दीवान मुहल्ला के नौजर घाट स्थित प्राचीन जगन्नाथ मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना का अनुष्ठान पुजारी आचार्य विष्णुकांत झा की देखरेख में किया गया। आचार्य रामानंद पांडेय ने बताया कि 21 जुलाई गुरु पूर्णिमा के दिन यहां से रथयात्रा वापस लौटेगी। शुक्रवार को भगवान से मिलने के लिए माता लक्ष्मी आएंगी। शनिवार को भगवान कालिया नाग पर भक्तों को दर्शन देंगे।

दूसरे दिन भी रात तक जारी रहा सिपहर व ताजिया का पहलाम

पुलिस प्रशासन के अधिकारी व पदाधिकारी मुस्तैद, वार्डन व शांति समिति सदस्य भी सक्रिय

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

मुर्हरम को स्थापित सिपहर व ताजियों का पहलाम लगातार दूसरे दिन गुरुवार को भी रात तक जारी रहा। पुलिस प्रशासन के अधिकारी व पदाधिकारी हर अखाड़ा का स्कॉर्ट करते और अस्थाई थाना में मौजूद दिखे। हर अखाड़ा के जुलूस की वीडियोग्राफी कराई गई। साथ ही ड्रोन उड़ा कर भी स्थिति पर नजर रखी गई। प्रशासन की ओर से पत्थर की मस्जिद, तिराहे की मस्जिद व दरगाह कर्बला में खुले अस्थायी थाना पर नगर पुलिस अधीक्षक भारत सोनी, एसडीओ गुंजन सिंह, एएसपी शरथ आरएस, डीएसपी-2 डॉ गौरव कुमार सहित अनेक पुलिस व प्रशासनिक अधिकारी जमे दिखे। शांति समिति के सदस्यों में पार्षद बैजू लाल दास, गणेश कुमार, कुन्दन कुमार, शंकर कुमार, प्रकाश कुमार, दिनेश कुमार, हरेन्द्र नाथ, मनोहर सिंह, अरविन्द त्रिवेदी, अरुण कुमार, अनूप कुमार, अखिलेश कुमार, अशोक कुमार, ब्रह्मदेव शर्मा, विनोद कुमार, सरदार प्रमोद सिंह सहित अन्य ने सहयोग किया। विभिन्न अखाड़ा के निकले पहलाम जुलूस के कारण अशोक राजपथ के गांधी मैदान से लेकर गायघाट के बीच ऑटो व अन्य वाहनों का परिचालन प्रभावित रहा। अधिकारियों की माने तो दो दिनों तक चले पहलाम में लगभग डेढ़ सौ से अधिक सिपहर व ताजियों का लाइसेंसी व गैर लाइसेंसी पहलाम दरगाह रोड स्थित कर्बला में किया गया है। पहलाम होने वाले प्रमुख अखाड़ों में चुन्नी लाल बांका मारूफगंज, चमडोरिया में स्थापित सिपहर व ताजिया, नौजर कटरा सहित कई छोटे-बड़े सिपहर व ताजिया शामिल है। पुरानी सिटीकोर्ट के पास नौजर कटरा व चमडोरिया के सिपहर का मिलन किया गया। खानकाह हरजत दीवान शाह अरजा के सज्जादानशीं सैयद शाह अंजार हुसैनी ने बताया कि कर्बला में दो दिनों तक पहलाम के बाद 12 मुहर्रम पर अलविदाई मजलिस होगी।

शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रही भाग्य मंदिर परिवार

दिल्ली में भी भाग्य मंदिर परिवार के शाखा का होगा विस्तार

प्रात :किरण संवाददाता

- जनकल्याण का पर्याय बना भाग्य मंदिर परिवार

पटना। लखनऊ स्थित भाग्य मंदिर परिवार आज जनकल्याण का पर्याय बन चुका है। गरीब, असहाय, अकेला या वैसा व्यक्ति जो अपने जिंदगी को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं, उनके लिए भाग्य मंदिर परिवार एक मात्र विकल्प बन कर उभरा है। मानव कल्याण के लिए भाग्य मंदिर परिवार अब जल्द ही दिल्ली में भी अपनी शाखा का विस्तार करने जा रही है। अपने स्वयंसेवको के मांग पर अब दिल्ली के लोगों को भी सौरभ गुरुजी का सानिध्य प्राप्त होगा। दिल्ली व आसपास के लोगों को अधिक से अधिक लाभ मिले, इस ओर कई अन्य कल्याणकारी कार्य करने की योजना तैयार की जा चुकी है।

बता दें सौरभ गुरुजी के मार्गदर्शन में महज कुछ ही वर्षों में लगभग 1000 से अधिक स्वयंसेवको के सहयोग से भाग्य मंदिर परिवार संस्था आज लाखों लोगों का जीवन सुधार चुका है। वर्तमान में संस्था के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से लगभग दो लाख लोग जुड़कर लगातार लोक हित में कार्य कर रहे हैं। भाग्य मंदिर परिवार के माध्यम से जनकल्याण के तो कई कार्य किये जाते रहे हैं लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तीन कार्य जो भाग्य मंदिर परिवार के लिए सर्वोपरि है और वो है शिक्षा, चिकित्सा और स्वास्थ्य।

शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए भाग्य मंदिर परिवार ने बुंदिलखंड क्षेत्र के लगभग 53 गांवों में मुफ्त कोचिंग सेंटर आरंभ किये हैं। लखनऊ के बालागंज क्षेत्र में भी भाग्य मंदिर शिक्षा केंद्र का शुभारंभ किया गया है। धीरे धीरे और भी जिलों में भाग्य मंदिर शिक्षा केंद्रों की स्थापना की जा रही है। यहां योग की निःशुल्क कक्षा भी मुहैया कराई जाती है।

ट्रेन चढ़ने के क्रम में गिरने से एक व्यक्ति का पैर कटा

प्रात :किरण संवाददाता

फतुहा। गुरुवार को कोसी एक्सप्रेस फतुहा रेलवे स्टेशन के दो नंबर प्लेटफार्म से खुल गई थी इसी दौरान एक व्यक्ति चलते ट्रेन पर चढ़ने का प्रयास किया जिसके कारण गिरने से व्यक्ति का पैर कट गया। इस संबंध में जानकारी देते हुए आरपीएफ इंस्पेक्टर विनोद कुमार विश्वकर्मा ने बताया की उस व्यक्ति का इलाज फतुहा सीएचसी में कराया जा रहा है। उस व्यक्ति का नाम चंद्रदीप कुमार उम्र लगभग 30 वर्ष पिता शिवकुमार माझी ग्राम गोपालपुर थाना शेरघाटी जिला गया है। उस व्यक्ति के पास से न कोई सामान मिला है और न ही रेल टिकट मिला है। घायल व्यक्ति के परिवार वालों का मोबाइल नं नहीं मिलने से उसके घर वालों से संपर्क करने में दिक्कत हो रही है। वैसे सूचना देने का कोशिश किया जा रहा है।

महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने विभागाध्यक्षों के साथ की बैठक

प्रात :किरण संवाददाता

हाजीपुर । पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह द्वारा मुख्यालय, हाजीपुर में विभागाध्यक्षों एवं अन्य अधिकारियों के साथ एक उच्चस्तरीय बैठक की गयी । इस बैठक में महाप्रबंधक द्वारा पूर्व मध्य रेल पर चल रहे यात्री सुविधा एवं आधारभूत संरचना के विकास से जुड़े कार्यों की समीक्षा की । परियोजनाओं की समीक्षा के क्रम में महाप्रबंधक ने निर्माण परियोजनाओं तथा रेल विकास से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने का दिशा-निर्देश दिया । उन्होंने कहा कि हमें रेलवे के प्रत्येक क्षेत्र में नई तकनीक का ज्यादा-से-ज्यादा प्रयोग करना होगा ताकि लोगों की अपेक्षा पर खरे उतरते हुए उन्हें बेहतर परिणाम दे सकें । महाप्रबंधक ने पूर्व मध्य रेल में चल रही निर्माण परियोजनाओं एवं बुनियादी ढांचे के विकास से जुड़े कार्य की नियमित एवं गहन मॉनिटरिंग का निर्देश दिया ताकि सभी निर्माण कार्य तय समय पर पूरा किया जा सके । बैठक को संबोधित करते हुये महाप्रबंधक श्री छत्रसाल सिंह ने कहा कि गाड़ियों का समय-पालन, इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास एवं विस्तार, अमृत भारत स्टेशनों के कार्य में तेजी लाने, माल लदान, राजस्व में वृद्धि, स्वच्छता एवं कर्मचारी कल्याण हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है । बैठक में मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष, अन्य उच्चाधिकारीगण उपस्थित थे ।

महागठबंधन का प्रतिरोध मार्च ढकोसला : प्रभाकर मिश्र

पटना, प्रात :किरण संवाददाता

भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने महागठबंधन की ओर से 20 जुलाई को प्रतिरोध मार्च निकाले जाने के फैसले पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि महागठबंधन का यह फैसला ह्यनौ सौ चूहे खाकर बिल्ली चली हज कोह्न जैसी है। महागठबंधन का यह फैसला बिहार की राजनीति का कॉमेडी सीन के रूप में याद किया जाएगा। अगर हत्यारे और लुटेरे कांवर यात्रा पर जाने का फैसला ले, तो इस पर कोई रोक नहीं लगा सकता। लेकिन सच्चाई तो सभी को पता होती है। महागठबंधन का प्रतिरोध मार्च लगभग ऐसा ही है। श्री मिश्र ने गुरुवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि महागठबंधन की इस यात्रा से आम जनता को 2005 से पहले वाली बिहार की यादें ताजा हो जाएंगी। 2005 के पहले पति-पत्न ी की सरकार में क्या होता था, यह सभी को पता है। इस यात्रा का एक मात्र लक्ष्य जनता को बरगलाना और मौज-मस्ती है। तेजस्वी बताएं कि इस बार वे मटन की पार्टी करने वाले हैं या फिर मछली की। यह प्रतिरोध यात्रा पूरी तरह फ्लॉप होगी। इस यात्रा में जनता का साथ नहीं होगा।

व्यापार प्रकोष्ठ सांसद रविशंकर का 21 को करेगा अभिनंदन

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। खाजेकलां के पानी टंकी स्थित रतन पैलेस में भाजपा व्यापार प्रकोष्ठ पटना महानगर की ओर से 21 जुलाई को अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया है। इसमें सांसद रविशंकर प्रसाद का अभिनंदन किया जाएगा। संयोजक पंकज गुप्ता ने बताया कि आयोजन में विधानसभा अध्ययक्ष नंदकिशोर यादव, नगर विकास मंत्री नितिन नवीन, विधायक अरुण कुमार सिन्हा व संजीव चौरसिया, प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक राजू गुप्ता, महापौर सीता साहू व उपमहापौर रेशमी चंद्रवंशी शामिल होंगी। इसकी तैयारियों को ले बैठक हुई। इसमें प्रवक्ता संजीव कुमार सिन्हा, सह संयोजक मुकेश कुमार मंटू, पंकज सिन्हा, विमल कुमार बिट्टू, राजीव रंजन सिंह आदि शामिल हुए।

जिला पदाधिकारी के निदेर्शानुसार स्टूडेन्ट क्रेडिट कार्ड योजना दानापुर प्रखंड में किया शुरूआत

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। नगर के अंतर्गत जिला पदाधिकारी के निदेर्शानुसार बिहार स्टूडेन्ट क्रेडिट कार्ड योजना, मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भता योजना तथा कुशल युवा कार्यक्रम का लाभ पात्र एवं इच्छुत युवक व युवतियों तक पहुँचाने को लेकर दानापुर प्रखंड में शुरूआत किया गया। 18 से 01 अगस्त तक विभिन्न पंचायतो में आयोजित होने वाले शिविर की शुरूआत के कासिमचक पंचायत के विशुनपुर स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से हुआ। इसको लेकर टीम का गठन किया गया था। शिविर में जिला कौशल विकास केन्द्र के सहायक जिला प्रबंधक डॉ मंजू समेत पंचायत कर्मी उपस्थित थे। प्रखंड विकास पदाधिकारी विभेष आनंद ने बताया कि ह्लआर्थिक हल, युवाओं का बलह्व के तहत संचालित योजना बिहार स्टूडेन्ट क्रेडिट कार्ड योजना, मुख्यमंत्री निश्चय स्वयं सहायता भता योजना तथा कुशल युवा कार्यक्रम योजना के लिए अधिक से अधिक योग्य अभ्यार्थियों की शिविर में सहभागिता आवश्यक है। शिविर में इंटर पास छात्र छात्राओ के विभिन्न योजनाओ का लाभ देने को लेकर पंचायत स्तर पर काउंसिलिंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सेवादार कल्याण समिति की तदर्थ समिति गठित

पटना सिटी (प्राकि)। सेवादार समाज कल्याण समिति के एक अच्छा की बैठक हुई। इसमें सेवादार कल्याण समिति की तदर्थ समिति का गठन किया गया। इसके संयोजक दिलीप सिंह पटेल और उप संयोजक ग्रंथी कृपाल सिंह को बनाया गया। समिति का कार्य सही तरह से निष्पादन हो, इसके लिए 20 सदस्यों को मनोनीत किया गया। इनमें सरदार सूरज सिंह, गुरनाम सिंह, मदन प्रसाद, रणजीत सिंह, भोला सिंह, इंदर सिंह, रामेश्वर राम, तनवीर सिंह, अनुभव कौर, हरजीत कौर, ईश्वर सिंह, धुरी सिंह, दिलीप सिंह, अमरदीप सिंह, विजय सिंह, लक्ष्मण सिंह, अमरदीप सिंह, कुलवंत सिंह, खुशवंत सिंह, रागी हरपाल सिंह लांबा, मुकुल आनंद के अलावा अन्य शामिल हैं।

आयुष्मान कार्ड को लेकर 18 जुलाई से 31 जुलाई तक पंचायतों के सभी जनवितरण प्रणाली दुकान पर शिविर लगेगा

दानापुर। नगर के अंतर्गत आयुष्मान भारत कार्ड से वंचित लोगो के लिए प्रत्येक पंचायतो के जनवितरण प्रणाली के दुकान पर आगामी 31 अगस्त तक शिविर लगाया जायेगा। जहां वैसे लाभार्थियो को जिनका सूची में नाम नही है पर राशन कार्ड है। उनका आयुष्मान मुख्यमंत्री जनआरोग्य योजना के तहत आयुष्मान कार्ड बना सकेगे। ये जानकारी प्रखंड विकास पदाधिकारी विभेष आनंद ने दी। उन्होने बताया कि जिलाधिकारी के निदेर्शानुसार 18 जुलाई से 31 जुलाई तक पंचायतो के सभी जनवितरण प्रणाली दुकान पर एक विशेष शिविर लगेगा। जिसमें लोगो को वही आयुष्मान कार्ड बनेगा। जिनका सूची में नाम है वे प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत आयुष्मान भारत कार्ड बना सकेगे। वही जिनका सूची में नाम नही है और राशन कार्ड है उनका मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत आयुष्मान कार्ड बनेगा।

नगर परिषद प्रशासन ने सड़क पर भवन निर्माण सामाग्री गिरवाने वाले के विरूद्ध कार्यवाई को लेकर विशेष टीम का गठन किया

दानापुर नगर के अंतर्गत। नगर परिषद प्रशासन ने सड़क पर भवन निर्माण सामाग्री गिड़वाने वाले के विरूद्ध कार्यवाई को लेकर विशेष टीम का गठन किया है। टीम सड़क पर भवन निर्माण सामाग्री गिट्टी, बालू, ईट गिड़ाने वालो से आर्थिक दंड वसुलेगे। कार्यपालक पदाधिकारी पंकज कुमार ने बताया कि देखा जा रह है कुछ लोग भवन निर्माण सामाग्री सड़क पर गिड़ा कर छोड़ देते है। वही कुछ लोग इसका व्यवसाय भी सड़क पर गिड़ाकर करते है। जिससे लोगो को परेशानी होती है। कभी कभी लोग इसके शिकार होकर अस्पताल भी पहुंच जाते है। प्रदुषण के साथ चौड़ी सड़क सिकूड़ सी जाती है। इसको देखते हुए ऐसे लोगो पर कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया है। इसको लेकर एक विशेष टीम बनाये गये है। जो सुबह में वेसे लोगो के विरूद्ध कार्रवाई करते हुए आर्थिक दंड लगायेगे। उन्होने कहा कि भवन निर्माण कराने वाले लोगो को रात नौ बजे से सुबह नौ बजे तक का समय निर्धारित किया गया। भवन निर्माण सामाग्री गिड़ा कर सुबह 09 बजे से पहले हटा ले अन्यथा कार्रवाई होगी।

नीतीश सरकार में आपराधिक घटनाओं होती है त्वरित कार्रवाई :रत्नेश

हमारे नेता न किसी को बचाते हैं और न किसी को फंसाते हैं : शीला

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

परिवहन मंत्री शीला मंडल ने कहा है कि बिहार में कानून का राज है, हमारे नेता न किसी को बचाते हैं और न किसी को फंसाते हैं। आपराधिक कृत्य करने वाले कानून के शिकंजे से नहीं बच सकते हैं। श्रीमती शीला मंडल गुरूवार को जदयू प्रदेश कार्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम के बाद मीडिया से मुखातिब हुई। मंत्री ने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि राजद को पहले अपने गिरेबान में झांकना चाहिए कि उनके शासनकल में कितनी भयावह स्थिति थी। महिलाएं एवं बहन-बेटियों का घर से बाहर निकलना दूभर था। अब तो ऐसी कोई बात नहीं है इस तरह का कोई वारदात होती है तो तुरंत उस पर एक्शन लिया जाता है, कार्रवाई होती है। नेता प्रतिपक्ष के बयान पर शीला मंडल ने कहा कि कौन क्या बोलता है उस पर हम कोई कटाक्ष नहीं करेंगे। यह कहने से नहीं होता है जो लोग इस तरह की बात कर रहे हैं पहले अपने आप को देखना चाहिए। दूसरे राज्यों की अपेक्षा यहां का क्राइम कितना परसेंट है तब समझ में आएगा। आज भी हमारा बिहार और जगहों से सब कुछ में बेहतर है। रुपौली में हार के प्रश्न पर मंडल ने कहा कि वहां पर हमें पहले से अधिक वोट मिला है। इतना वोट कैसे आ सकता है यह किसका वोट है यह देखना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि अतिपिछड़ा समाज आज भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पर असीम विश्वास करता है। जो लोग ऐसी बात करते हैं वह भ्रम फैला रहे है इससे कुछ होने वाला नहीं है।

वहीं, इस अवसर पर मद्य निषेध मंत्री मंत्री रत्नेश सदा ने राजद के प्रतिरोध मार्च पर बयान देते हुए कहा कि लोकतंत्र में सभी को मार्च निकालने एवं अभिव्यक्ति का अधिकार प्राप्त है लेकिन कानून-व्यवस्था के मुद्दे पर हाय तौबा मचाने वाली राजद को सबसे पहले अपने 15 वर्षों का काला इतिहास पलटना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजद के जंगलराज में दलितों को निशाना बनाया जाता है और बहन-बेटियों की इज्जत लूटी जाती थी। आज नीतीश सरकार में आपराधिक घटनाओं पर त्वरित और निष्पक्ष कार्रवाई होती है और पीड़ितों को ससमय न्याय मिलता है।अपराधी पकड़े जाते हैं और जेल के भीतर भेजे जाते हैं। विपक्ष के आरोपों पर पलटवार करते हुए मंत्री रत्नेश सदा ने कहा कि नीतीश कुमार कल जो थे वह आज भी और आगे भी रहेंगे। उन्होंने कहा कि 2025 के विधानसभा चुनाव में उनके नेतृत्व में बिहार विकास के रास्ते पर बढ़ेगी और सभी का सपड़ा साफ हो जाएगा। जगदानंद सिंह के सवाल पर भड़कते हुए मंत्री रत्नेश सदा ने कहा कि 2005 के पहले लूट, अपहरण, भ्रष्टाचार ,डकैती और गुंडागर्दी का काल था। बीजेपी के विधायक ललन पासवान के बयान पर रत्नेश सदा ने कहा कि ललन पासवान का कोई ठिकाना नहीं रहता है कभी इस घर कभी उस घर जाते रहते हैं। इससे पहले मंत्रीद्वय ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुचें आमजनों की समस्याओं को सुनकर उनके त्वरित निष्पादन हेतु आवश्यक पहल की। इस मौके पर विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी, लोकप्रकाश सिंह एवं प्रो नवीन आर्या चंद्रवंशी मौजूद रहे।

बिहार में 2025 में बनेगी एनडीए की पूर्ण बहुमत की सरकार : तावड़े

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री और बिहार के प्रभारी विनोद तावड़े ने गुरूवार को कहा कि लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को करारी हार मिली है, 13 राज्यों में कॉंग्रेस के एक भी सांसद नहीं हैं। जनता ने उन्हें नकार दिया है। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए की पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी। उन्होंने कहा कि इस लोकसभा चुनाव में बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से 174 सीटों पर एनडीए ने बढ़त बनाई जबकि राजद मात्र 34 सीटों पर आगे रही। यह अगले विधानसभा चुनाव के परिणाम के स्पष्ट संकेत हैं। पटना में भाजपा की विस्तृत कार्यसमिति की बैठक को संबोधित करते हुए श्री तावड़े ने कहा कि पिछले तीन लोकसभा चुनावों में कांग्रेस उतनी सीट नहीं जीत सकी है जितनी भाजपा ने 2024 चुनाव में सीटें जीती हैं। उन्होंने कहा कि 2014 में कांग्रेस को 44 सीट मिली जबकि 2019 में उसके 52 प्रत्याशी जीत सके और 2024 के चुनाव में 99 सीट मिली है। तीनों चुनावों को इकट्ठा कर लें तब भी 2024 में भाजपा को मिली 240 सीट तक कॉंग्रेस नहीं पहुंच पाती है। उन्होंने लोकसभा चुनाव के इस बेहतर परिणाम के लिए बूथ स्तर के कार्यकताओं का अभिनन्दन करते हुए कहा कि सही अर्थों में यह परिणाम उनकी मेहनत को दशार्ता है। उन्होंने कहा कि इस लोकसभा चुनाव मे बिहार में एनडीए को 52 प्रतिशत वोट प्राप्त हुए है। उन्होंने कहा कि इस लोकसभा चुनाव में बिहार की 243 सीटों में से 174 विधानसभा सीटों में एनडीए ने बढ़त बनाई जबकि राजद मात्र 34 सीटों पर आगे रही। श्री तावड़े ने आगे कहा कि आज भारत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत पूरी दुनिया मे 15 प्रतिशत आर्थिक योगदान दे रहा है जबकि कई देशों से विकास की दर में भारत काफी आगे हैं। उन्होंने कहा कि भारत विकास दर आज 6.8 प्रतिशत है जबकि कई यूरोपीय देश हमसे बहुत पीछे हैं।

प्रतिरोध मार्च निकालने का फैसला रोजगार विरोधी : जदयू

पटना। जद यू प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रदेश प्रवक्ता डॉ निहोरा प्रसाद यादव और प्रदेश प्रवक्ता अंजुम आरा ने मीडिया में बयान जारी कर आरजेडी नेता तेजस्वी यादव पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि जिन्हें कभी पढ़ाई में मन नहीं लगा वो शख्स कभी भी शिक्षा और शिक्षितों का सम्मान नहीं कर सकता। इस दौरान उन्होंने आरजेडी के 20 जुलाई को प्रतिरोध मार्च निकाले जाने के फैसले पर कड़ा एतराज जताया और सवाल पूछा है कि क्या ये सही नहीं है कि बीपीएससी द्वारा 19 से 22 जुलाई के बीच तीसरे चरण की शिक्षक नियुक्ति परीक्षा का संचालन किया जाना है ऐसे में आरजेडी का प्रतिरोध मार्च निकालने का फैसला इस परीक्षा को बाधित करना है? क्या तेजस्वी यादव का 20 जुलाई को प्रतिरोध मार्च निकालने का फैसला रोजगार विरोधी फैसला नहीं है? क्या ये सही नहीं है कि मुद्दाविहीन आरजेडी की तरफ से प्रतिरोध मार्च निकालने का फैसला छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है? तेजस्वी यादव पर तंज कसते हुए उन्होंने कहा कि जिसने कभी शिक्षा का सम्मान नहीं किया वो भला शिक्षा के महत्व को क्या जानेगा और युवाओं का सम्मान कैसे करेगा?

राजद राज में सत्ता की शह पर होते थे अपराध : राजीव

- अपराधियों के लिए स्वर्णकाल था लालू-राबड़ी राज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि नीतीश सरकार को अपराध पर ज्ञान देने से पहले तेजस्वी यादव को राजद के जंगलराज के बारे में जानकारी ले लेनी चाहिए। मुकेश सहनी के पिता के हत्यारों का महज 36 घंटे में गिरफ्तार होना यह दिखाता है कि यह सरकार अपराधियों के खिलाफ कितनी तेजी से कारवाई करती हैं। वहीं राजद काल में सत्ता की शह पर अपराध होते थे। उस दौर में बिहार में हत्या और अपहरण एक उद्योग और कारोबार बन चुका था। आंकड़े देते हुए उन्होंने कहा कि तेजस्वी जी यदि थोड़ा सा भी पढ़ने की जहमत उठायें तो उन्हें पता चल जाएगा कि उनके माता-पिता का राज अपराधियों के लिए स्वर्णकाल था। उनके राज के अंतिम वर्ष 2005 की ही बात करें तो उस साल 3471 हत्याएँ हुईं। साथ ही 251 अपहरण की वारदातें हुईं और बलात्कार की 1147 घटनाएँ हुईं। इसके एक साल और पीछे जाएँ तो 2004 में बिहार में हत्या के 3948, दंगे के 9199, रंगदारी के लिए अपहरण 411 घटनाएँ और बलात्कार की 1390 घटनाएँ दर्ज की गई थीं। इसी तरह 2003 में हत्या की 3652 और अपहरण की 1956 वारदातें दर्ज की गईं, वहीं 8189 दंगे हुए। इसके अलावे कई अपराधों के मामले तो कोर्ट तो दूर, पुलिस स्टेशन भी नहीं पहुँच पाते थे, क्योंकि लोगों को सीधा गायब ही करा दिया जाता था। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि तेजस्वी को पता होना चाहिए कि उस समय आम जनता तो दूर जनप्रतिनिधि तक सुरक्षित नहीं थे। उन्होंने कहा कि 2005-10 के पहले ही कार्यकाल में तकरीबन 50 हजार अपराधियों को सजा मिली। यह वो प्रक्रिया थी, जो राजद के जंगलराज वाले काल में एकदम से रुकी हुई थी। तब सत्ता के साथ के कारण अपराधियों की मौज थी और आज सत्ता की कड़ाई के कारण उनमें खौफ है।

अपराध के प्रति जीरो टॉलरेंस दिखना चाहिये : आनंद

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार कांग्रेस के प्रवक्ता आनन्द माधव ने गुरूवा को बयान जारी करते हुए कहा है कि बिहार में सब कुछ थम गया है, सिवाय अपराध और भ्रष्टाचार के। उन्होंने कहा कि मात्र दो तीन दिनों का अखबारों के हेडलाइन देख लीजिये समझ में आ जायेगा कि यहाँ क्या चल रहा है। कानून का राज स्थापित करनें वाले आज अपराधियों के समक्ष नतमस्तक हैं। सूबे में लगातार घटनाएं घट रही हैं। कोई भी आज बिहार में अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं कर पा रहा। जंगलराज-जंगलराज का चालिसा पढनें वाले लोग आज महाजंगलराज स्थापित कर चुके हैं। हर तरफ, हर जगह अराजकता का माहौल है। मुख्यमंत्री, डीजीपी साहब को कडी कार्यवाही करनें का निर्देश दे रहे पर साहब भारत सरकार के गृह मंत्रालय के गलियारे में चक्कर लगाते नजर आ रहे। जनता समझ रही है, कि प्रशासन कितना गंभीर है अपराध नियंत्रण के प्रति। ये खोखले अश्वासन हैं, खोखली दलील है क्योंकि बिहार में अपराध रूकनें का नाम नहीं ले रहा।एक ओर जहाँ अपराधियों का तांडव जारी है, वहीं दूसरी ओर साहब लोगों के पांव पकडनें में लगे हैं और मंत्रीगण भ्रष्टाचार में लिप्त। श्री माधव ने मुख्यमंत्री से अपील करते हुए कहा है कि अपराध एवं भ्रष्टाचार पर नियंत्रण राज्य कि पहली प्राथमिकता होनी चाहिये। जो सिर्फ बयानबाजी से नहीं होगा। अपराध के प्रति जीरो टॉलरेंस दिखना चाहिये। कृपया कथनी और करनी में फर्क मिटायें एवं बिहार को अपराध मुक्त बनायें।

सूबे में लूट-भ्रष्टाचार व अपराध चरम स्तर पर : दीपंकर

नीट, अपराध सहित अन्य मुद्दों को लेकर सरकार को घेरने की तैयारी

- विधानसभा सत्र के दौरान उठेंगे जनता के मुद्दे, सरकार को देना होगा जवाब
- महागरीब परिवारों के लिए 2 लाख की सहायता राशि की घोषणा को जुमला नहीं बनने देंगे

पटना। चुनाव बाद राज्य में दलित-गरीबों-महिलाओं-अल्पसंख्यकों पर दमन, चौतरफा हिंसा और अपराध आज चरम स्तर पर पहुंच गया है, सरकार के मुखिया को उसका जवाब देना होगा। उक्त बातें माले महासचिव का दीपंकर भट्टाचार्य ने गुरूवार को पटना में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कही। संवाददाता सम्मेलन में उनके साथ माले पोलित ब्यूरो सदस्य धीरेन्द्र झा, ऐपवा महासचिव मीना तिवारी, विधान पार्षद शशि यादव, विधायक वीरेन्द्र प्रसाद गुप्ता व गोपाल रविदास भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी के पिता की नृशंस हत्या स्तब्ध करने वाली है।

प्रखंडों पर 21-23 अगस्त को आंदोलन संगठित किया जाएगा :

माले महासचिव ने आगे कहा कि 95 लाख गरीब परिवारों के लिए 2 लाख रु सहायता राशि की गई घोषणा पर माले एक धारावाहिक आंदोलन चलाएगा। हक दो- वादा निभाओ अभियान के तहत हम इसे जुमला नहीं बनने देंगे। अगस्त के महीने में ग्राम बैठकें आयोजित करके गरीबों को संगठित किया जाएगा। गरीबी का आय प्रमाण पत्र मिले, इसके लिए पूरे बिहार के प्रखंडों पर 21-23 अगस्त को आंदोलन संगठित किया जाएगा।

किसान, महिला, छात्र-युवा के सवालों पर जनसंवाद :

दीपंकर ने कहा कि इस बार का चुनाव का जनादेश बुलडोजर राज के खिलाफ है, लेकिन बिहार में वही सबकुछ चल रहा है। जिस जमीन पर लोग बरसों से बसे हैं, उन्हें उजाड़ा जा रहा है, जिस जमीन का पर्चा मिला है, वहां से उजाड़ा जा रहा है। इस साजिश के खिलाफ हम व्यापक आंदोलन का निर्माण करेंगे। तमाम घोषणाओं के बावजूद बड़ी आबादी को पक्का मकान नहीं मिला है। गरीबों के साथ-साथ विकास, किसान, महिला, छात्र-युवा के सवालों पर जनसंवाद होंगे। हम संविधान व लोकतंत्र को लेकर विमर्श जारी रखेंगे। हमारी कोशिश होगी कि जनता की जागरूकता व निगरानी बनी रहे।

नीट प्रश्नलीक मामले को विस में उठाया जाएगा :

माले महासचिव ने कहा कि विधानमंडल के मानसून सत्र के दौरान नीट घोटाला, मुजफ्फरपुर में बेरोजगारों से ठगी व लड़कियों का यौन शोषण कांड, रसोइया, राज्य में पुल टूटने की धारावाहिक घटनाओं और चुनाव बाद की हिंसा आदि सवालों को प्रमुखता से उठाया जाएगा। 23 जुलाई को आइसा, 24 जुलाई बिहार राज्य विद्यालय रसोइया संघ और 25 जुलाई को खेग्रामस की ओर से विधान सभा पर प्रदर्शन की तैयारी है। किसान महासभा की ओर से 19 जुलाई को बिहार के सभी प्रखंड मुख्यालयों पर खेती के लिए 24 घंटे बिजली और नहरों में पानी की मांग पर कार्यक्रम किया जाएगा।

बिहार के नव निर्माण हेतु सभी दलों से निकल जन सुराजी बन रहे हैं लोग : संजय

- राजद की बौखलाहट सामने आयी,शेष दलों के अन्दर है भूचाल

पटना। जन सुराज के प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी संजय कुमार ठाकुर ने कहा है कि बिहार में राजद, कांग्रेस, भाजपा और जदयू के समर्थक तथा उनके नेता-कार्यकर्ता रोजाना बड़ी संख्या में जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर जी के नेतृत्व के साथ जुड़ रहे हैं और नये बिहार के निर्माण में अपना कंधा लगा रहें हैं। ये लोग बिहार के सत्ता बदलने के जज्बे से लबरेज है और अपने बच्चों के भविष्य के लिए संघर्ष की इस राह पर चल पड़े हैं। यही कारण है कि सभी पार्टियों की जमीन तेजी से खिसक रही है और विधानसभा चुनाव आते-आते इन सभी दलों के हाथ से मतदाता अलग हो जाएंगे। ये सभी पार्टियां अपनी करनी से टूट रही है क्योंकि सभी ने बिहार को अशिक्षित,बेरोजगार और मजदूर बनाने की फैक्ट्री बना दिया है। ये पार्टियां अपनी करनी से टूट रही है और इसका ठीकरा जन सुराज पर थोपा जा रहा है। राजद के लालटेन से तेल निकलने का सिलसिला जारी है और जबतक लालटेन बुझ नहीं जाता तब तक यह सिलसिला बदस्तूर जारी रहेगा। नेतृत्व की करनी से राजद टूट रहा है और जिम्मेदार जन सुराज को बनाया जा रहा है। भाजपा, कांग्रेस और जदयू से भी ठगी और उपेक्षा के शिकार हुए नेता - कार्यकर्ता व उनके समर्थक जिनमें बिहार को बदलने का जज्बा है रोज बड़ी संख्या में टूटकर जन सुराज के साथ जुड़ रहे हैं। श्री ठाकुर ने कहा कि सेक्यूलरिज्म के मजबूत अलंबरदार प्रशांत किशोर से बिहार की जनता को काफी उम्मीदें हैं और लोग उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर तेजी से जन सुराज के साथ जुड़ रहे हैं। श्री ठाकुर ने कहा है कि भाजपा, कांग्रेस, जदयू से भी रोज-रोज नेता - कार्यकर्ता व समर्थक जन सुराज के संस्थापक सदस्य बन रहे हैं। सभी दल टूट रहे हैं पर राजद की बेचैनी सार्वजनिक हो गई है लेकिन अन्य दलों में अन्दर ही अन्दर भूचाल मचा हुआ है। उन्होंने कहा कि बिहार को रसातल में पहुंचाने वाले तथा साम्प्रदायिकता फैला कर जनता का वोट ठगने वाले भाजपा और जदयू गठबंधन को भी जनता आगामी विधानसभा चुनाव में सबक सिखायेगी। जन सुराज साम्प्रदायिकता और जात- पांत के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखेगा। श्री ठाकुर ने कहा है कि बिहार को बदलने की इस लड़ाई में सभी बिहारियों का जन सुराज परिवार में स्वागत है।

आपराधिक घटनाओं से त्राहिमाम है जनता : अरुण

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश प्रवक्ता अरुण कुमार यादव ने बेखौफ अपराधियों द्वारा सासाराम में डबल मर्डर और पटना के नौबतपुर में हत्या को अंजाम दिए जाने की आपराधिक घटनाओं पर राज्य सरकार पर आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि पटना सहित राज्यभर में हत्या, लूट, बलात्कार, अपहरण और रंगदारी जैसी आपराधिक घटनाओं से लोग त्राहिमाम है। राज्य के लोग भय के साये में जीने पर मजबूर है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि पिछले 24 घन्टे के अंदर पटना सहित राज्यभर में दर्जनों हत्याएं हो चुकी है। बढ़ते आपराधिक घटनाओं ने कानून व्यवस्था की पोल खोल दी है। अपराधियों में शासन और प्रशासन का भय समाप्त हो चुका है। इसलिए अपराधी बेखौफ होकर खुलेआम आपराधिक घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं।

इंडिया गठबंधन के जन आक्रोश मार्च में मजबूती से हिस्सा लेंगे कांग्रेसजनः अखिलेश

पटना। राज्य में बढ़ते अपराध और अपराधियों के खिलाफ इंडिया गठबंधन के सभी सहयोगी दलों के द्वारा प्रदेश के सभी जिलों में 20 जुलाई को जन आक्रोश मार्च में सभी कांग्रेसजन बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे। इस मार्च को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने गुरूवार को पत्र जारी कर सभी कांग्रेसजन को निर्देशित किया है। इस आशय की जानकारी देते हुए बिहार कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने पत्र जारी कर निर्देश दिया है जिसमें सभी जिलाध्यक्षों, प्रकोष्ठों, वरिष्ठ नेताओं, विधायकों, पूर्व विधायकों, लोकसभा और विधानसभा के पूर्व प्रत्याशियों को निर्देश दिया गया है कि आगामी 20 जुलाई को सभी अपने जिला मुख्यालयों में इंडिया गठबंधन के साथ जन आक्रोश मार्च निकालेंगे। इस आक्रोश मार्च में राज्य में खराब हुए कानून व्यवस्था को लेकर जिलाधिकारी से मिलकर ज्ञापन भी सौंपा जाएगा। इस जन आक्रोश मार्च में कांग्रेस के सभी कार्यकर्ता बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे और प्रदेश की निरंकुश सरकार को न्याय और कानून का राज स्थापित करने को अल्टीमेटम देने के तौर पर हिस्सा लेंगे।

मजबूत टिकाऊ पथ संरचनाओं का विकास हमारी प्राथमिकता : विजय

पथ निर्माण योजनाओं के शुरूआत से लेकर अनुरक्षण तक तयशुदा मानकों का हो अनुपालन

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पथनिर्माण विभाग की ओर से बिहार राज्य पथ विकास निगम लिमिटेड सभागार में विभाग से जुड़े अभियंताओं के लिए इंजीनियरिंग प्रोक्योरमेंट एंड कंस्ट्रक्शन मोड पर एकदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम का उद्घाटन और समापन सूबे के उपमुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री विजय कुमार सिन्हा द्वारा किया गया। इस दौरान अभियंताओं को संबोधित करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि इस प्रशिक्षण के आयोजन के पीछे विभाग की मंशा यह थी कि किसी भी योजना के क्रियान्वयन के बिल्कुल शुरूआत से लेकर उसके पूरे होने तक और निर्माण के बाद निर्मित अवसंरचना के अनुरक्षण को सुनिश्चित किया जा सके। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि पथ निर्माण से जुड़े जाने-माने विशेषज्ञों के अनुभव और ज्ञान का लाभ लेकर अभियंता तयशुदा मानक प्रकियाओं का सही अनुपालन कर पाने में समर्थ होंगे। श्री सिन्हा ने कहा कि सरकारें आएंगी और जाएंगी, विभाग का नेतृत्व करने वाले मंत्री, अधिकारी और इंजीनियर भी बदलते रहेंगे लेकिन निर्मित ढांचे लंबे समय तक रहते हैं। वही हमारे पीछे हमारी सोच, निष्ठा और प्रतिबद्धता की निशानी होते हैं। इसलिये जो भी अवसंरचना विकसित हो वह ऐसी हो जिसके लिए लोग हमें सकारात्मक रूप में याद करें। श्री सिन्हा ने कहा कि विभागीय मंत्री होने के नाते सभी पदाधिकारियों और अभियंताओं को आश्वस्त करना चाहता हूं कि निष्ठा, ईमानदारी और नियम के अनुसार कार्य करने वाले लोग सुने और सराहे जाएंगे। वहीं अनियमितता करने वाले लोगों को किसी भी हाल में बक्शा नहीं जाएगा। साथ ही उचित जरूरतों और जरूरी सुझावों के लिए मैं सदैव उपस्थित मिलूंगा। हमारी सरकार की नीति और नियत साफ है कि राज्य में मजबूत, टिकाऊ और लागत प्रभावी आधुनिक अवसंरचना का तेजी से विकास हो ताकि आमजन के जीवन में गुणात्मक सुधार आ सके। उक्त प्रशिक्षण कार्यशाला में उपमुख्यमंत्री के साथ, विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, सचिव संदीप पुडालकुट्टी, विशेष सचिव शीर्षत कपिल भी मौजूद थे।

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय

गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना संख्या–07 वर्ष 2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, पटना।
2. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय :– दिनांक 27.07.2024 को 12:00 बजे पूर्वाहन तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– दिनांक 29.07.2024 को 03:00 बजे अपराहन तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– दिनांक 29.07.2024 को 03:30 बजे अपराहन से।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– (क) अधीक्षण अभियंता, दक्षिण बिहार अंचल, पटना का कार्यालय। (ख) कार्यपालक अभियंता, गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय। (ग) सहायक अभियंता, भवन अवर प्रमंडल सं0–01,02,03 गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान :– क्रमांक–5 के अनुसार।
7. प्रत्येक ग्रुप हेतु अलग–अलग आवेदन देना अनिवार्य होगा। दो या दो से अधिक ग्रुप के लिए एक साथ आवेदन को आमान्य समझा जायेगा।
8. कार्य का विवरणी।

S. No.	Work Name	Estimate Rate (Rs.)	Earnes Money (Rs.)	B.O.Q. Rate (Rs.)	Work completeion date
1	2	3	4	5	6
1	Construction of Hoarding of size (20'0"x10'0") for Public Relation Department, Patna, Bihar. Exhibit sheet & printing of Flex/Banner (M/S Steel Type) of Oppsite to Sachivaly Halt side wall 3, Patna for the year 2024-25	2,57,000.00	5200.00	750.00	1 Month

शर्तः

निविदा के साथ स्थानीय अभिकर्ता श्रेणी iv में निबंधन प्रमाण–पत्र, पैन कार्ड एवं जी0एस0टी0 प्रमाण पत्र की प्रति सभी अद्यतन कागजात की सुस्पष्ट स्वहस्ताक्षरित या राजपत्रित पदाधिकारी से अभिप्रमाणित प्रति संलग्न करना अनिवार्य होगा। वैसे संवेदक जिनके यहाँ कार्य पूर्व से लंबित है, की निविदा मान्य नहीं होगी। विशेष सूचना के लिए वेबसाइट **state.bihar.gov.in/prdbihar** देखें या अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय से कार्यावधि में संपर्क करें।

कार्यपालक अभियंता
गर्दनीबाग भवन प्रमंडल, भ0नि0वि0, पटना

PR- 004133 (BCD) 2024-25

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय

पटना भवन प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग

बुद्धमार्ग, पटना–800001

अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–02/प.भ.प्र./2024–25

(स्वतंत्र दिवस समारोह 2024)

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, पटना भवन प्रमण्डल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र की बिक्री की अंतिम तिथि एवं समय :– दिनांक 05.08.2024 के 12:30 बजे अपराहन् तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– दिनांक 07.08.2024 के 3:00 बजे अपराहन् तक।
4. निविदा खोलने का तिथि एवं समय :– दिनांक 07.08.2024 को 3:30 बजे अपराहन् से।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– (1) अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, दक्षिण बिहार अंचल, पटना। (2) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, पटना भवन प्रमंडल, पटना। (3) सहायक अभियंता का कार्यालय, बांकीपुर/राजेन्द्रनगर /चिकित्साभवनअवर प्रमंडल, पटना।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान :– कमांक 5 के अनुसार।
7. कार्य का विवरणी :–

क्र0	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (लाख में)	अग्रधन की राशि (रू0 में)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रू0 में)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Repair and painting work of Budh Murti golamber on the eve of Independence Day (15.08.202 4) Patna for the year 2024-25	0.40	800.00	250.00	Up to 13.08.2024
2	E/R to Pedestal of mahatma gandhi at Gandhi Maidan and painting of post of 40 feet height Mahatma Gandhi statue campus, Patna on the eve of Independence Day (15.08.202 4) Patna for the year 2024-25	0.40	800.00	250.00	Up to 13.08.2024
3	E/R to Late Jai Prakash Narayan and Triangular at J.P. Golambar, Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.40	800.00	250.00	Up to 13.08.2024
4	E/R to Stage and Tree in the Campus of Gandhi Maidan, Patna on the eve of Independence Day (15.08.202 4) Patna for the year 2024-25	0.25	500.00	250.00	Up to 13.08.2024
5	E/R to Pedestal of Pandit Ramanand Tiwari, Golambar, at Ashok Raj Path, Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
6	S/F/F Flag Post in the Residence at Hon. Minister, State Minister, M.L.A. and M.L.C., Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.30	600.00	250.00	Up to 13.08.2024
7	E/R To Compound Wall around Flag Post in Campus of Patna Commissionery, Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.40	800.00	250.00	Up to 13.08.2024
8	E/R to Sir Ram Gulam Round about, Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
9	E/R to Pedestal of Late Sri Krishna Singh in the campus of S.K. Memorial Hall on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
10	E/R to flag post, Pedestal & compound wall at Gandhi Sanghralaya Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
11	E/R to Civil Court campus & Patna Collectoriate campus on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.80	1600.00	500.00	Up to 13.08.2024
12	E/R to Netaji Park at South East Gandhi maidan, Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.40	800.00	250.00	Up to 13.08.2024
13	E/R to Pedestal of B.P. Koirala in the Campus of Golghar at Ashok Raj Path, Patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
14	E/R to flag post in the residence DM patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
15	Painting work of Samadhi Asthal of Late Dr. Rajendra Prasad on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.30	600.00	250.00	Up to 13.08.2024
16	Repairing & painting work of Premchandra Golamber & Dinkar Golamber on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.30	600.00	250.00	Up to 13.08.2024
17	Repairing & painting work of Ram Manohar Lohiya park on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.30	600.00	250.00	Up to 13.08.2024
18	E/R to flag post of D.J residence at south Gandhi maidan patna on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.45	900.00	250.00	Up to 13.08.2024
19	E/R to flag post of at Hindi bhawan on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.25	500.00	250.00	Up to 13.08.2024
20	S/R to painting work of education section on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.28	600.00	250.00	Up to 13.08.2024
21	E/R to painting work on the eve of Independence Day (15.08.2024) in the campus of registry office, Patna for the year 2024-25	0.25	500.00	250.00	Up to 13.08.2024
22	E/R to flag post painting on the eve of Independence Day(15.08.2024) in Sale Tax Office at Anta Ghat , Patna for the year 2024-25	0.40	800.00	250.00	Up to 13.08.2024
23	E/R to flag post and painting of State Animal Hospital in the campus of Bankipur on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
24	E/R to boundary wall of Bihar State Legal Service Authority Building on the eve of Independence Day (15.08.2024) Patna for the year 2024-25	0.30	600.00	250.00	Up to 13.08.2024
25	E/R to painting work on the eve of Independence Day (15.0 8.2024) in the campus of DRCC office, Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024
26	E/R to painting work on the eve of Independence Day (15.0 8.2024) in the campus of Civil S.D.O residence, Patna for the year 2024-25	0.20	400.00	250.00	Up to 13.08.2024

विस्तृत जानकारी **state.bihar.gov.in/prdbihar** से प्राप्त की जा सकती है।

कार्यपालक अभियंता
पटना भवन प्रमंडल, पटना

PR- 004079 (BCD) 2024-25

नशे से बचने का है एक ही उपचार, दृढ़ संकल्प और परिवार से प्यार

संक्षिप्त खबरें

एईएस का एक मरीज मिला

मुजफ्फरपुर।आज जिले में एईएस का एक मरीज पाया गया। यह मरीज सकरा से प्रतिवेदित हुआ है। अबतक सकेएमसीएच मुजफ्फरपुर में कुल 47 मरीजों का इलाज हुआ, जिसमे मुजफ्फरपुर के कुल 27 मरीज हैं, शेष अन्य जिलों से है। सभी मरीज स्वस्थ्य हो कर अपने -अपने घर जा चुके हैं। यह जानकारी डाक्टर सतीश कुमार के हवाले से एक प्रेस विज्ञप्ति में दी गई है।

जयनगर से चलेगी टाटानगर के लिए साप्ताहिक ट्रेन

मधुबनी जयनगर टाटानगर साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन परिचालन का निर्णय लिया गया यह गाड़ी टाटानगर से प्रत्येक शुक्रवार को 18.50 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 11.25 बजे जयनगर पहुंचेगी। जयनगर से यह गाड़ी प्रत्येक शनिवार को 19.30 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 11.30 बजे टाटानगर पहुंचेगी। देखा जाय तो इस गाड़ी का ठहराव चांडिल मुरी कोट शिला राज बेरा धनबाद जसीडीह किउल बरौनी समस्तीपुर दरभंगा सकरी मधुबनी स्टेशनों पर होगा। इस गाड़ी के परिचालन से जहा मिथिलांचल और टाटानगर के बीच सीधी ट्रेन सेवा मिल जाएगी वहीं इस क्षेत्र के यात्रियों की बहुप्रतीक्षित मांग भी पूरी हो जाएगी। तथा यह इस क्षेत्र के सामाजिक एवं वाणिज्यिक दृष्टी से भी लाभकारी सिद्ध होगा। इस ट्रेन में दु एसएलआर चार सामान्य कोच सात शयनयान एसी तीन तथा एसी वन दू कोच सहित कुल 17 कोचों का समायोजन किया जाएगा ।

गुरू-शिष्य परम्परा पर संवाद कार्यक्रम की तैयारियां जोरों पर

मधेपुरा ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा में आगामी 21 जुलाई (रविवार) को आयोजित होने वाले गुरू-शिष्य परम्परा विषयक संवाद कार्यक्रम की तैयारियां जारी हैं। इसके निमित्त तैयारियों के निमित्त बुधवार एवं गुरूवार को भी प्रधानाचार्य प्रकोष्ठ को खुला रखा गया। प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव बताया कि संवाद की तैयारियां जोरों पर हैं। इसके लिए सभी प्रमुख सदस्यों के बीच कार्यों का बंटवारा कर दिया गया है और सबों को हर हाल में शनिवार के पूर्वाह्न 11:30 बजे तक प्रगति-प्रतिवेदन समर्पित करने का निर्देश दिया गया है सभी महाविद्यालयों का रखा गया है ध्यान कार्यक्रम के संयोजक दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर ने बताया कि यह कार्यक्रम राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर की ओर से राज्य की उच्च शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। यह प्रसन्नता की बात है कि इस विश्वविद्यालय ने इस कार्यक्रम के लिए ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय को जिला स्तरीय नोडल महाविद्यालय बनाया है। इसलिए कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते हुए सभी महाविद्यालयों की सुविधाओं का ध्यान रखा गया है। उन्होंने बताया कि प्रधानाचार्य द्वारा उद्घाटनकर्ता-सह-मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बी. एस. झा, विशिष्ट अतिथि कुलसचिव डॉ. विपिन कुमार राय एवं मुख्य वक्ता पूर्व प्रतिकुलपति प्रो. के. के. मंडल और सभी महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों को सम्मानित किया जाएगा। अर्थपाल डॉ. मिथिलेश कुमार अरिमर्दन ने बताया कि रविवार को आयोजित होने वाले कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी पाठ्यक्रमों के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। इसके साथ ही शुक्रवार से किसी भी शिक्षक या कर्मी को सामान्यतः किसी भी प्रकार का अवकाश स्वीकृत नहीं किया जाएगा।

विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु कार्य करता है परिषद् : प्रधानाचार्य

मधेपुरा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् हमेशा विद्यार्थियों के समग्र विकास हेतु कार्य करता है। इस निमित्त परिषद् द्वारा द्वारा समय-समय पर पौधारोपण, रक्तदान, स्वच्छता आदि कार्यक्रम और भाषण, निबंध, प्रश्नोत्तरी आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है। इस कड़ी में कोसी के मालवीय माने जाने वाले कीर्ति नारायण मंडल के नाम पर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन एक अत्यंत ही सराहनीय कार्य है। यह बात ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा के प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव ने कही। वे मंगलवार को महाविद्यालय में श्री कीर्ति नारायण मंडल सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का फार्म जारी कर रहे थे। यह प्रतियोगिता इसी महाविद्यालय में 22 जुलाई (सोमवार) को पूर्वाह्न 11:30 बजे से आयोजित की जाएगी। प्रधानाचार्य ने कहा कि इस प्रतियोगिता से विद्यार्थियों के बीच राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के सामान्य ज्ञान से संबंधित जानकारी एवं जागरूकता बढ़ेगी। इसके अलावा वे स्थानीय इतिहास, संस्कृति एवं शिक्षा-व्यवस्था को भी करीब से जान सकेंगे।

नाव हादसे में एक युवक लापता, सात लोगों को ग्रामीणों ने डूबने से बचाया

घटना स्थल पर विधायक,एसडीओ,बीडीओ,सीओ व थाना अध्यक्ष पहुंचे,युवक की तलाश जारी

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)। तिलकेश्वर पंचायत के गोलमा गांव से होकर गुजरने वाले कोसी नदी के उपधारा में गुरुवार की दोपहर नाव हादसे में एक युवक लापता है। इस घटना में नाव पर सवार अन्य सात लोगों को ग्रामीणों ने बचा लिया। लापता युवक गोलमा गांव के बिन्देश्वरी राय के पुत्र राजा कुमार राय (23 वर्ष) है। घटना स्थल पर विधायक अमन भूषण हजारी,एसडीओ उमेश कुमार भारती, बीडीओ अशोक कुमार जिज्ञासु, सीओ गोपाल पासवान , तिलकेश्वर थाना अध्यक्ष शौलेश कुमार पहुंच कर स्थानीय गोताखोरों के सहयोग से लापता युवक के तलाश कराने में जुटे हैं। सीओ श्री पासवान ने घटना को लेकर खगड़िया जिला से एनडीआरएफ की टीम को बुलाया गया है।

इधर घटना को लेकर सीओ गोपाल पासवान के सीएचसी को सूचना दिया कि घटना स्थल पर पहुँचे और नाव हादसे में अगर किसी को कोई मेडिकल की जरूरत पर तो तुरंत उपचार हो इस पर सीएचसी के डॉ० ज्ञानेश पाठक हेल्थ मैनेजर लोकेश कुमार, तथा एलटी संगीत कुमार सहित मेडिकल टीम घटना स्थल पर पहुँचे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार गोलमा गांव के बीचों बीच वर्षों से कोसी नदी का उपधारा बहने से गांव दो भागों में बांटा हुआ है। गोलमा डीह गांव के लोगों को मुख्य सड़क पर आने के लिए इस उपधारा में नाव से पार करना पड़ता है। करीब 11.30 बजे एक नाव पर दो बाइक सहित 8 ग्रामीण उपधारा पार कर रहे थे। प्रत्यक्षदर्शियों नाव पर सवार रामकृपाल राय के अनुसार नाव में पहले से ही पानी था। अजर बुलेट तथा बाइक नाव पर रहने से बीच नदी में जैसे नाव पहुंची तो पानी के तेज धारा में नाविक का संतुलन विगड़ा और नाव किनारे आने से पहले ही डुब गई। जिससे वहां अफरातफरी मच गया।चिख पुकार सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे और लोगों को बचाने में जुट गए। सात लोगों को ग्रामीणों के सहयोग तथा सवार लोग खुद को नदी से सुरक्षित बाहर निकाल कर बचा लिया। वहीं दोनों बाइक को भी ग्रामीण नदी से बाहर निकलने में सफल रहे। जबकि राजा कुमार का अब तक कोई अता-पता नहीं है। स्थानीय गोताखोर लगाता युवक के तलाश में जुटे हैं। नाव हादसे की सूचना मिलते ही एसडीओ उमेश कुमार भारती, वविधायक अमन भूषण हजारी ,बीडीओ अशोक कुमार जिज्ञासु, सीओ गोपाल पासवान तिलकेश्वर थाना अध्यक्ष शैलेश कुमार,प्रमुख अंजनी भारती घटना स्थल पर पहुंच कर कैम्प कर रहे हैं। वही खगड़िया जिले से पहुंचे एसडीआरएफ की टीम लापता युवक के तलाश में जुट गए हैं। इधर घटना की जानकारी मिलते ही गांव में मातमी सन्नाटा पसर गया। लापता युवक के स्वजनों में कोहराम मच गया है। मां कमली देवी का रो रो कर बुरा हाल हो गया है। मां कमला देवी छाती पीट-पीट कर बार बार एक ही रट लगाते हुए कहती है कहां गेलहो हो हमर राजा बेटा कह कर बेहोश हो जाती है। पड़ोसी महिलाएं उन्हें होश में लाकर सम्हालने में लगी है। स्वजनों के करुणा भरी रूदन से वहां के वातावरण गमगीन बना हुआ है। लापता युवक दो भाई और चार बहन में सबसे छोटा है। लापता युवक की पिता बिदेश्वरी राय किसान है उन्हें जैसे ही पता चला कि मेरा बेटा राजा नाव हादसे में डूब गया है इसकी जानकारी मिलते ही हदास हो गया और एकाएक टकटकी लगाने लगा कुछ देर बाद चिल्लाकर बोलने लगा कि मेरा राजा कहा है कहते कहते चुप हो जाता है वहां उपस्थित ग्रामीम ढाढस बांध रहे थे और घटना स्थल पर ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ी।

स्मैक के साथ महिला तस्कर गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए 800 पुड़िया स्मैक के साथ एक महिला तस्कर को गिरफ्तार किया है। मामला जिले के सिकंदरपुर ओपी थाना क्षेत्र का है जहा थाना अध्यक्ष को गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि एक महिला तस्कर टावर चौक से अखाड़ा घाट होते हुए अहियापुर को मादक पदार्थ लेकर अहियापुर की तरफ जा रहा है।जा रही है। वहीं सूचना मिलते ही थाने के सामने ही महिला पदाधिकारी के नेतृत्व में वाहन जांच शुरू किया गया। इस दौरान महिला पदाधिकारी को एक टोटो गाड़ी आती हुई दिखाई दी जिस पर एक महिला बैठी हुई थी। सूचना के अनुसार उस महिला को जांच के लिए रोका गया फिर नियम के अनुसार महिला को हिरासत में लेने के बाद मजिस्ट्रेट को थाने पर बुलाया गया और नियमानुसार जब महिला की तलाशी ली गई तो महिला के पास से बरामद एक झोले से तकरीबन 800 पुरिया स्मैक की बरामद हुई। इसके बाद महिला तस्कर को गिरफ्तार कर लिया गया वहीं पूरे मामले की जानकारी देते हुए सिकंदरपुर ओपी थाना अध्यक्ष रमन राज ने बताया कि गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी कि एक महिला तस्कर टावर चौक से अखाड़ा होते हुए अहियापुर को मादकपदार्थ लेकर एक टोटो गाड़ी से जा रही है इसके बाद वहां जांच के दौरान उक्त महिला को हिरासत में लिया गया वहीं महिला की जब तलाशी ली गई तो उसके पास से बरामद एक झूले से 800 इसमें की पूरियां बरामद किया गया जिसके बाद महिला को पूछताछ के बाद आज न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तार स्मैक तस्कर महिला की पहचान मिठनपुरा थाना क्षेत्र के रहने वाली सलमा खातून के रूप में हुई है।

जिला मुख्यालयों पर प्रतिरोध मार्च निकालने का निर्णय इंडिया गठबंधन ने लिया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी इंडिया गठबंधन मधुबनी का एक बैठक सीपीआई जिला सचिव कॉ मिथिलेश झा के अध्यक्षता में सीपीआई जिला कार्यालय सहीद भवन बाटा चौक मधुबनी में किया गया जिसमे बिहार में बढ़ते अपराध के खिलाफ 20 जुलाई 2024 को मधुबनी रेलवे से जिला मुख्यालयों पर प्रतिरोध मार्च निकालने का निर्णय लिया गया है । साथ ही जिलाधिकारी को संयुक्त ज्ञापन भी सौंपा जाएगा।इंडिया गठबंधन के नेताओ ने संयुक्त तौर पर विकासशील इंसान पार्टी प्रमुख और पूर्व मंत्री मुकेश सहनी के पिता जीतन सहनी की हत्या की गहरी निंदा की है। और कहा कि इस घटना की जितनी निंदा की जाए कम है।अपराधियों का मनोबल बढ़ा हुआ है ,नेताओं ने इस घटना के दोषी की के साथ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। राज्य में जिस प्रकार आये दिन अपराध की घटनाएं बढ़ती जा रही है और अपराधियों के मन में पुलिस प्रशासन का भय समाप्त हो गया है। पूरे प्रदेश में दहशत का माहौल कायम है क्योंकि शासन व्यवस्था थके हुए हाथों में है। बिहार की डबल इंजन सरकार में सत्ता संपोषित सत्ता संरक्षित और सत्ता प्रायोजित सरकारी अपराधियों का मनोबल इतना बढ़ चुका है कि वो जब चाहे, जहां चाहे, जैसे चाहे, कैसे भी, किसी की भी हत्या कर सकते है। ठउअ सरकार सच्चाई स्वीकार ने की बजाय वही घिसा-पीटा बयान दोहराती रहती है कि सुशासन का राज है। जबकि प्रतिदिन सैकड़ों लोग सत्ता पोषित आपराधिक घटनाओं में अकाल मौत मारे जा रहे है। बिहार में अपराध अपने चरम पर है। बैठक में राजद जिला प्रवक्ता इंद्रजीत राय, भाकपा माले के श्याम पंडित राजेंद्र यादव विश्वंबर कामत श्रवन राम वीआईपी पार्टी के जिला अध्यक्ष श्याम सुंदर सहनी विशुनदेव चौधरी संजय सहनी माकपा के कॉ. दिलीप झा, सीपीआई के सत्यनारायण राय सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

प्रतिवाद मार्च की सफलता को लेकर इंडिया गठबंधन की बैठक आज

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।बिहार में अपराध की बढती घटनाओ व गिरती कानून व्यवस्था के खिलाफ इण्डिया गठबंधन ने 20 जुलाई को जिला मुख्यालय पर राज्यस्तरीय प्रतिवाद की घोषणा को दरभंगा मे सफल बनाने मे इंडिया गठबंधन के नेता कार्यकर्ता जुट गए है। कार्यक्रम की सफलता को लेकर कल 19 जुलाई को राजद जिला अध्यक्ष उदय शंकर यादव के आवास पर इंडिया गठबंधन के नेताओ की बैठक आयोजित की गई है। उक्त जानकारी देते हुए भाकपा(माले) जिला सचिव बैद्यनाथ यादव ने बताया की वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी के पिता जीतन सहनी की वीभत्स हत्या मे अभी तक मात्र एक गिरफ्तारी घटना का सम्पूर्ण उद्भेदन करने मे पुलिस की नाकामी जीता जागता उदाहरण है। और कई घटनाएं घटी है जो समाज की कलंकित करने वाला है और ससमय समस्या का हल निकालने मे विफलता पर घटित हुई है। श्री यादव ने बताया की बैठक में राजद जिला अध्यक्ष उदय शंकर यादव, भाकपा(माले) जिला सचिव बैद्यनाथ यादव, सीपीआई जिला सचिव नारायण जी झा, सीपीएम जिला सचिव अविनाश कुमार ठाकुर उर्फ मंटू, कांग्रेस जिला अध्यक्ष सीता राम चौधरी, वीआईपी जिला अध्यक्ष विनोद बंपर सहित कई नेता भाग लेंगे।

चयनित खिलाडी बिहार राज्य सीनियर एवं जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए रवाना

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। दरभंगा जिला एथलेटिक्स संघ के द्वारा चयनित खिलाड़ियों को पटना के पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स कंकड़बाग में आयोजित 90वीं बिहार राज्य सीनियर एवं जूनियर एथलेटिक्स चैंपियनशिप के लिए दरभंगा रेलवे स्टेशन से रवाना किया गया। सचिव यशपाल कुमार एवं अध्यक्ष डॉ.महताब आलम द्वारा सभी खिलाड़ियों के हौसला अफजाई के रूप में जर्सी देकर बेहतर प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं दिया।

उन्होंने बताया कि दरभंगा की ओर से 45 सदस्य खिलाड़ियों का दल भाग लेगा ।भाला फेक में सैयद अहसान मेहंदी एवं मुकेश कुमार ,गोला फेक में वर्षा रानी एवं तनु मिश्रा,चक्का फेक में प्रीती बाला एवं आस्था रश्मी,हेप्टैथ्लान में सूर्या प्रकाश रॉय एवं सनी कुमार रॉय,पेंटाथ्लन में आदित्य चौधरी ट्रायऐथ्लान में प्रतिभा छोटी एवं अविनाश कुमार एवं अन्य सभी खिलाड़ी इस खेल के लिए चयनित किए गये है एवं टीम प्रशिक्षक के रूप में दिनकर कुमार साथ ही टीम मैनेजर के रूप में श्रुति सिंह को नियुक्त किया गया है।

वरीय संयुक्त सचिव विकास मिश्रा ने उम्मीद जताई है कि पिछले वर्ष हुए राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जिस तरह से प्रदर्शन किया गया उससे बेहतर प्रदर्शन करने की उम्मीद है।, इस टीम को चयनित कर बेहतर तरीके से प्रशिक्षित किया गया है। दरभंगा जिला एथलेटिक्स संघ के अध्यक्ष डॉ.माहताब ने हरी झंडी दिखाकर विदा किया साथ ही इस मौके पर संरक्षक रविंद्र सिंह एवं आशीष कुमार,संयुक्त सचिव अमित कुमार,अभिनव आनंद ,आकांक्षा साथ ही खेल प्रेमी राजेश कुमार, संजीव कुमार मौजूद थे।सभी एथलीटों को संघ के द्वारा बेहतर प्रदर्शन करने की शुभकामनाएं दी गई।

मोहर्रम के अवसर पर रेड क्रॉस निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाकर खिलाड़ियों को सेवा दिया

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।मानवता सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहने वाली अग्रणी संस्था रेड क्रॉस सोसाइटी, दरभंगा द्वारा मोहर्रम के अवसर पर सदस्य अजय जालान के पहल पर 16 व 17 जुलाई को टावर चौक पर मैनेजिंग कमिटी के सदस्य आशीष सर्राफ के संयोजकत्व में फर्स्ट एड सेंटर की व्यवस्था की गई। दोनों दिन मिलाकर लगभग 200 लोगों को चिकित्सा सेवा किया गया। इस सेवा कार्य में राज्य प्रतिनिधि डॉक्टर राम बाबू खेतान, संरक्षक नीरज खेडिया एवं मैनेजिंग कमेटी के सदस्य, डॉक्टर गितेंद्र ठाकुर एवं सदस्य आकाश कुमार, रमेश कुमार, राहुल कुमार, तरुण कुमार मिश्रा, राज कुमार पासवान व अमरेश कुमार मिश्रा काफी सक्रिय रहे। संयोजक आशीष सराफ ने कहा कि यह सेवा अनमोल है ऐसी सेवा भावना सभी लोगो के दिल में होनी चाहिये। जिससे समाज मे शांति और सद्भावना का विकास हो। गौरव जालान, अरुण कुमार सर्राफ एवं आसपास के लोगों की भूमिका भी काफी सराहनीय रही। कार्यक्रम के संयोजक आशीष सर्राफ को एवं युवा सदस्य गौरव जालान को प्रोत्साहन स्वरूप मैनेजिंग कमिटी के वरीय सदस्य डॉक्टर गीतेंद्र ठाकुर द्वारा सम्मानित किया गया।

एसएच व प्रखंड का संपर्क पथ चौड़ा होने से खत्म होगी जाम की समस्या

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। बेनीपुर अनुमंडल के दो एसएच तथा दो प्रखंड को जोड़ने वाली आरसीडी विभाग की सिंगल लाइन सड़क पर प्रतिदिन वाहनों के साइड लेने में महाजाम लग रहा है। करीब डेढ़ किलोमीटर सड़क की लंबाई है। स्थानीय लोग एवं राहगीरों सड़क की चौड़ी एवं मजबूती करण करवाने की मांग क्षेत्रीय विधायक से की है। विभागीय सूत्रों के मुताबिक आशापुर टावर से ताज खान के घर तक पीक्यूसीसी दलाई है। इसकी चौड़ाई साढे 5 मीटर है। जबकि उससे आगे सड़क की कालीकरण की चौड़ाई 3.75 मीटर यानी 12 फिट है। आशापुर टावर चौक एसएच-56 से एसएच -88 बलहा तक सड़क की लंबाई 1.65 किलोमीटर है। दोनों एसएच के बीच नंदापट्टी से बेनीपुर से मनीगाछी प्रखंड जाने वाली आरडब्लूडी सड़क भी जुड़ा है। आशापुर से बलहा के बीच नंदापट्टी गजेंद्र सिंह के घर के पास खतरनाक मोड़ पर प्रतिदिन कोई न कोई दुर्घटना होती रहती है। क्योंकि सड़क की मोर की बनावट बलहा तरफ से आशापुर आने वाले तथा आशापुर से बलहा जाने वाले वाहन चालक को मोर पर आगे की सड़क दिखाई नहीं पड़ता है। नंदापट्टी, बेनीपुर, आशापुर. बलहा. नवादा के परमानंद सिंह, प्रवीण सिंह, प्रो सुरेश प्रसाद सिंह, श्रीप्रसाद कमती, अनिल कर्ण, राजीव झा, राघवेंद्र झा, मोती बाबू, महेंद्र नारायण झा लालजी आदि ने बेनीपुर विधायक से आशापुर-बलहा सड़क की चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण करवाने की मांग की है। इधर राजद के प्रदेश महासचिव कमलराम विनोद झा कमल सेठ ने पथ निर्माण मंत्री एवं सचिव को पत्र भेजकर महत्वपूर्ण सड़क आशापुर-बलहा को चौड़ीकरण करवाने की मांग की है।

महावैयाकरण दीनबन्धु के जीवन पर संगोष्ठी आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर व्याकरण विभाग में विभागाध्यक्ष प्रो. दयानाथ झा की अध्यक्षता में संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का विषय था पण्डित महावैयाकरण दीनबंधु झा का जीवन चित्रण। मुख्यातिथि प्रो शशिनाथ झा द्वारा पण्डित दीनबंधु झा का परिचय देते हुए बताया गया कि वे शिव कुमार मिश्र के शिष्य थे। उन्होंने वैयाकरण भूषणसार पर दीपिका टीका भी लिखी। समासशक्ति दीपिका के मंगलाचरण मे तीन अर्थ वैयाकरण, नैयायिक और महामाया को द्योतित करना पंडित दीनबंधु झा की विशेषता बताता है। साहित्य में भी महावैयाकरण द्वारा तीन पुस्तके लिखी गई। रमेश्वरप्रतापोदयम्-मे व्याकरण- प्रयोग अद्वितीय है। धर्मशास्त्र मे भी पुस्तके लिखीं गई जैसे जीवितपुत्रिकानिर्णय, श्राद्धादिकारीनिर्णय, विजयदशमीनिर्णय, बच्चो के लिए बालशिक्षा सोपानम् लिखी गई । मैथिली व्याकरण भी पण्डित दीनबन्धु झा द्वारा लिखा गया।

पूर्वविभागाध्यक्ष प्रो. लक्ष्मीनाथ झा ने कहा कि वे वैयाकरण, साहित्यिक, धर्मशास्त्र समेत सभी विषयों के विद्वान थे। अलंकारशास्त्र मे उल्लेखालङ्कार की अलग से व्याख्या अद्वितीय थी। वक्तव्य में प्रो. सुरेश्वर झा द्वारा कार्यक्रम को प्रासंगिक कहा गया। उन्होंने पंडित दीनबन्धु झा विरचित पाणिनीय व्याकरण तत्त्वप्रदीप के विषय में बताया। विभागाध्याक्ष प्रो दयानाथ झा ने पण्डित दीनबन्धु झा के परिवार का परिचय भी दिया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन मे कहा कि पण्डित दीनबन्धु झा ने प्रारम्भ मे व्याकरण का सम्पूर्ण ज्ञान तटुआर ग्रामवासी पण्डित धनुर्धर झा से प्राप्त किया था, उसके पश्चात वाराणसी में शिवकुमार मिश्र से। घर पर ही विद्यालय खोलकर उन्होंने अनेक शिष्यों को पढ़ाया जिनमें से सभी के सभी शिष्य बड़े बड़े विद्वान हुए। पुत्र वंश के उनके दौहित्र प्रो. विश्वनाथ झा पूर्व कुलपति रहे। दूसरे दौहित्र प्रो. शशिनाथ झा जो स्वयं भी उन्हीं के समान व्याकरण, साहित्य, मैथिली में अप्रतिम प्रतिभा के धनी हैं। आचार्य डॉ साधना शर्मा ने संगोष्ठी का संयोजन किया तथा दीनबन्धु झा, एल सविता आर्या, पंडित दीनबन्धु झा, डॉ. यदुवीर स्वरूप शास्त्री ने चर्चा भाग लिया ।

बढ़ती अपराध को लेकर 20 जुलाई को महागठबंधन का हल्ला बोल

प्रात : किरण संवाददाता

अरवल। युवा राजद जिला अध्यक्ष प्रवीण कुमार यादव ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि बिहार में लगातार बढ़ती अपराधिक घटनाओं व लचर कानून व्यवस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन दलों द्वारा 20 जुलाई को प्रदेश के जिला मुख्यालययो पर प्रतिरोध मार्च निकालने का निर्णय लिया गया है। साथ ही जिलाधिकारी संयुक्त ज्ञापन सौंपा जाएगा। राज्य में जिस प्रकार आये दिन अपराध की घटनाएं बढ़ती जा रही है और अपराधियों के मन में पुलिस प्रशासन का भय समाप्त हो गया है। पूरे प्रदेश और अरवल में भी अपराधियो के द्वारा लगातार घटना का अंजाम दिया जा रहा है और अपराधी खुलेमाम घूम रहे है और पुलिस मूकदर्शक बना हुआ है। जिससे जिला में दहशत का माहौल बना हुआ है। राज्य के शासन व्यवस्था थके हुए हाथों में है और रिटायर्ड अधिकारी सरकार चला रहे हैं। हाल के दिनों में कोई ऐसा दिन नहीं हो जहां से हत्या बलात्कार अपहरण जैसी घटनाएं ना हो। बिहार में बीजेपी और जदयू की सरकार बनने के बाद सट्टा संरक्षित अपराधी खुलेआम घटना को अंजाम दे रहे हैं। हथियारों और अपराधियों को सरकार के द्वारा संरक्षण दिया जा रहा है। ऐसी सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए महागठबंधन के सभी प्रकोष्ट के पदाधिकारियों, अभिभावकों,साथियों से अनुरोध हैं कि जिला मुख्यालयों पर इंडिया गठबंधन सभी दलों के साथियों के साथ मिलकर प्रतिरोध मार्च को सफल बनाये।

विद्यालय में केमिकल ब्लास्ट से शिक्षक सहित 7 छात्र झुलसे

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट थाना क्षेत्र के मैठी बहादुरपुर गांव स्थित डॉ एमएल दास एकेडमी स्कूल के प्रयोगशाला में हाइड्रो क्लोरिड कैमिकल की बोतल बलास्ट होने से सात बच्चे झुलस गए। जिसमें एक बच्चा गम्भीर बताया जा रहा है। स्कूल के बच्चों ने बताया की आठवीं कक्षा के विद्यार्थी लैब में केमिकल रीड कर ट्रैफिक लाइट की पढ़ाई कर रहे थे। इसी बीच कैमिकल वाले बोतल से रिसाव होने लगा। जिसे देख एक छात्र ने रिसाव बंद करने का प्रयास किया, इसी बीच बोतल का ढक्कन प्रेसर से निकल गया। इस घटना में सात बच्चे समेत एक साइंस टीचर झुलस गए। सबसे अधिक आठवीं कक्षा का छात्र ऋषि नंदन चौधरी घायल है। ऋषि नंदन चौधरी के बड़े भाई कृष्ण नंदन कुमार ने बताया कि इसके बाद पूरे विद्यालय परिसर अफरातफरी का माहौल बन गया। फिर वे एक शिक्षक के मोबाईल से अपने पिता को फोन किया। फिर आनन फानन में पहुंचे पीड़ित बच्चे के पिता बखरी निवासी रामसागर चौधरी ने अपने ही कार से सभी घायल बच्चों को ईलाज के लिए शहर के एक निजी अस्पताल मे ले गए। वहीं बच्चों का आरोप है की विद्यालय प्रबंधन के द्वारा लैब में किसी प्रकार की सुरक्षा सामग्री उपलब्ध नहीं कराई गई है। लैब में बगैर सेफ्टी जैकेट, गलप्स का बच्चों को पढ़ाया जाता है। घायल बच्चों में आठवीं कक्षा का आयुष राज, शिवम कुमार, आशुतोष कुमार, नीतू कुमारी, आदर्श कुमार शामिल है।

घायल बच्चों ने बताया कि घटना के आधे घंटे तक सभी बच्चे स्कूल में पीड़ा से तड़प रहे थे। लेकिन प्रबंधन के द्वारा किसी प्रकार की सहायता नहीं मिली। घटना होने के बाद विद्यालय के सभी शिक्षक वहां से फरार हो गए। स्कूल पहुंचे घायल छात्रों के परिजनों ने बताया कि विद्यालय के किसी भी अधिकारी ने कोई जानकारी नहीं दी। सभी बच्चों के द्वारा फोन कॉल पर पहुंचे हैं। प्रिंसिपल रजनीश मिश्रा ने बताया कि थोड़ी बहुत कैमीकल से बच्चे घायल हुए हैं। जिन्हें विद्यालय अपने स्तर से इलाज करा रहा है।

बंदोबस्त कार्यालय का नजीर शराब के नशे में गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई :- मध निषेध विभाग की टीम ने बंदोबस्त कार्यालय में शराब पीकर हंगामा कर रहे नजीर को गिरफ्तार किया है। कार्यालय में कार्यरत नजीर की पहचान बासुकी के रूप में हुई है। बताया जाता है कि कार्यालय में कार्यरत नजीर बासुकी शराब के नशे में धुत होकर अपने सहकर्मियों के बीच हंगामा कर रहा था। इसी दौरान किसी ने इस बात की सूचना डीएम राकेश कुमार को दे दिया। मामला संज्ञान में आते ही डीएम राकेश कुमार ने उत्पाद अधीक्षक सुभाष कुमार को तुरंत हंगामा कर रहे नजीर को गिरफ्तार करने का आदेश दिया। हंगामा कर रहे नजीर को इस बात की भनक लग गई। जब तक उत्पाद विभाग की टीम कार्यालय पहुंचती , तब तक हंगामा कर रहे नजीर अपने आवास पर भाग गए। इसके बाद उत्पाद विभाग की टीम ने नजीर को उसके आवास से गिरफ्तार कर मेडिकल जांच के लिए सदर अस्पताल लेकर गई। जहां चिकित्सक द्वारा नजीर का ब्लड सैंपल लेकर जांच के लिए पटना विधि विज्ञान प्रयोगशाला भेजा गया है। मामले की जानकारी देते हुए उत्पाद अधीक्षक ने बताया कि ब्रेथ एनालाइजर मशीन द्वारा जब नजीर की जांच की गई तो मशीन में शराब पीने की पुष्टि हुई है। इस पूरे मामले पर जिलाधिकारी राकेश कुमार ने कहा कि पूरे बिहार में शराब बंदी लागू है तथा सभी विभाग के कर्मियों ने शराब नहीं पीने की शपथ ली है। ऐसे में अगर किसी के द्वारा शराब का सेवन किया जाता है तब उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

नगर क्षेत्र के अलग अलग जगहों से निकाली गई ताजिया जूलूस, अखाड़ा

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] मुहर्रम पर्व को लेकर नगर क्षेत्र के खलासी मुहल्ला, पुरानी बाजार, बाबूबांक से बुधवार की देर शाम को तजिया और अखाड़ा जूलूस निकाली गई। जहां जहां से ताजिया निकाली गई सबसे पहले वहां के मुस्लिम भाईयों ने अपने बड़े- बुर्जुग के साथ अखाड़ा खेलते हुए सलामी दिया और उसके बाद तजिया जूलूस शहर भ्रमण के लिए निकाला गया। ताजिया जूलूस में छोटे बच्चों से लेकर बड़े बुर्जुग ने लाठी डंडा आदि से हैरतअंगेज कारनामा लोगों के सामने रखने का काम किया। नगर क्षेत्र के अलग अलग जगहों से निकाली गई ताजिया जूलूस में शामिल लोग चैक चैराहों पर हेरतअंगेज कारनामा दिखा रहे थे जिसे देखने के लिए लोगों की भीड़ भी जगह जगह लगी रही। खलासी मुहल्ला अखाड़ा कमेटी के सदस्य मो. शहनवाज ने बताया कि इसी महीने से इस्लाम धर्म के नए साल की शुरूआत होती है। हजरत इमान हुसैन की शहादत की याद में यह पर्व मनाया जाता है। आगे अन्य लोगों ने बताया कि इस पर्व की यह भी खासियत है कि इससे लोगों को पैगाम मिलता है कि लोग आपसी भाईचारे बनाकर रखे। वही देर शाम को निकली ताजिया जूलूस और अखाड़ा में शांति व्यवस्था बनाए रखने को लेकर पुलिस प्रशासन भी जगह जगह तैनात दिखाई दिए और ताजिया जूलूस में भी साथ रहे।

संक्षिप्त खबरें

भैंसुर और उसके घरवालों ने अपने छोटे भाई की पत्नी के साथ कि मारपीट

जमुई [झाझा] मकई लगे खेत का घेरान तोड़ दिए जाने का विरोध करने पर एक महिला के साथ उसके भैंसुर और उसके घर वालों ने मारपीट करते हुए घायल कर दिया। जिसका इलाज गुरुवार को रेफरल अस्पताल में किया गया। मामला थानाक्षेत्र के धमाना गांव की है। घायल महिला की पहचान रमनी देवी के रूप में हुई है। महिला ने बताया कि मेरा पति अन्य प्रदेश में काम करता है और घर पर मैं अपने दो बच्चों के साथ ही रहती हूं। मेरे घर के आगे जमीन पर मकई का फसल लगा हुआ है और उसका घेरान करके रखी थी। तभी भैंसुर घेरान तोड़ दिया जिसका विरोध किया तो वे और उसके पत्नी, बच्चे लोहे के रॉड, लाठी आदि से मेरे साथ मारपीट करने लगा और जब मेरे छोटे छोटे बच्चे बचाने के लिए आए तो उसके साथ भी मारपीट किया। महिला के द्वारा थाना में पहुंचकर पुलिस को मारपीट की पूरी जानकारी दिया।

रास्ता को लेकर सास बहु के साथ कि गई मारपीट

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के धमाना गांव में जमीन के विवाद को लेकर सास बहु के साथ उसकी गोतनी के द्वारा मारपीट किया गया। घायल महिला की पहचान सिंधु देवी और उसकी सास कलावतिया देवी के रूप में हुई है। घायल सास बहु का इलाज रेफरल अस्पताल में किया गया। घायल सिंधु देवी ने बताया कि जमीन के विवाद को लेकर मेरी गोतनी घर से गुजरने वाले रास्ता को बंद कर दिया जब मैं गोतनी से रास्ता बंद कर देने पर आवागमन में हो रही परेशानी के बारे में बोला तो उसने मुझे झगड़ा शुरु कर दिया और लोहे के सब्बल से मारने लगा जब मेरी सास मुझको बचाने के लिए आई तो उसके साथ भी उसने मारपीट किया।

20 जुलाई को परवत्ता सीएचसी के समक्ष होगा प्रदर्शन सभा

खगड़िया। बिहार संविदा एनएचएम संघर्ष मोर्चा खगड़िया के बैनर तले कर्मचारी महासंघ गोपगुट के राज्यपाली आह्वान पर डीपीएम सीएस डीएम के सामने धरना प्रदर्शन सभा किया गया। एनएचएम कार्यकर्ताओं ने पुरानी सदर अस्पताल परिसर में एकत्रित होकर पीएचसी, सदर हॉस्पिटल, डीपीएम सीएस डीएम के सामने प्रदर्शन किया जिसका नेतृत्व कर्मचारी महासंघ गोपगुट के सम्मानित अध्यक्ष चंद्रशेखर मंडल एवं ऑल इंडिया मिशन ट्रेड यूनियन, ऐम्टू के अध्यक्ष सह संघर्ष मोर्चा के संरक्षक किरण देव यादव ने किया।

मिथुन हत्याकांड का हुआ खुलासा मां और भाई हुआ गिरफ्तार

● गिरफ्तारी के संदर्भ में जानकारी देते एसडीपीओ

प्रात: किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] बीते 13 जुलाई को गुप्त सूचना के आधार पर ग्राम सोहजाना के मिथुन यादव पिता स्व. लोचन यादव की तेजधार हथियार से गला रेतकर हत्या कर उसके शव को बलियो जाने वाली मार्ग में पड़ने वाले खैरा श्मशान घाट में दफनाने के मामले में पुलिस ने अनुसंधान करते हुए मामला का खुलासा करते हुए दो लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तारी के संदर्भ में गुरुवार को झाझा एसडीपीओ ने थाना में पीसी करते हुए मामले की जानकारी दी। एसडीपीओ राजेश कुमार ने बताया कि 13 जुलाई को पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर श्मशान घाट में दफनाए शव को अंचलाधिकारी झाझा एवं एफएसएल टीम को घटना स्थल पर बुलवाकर बाहर निकलवाया गया। और उसके बाद थाना में मृतक की मां सावित्री देवी और भाई इंद्रदेव यादव के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कि गई। पुलिस अधीक्षक डॉ. शौर्य सुमन के दिशा निर्देश पर मेरे नेतृत्व में एक टीम बनाई गई जिसमें थानाध्यक्ष संजय कुमार, पुनि कौशेलेंद्र कुमार,पुनि संजय कुमार यादव, पुअनि नंदन कुमार, पुअनि कुंज बिहारी,पुअनि निधि कुमारी को शामिल किया। और उसके बाद गठित टीम के द्वारा लगातार पुलिस तकनीकी मदद से कार्य करते हुए दोनो की गिरफ्तारी को लेकर कार्य कर रही थी। तभी गुरूवार को गुप्त सूचना प्राप्त हुआ कि मिथुन के हत्यारे उसकी मां एवं उसका भाई दोनो झाझा बोड़वा बसस्टैंड के पास है और दोनो शहर से कहीं और भागने की फिराक में है जिसके बाद पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर दोनो को गिरफ्तार किया। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार उसकी मां और भाई से पूछताछ करने पर मामला का खुलासा किया और बताया कि मिथुन नशेड़ी था जिससे उसकी पत्नी उसको छोड़कर भाग गई थी। उसके बाद मिथुन घरवालों पर दूसरी शादी का दबाब डालता था। शादी नही होने पर मां के साथ दुर्व्यवहार करता था। घटना के कुछ दिन पूर्व अपने भाई का ई रिक्शा भी जला दिया। इसलिए मां और भाई ने मिलकर मिथुन नका गला काटकर हत्या कर दिया और शव को खैरा घाट के बगल में श्मशान घाट में दफन कर दिया। वही मृतक की मां के निशानदेही पर हत्या में उपयोग किए जाने वाले तेजधार हथियार को भी बरामद कर लिया गया है।

कड़ी सुरक्षा के बीच शांति और सौहार्दपूर्ण माहौल में मना मुहर्रम

प्रात: किरण संवाददाता

घैलाढ़ (मधेपुरा) प्रखंड के घैलाढ़ ओपी व परमानंदपुर थाना क्षेत्रों के विभिन्न गांवों में मुहर्रम का पर्व शांतिपूर्ण व सौहार्दपूर्ण माहौल में धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर प्रखंड के विभिन्न जगहों पर भव्य जुलूस निकला। जिसमें लोगों ने रंग बिरंगे तजिया निकाली जो काफी आकर्षक और मनमोहक दिख रही थी। लोगों ने ताजिया जुलूस के साथ या अली, या हुसैन के नारे लगाते दिखे। प्रखंड क्षेत्र के घैलाढ़, बरदाहा, लक्ष्मीनिया परमानपुर श्रीनगर,चिकनोटवा आदि सहित दर्जनों जगहों पर ताजिया जुलूस निकाली गई। जानकारी के मुताबिक बता दे की प्रखंड क्षेत्रों में हजरत इमाम हुसैन के शहादत की याद में गम, दर्द, मलाल एवं बलिदान की दास्ता वाले त्यौहार मुहर्रम धूम धाम और शांति पूर्ण माहौल में बुधवार को संपन्न हुआ। रणक्षेत्रों में पहुंच मुस्लिम युवकों द्वारा लाठी, तलवार, भाला आदि भांजने का करतब दिखाया। वही प्रशासन हर जगह शांति विधि व्यवस्था बनाये रखने में तप्तर दिखे। सीओ बंधना कुमारी ने बताया कि मुहर्रम पर्व को देखते हुए शांति स्थापित को लेकर विभिन्न जगहों पर मैजिस्ट्रेट के साथ पुलिस पदाधिकारी को तैनात किया गया है। वही परमानंदपुर थानाध्यक्ष रंजन कुमार, घैलाढ़ ओपीध्यक्ष अवधेश प्रसाद अपने पुलिस बल के साथ गस्ती करते हुए चौकस दिखे गए। प्रशासन पूरी तरह सजग और सतर्क दिखे। परमानंदपुर थानाध्यक्ष रंजन कुमार व घैलाढ़ ओपी अवधेश प्रसाद ने बताया कि सभी जगह मुहर्रम शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न हुई।

पुलिस प्रशासन की कड़ी सुरक्षा के बीच सोनो में मोहर्रम का पर्व शांति पुर्वक संपन्न

प्रात: किरण संवाददाता

सोनो जमुई : मुस्लिम समुदाय का महत्वपूर्ण त्योहार मुहर्रम बुधवार को पुलिस प्रशासन की कड़ी सुरक्षा के बीच शांति पुर्ण माहौल में संपन्न हो गया है । मुहर्रम पर्व को लेकर सोनो प्रखंड पुर्वी भाग के रक्तरोहनियां , तिलवरिया , ढोंढरी , कोड़ाडीह , गोरबा मटिहाना , खपरिया , पेरा मटिहाना तथा बाजराडीह आदि गांव से ढोल बाजे एवं सुसज्जित तरिके से सजाई गई ताजिया जुलूस के साथ निकली युवकों ने पेरा मटिहाना खेल के मेदान पर पहुंचा ओर विभिन्न प्रकार के नये नये खेल करतब दिखाए । इस दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने युवकों द्वारा दिखाए गए खेल का भरपूर आनंद लिया । मौके पर अपने सैफ के जवानों के साथ मौजूद सोनो थाना अध्यक्ष दीनानाथ सिंह ने खेल की समाप्ति तक डटे रहे । वहीं दूसरी ओर सोनो प्रखंड पश्चिमी भाग के नैयाडीह पंचायत अंतर्गत कुसैया गांव स्थित खेल के मेदान में विभिन्न कई गांवों से ढोल बाजे के साथ सुसज्जित तरिके से सजाई गई ताजिया जुलूस के साथ आए युवकों ने विभिन्न प्रकार के दमदार खेल दिखाकर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने पर मजबुर कर दिया । कुसैया गांव स्थित खेल के मेदान में ताजिया जुलूस लेकर आने वाले गांवों में कुसैया के अलावा चॉदरा , बुढ़िया लापर , बौथा , करहरीटांड़ , मोहनाडीह , बंदरमारा , दुधनियां तथा भलसुंभिया आदि गांव शामिल हैं ।कुसैया गांव में आयोजित जुलूस में उमड़ी भीड़ को नियंत्रित करने व शांति पुर्ण माहौल में मुहर्रम पर्व को समापन करने के लिए चरका पत्थर थाना की पुलिस ओर एस एस बी के जवान खेल की समाप्ति तक मौजूद थे ।

जन साधारण एक्सप्रेस से शराब हुआ जब्त

प्रात: किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] गुप्त सूचना के आधार पर झारखंड दिशा से रेलमार्ग के रास्ते बिहार में लाये जा रहे भारी मात्रा में शराब रेलपुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर जब्त किया है। दी गई जानकारी अनुसार रेल थानाध्यक्ष को सूचना प्राप्त हुआ कि गाड़ी संख्या 15271 जन साधारण एक्सप्रेस में भारी मात्रा में शराब लाया जा रहा है। सूचना मिलने के बाद उक्त गाड़ी के झाझा प्लेटफार्म पर लगते ही उक्त गाड़ी में रेल पुलिस की टीम के द्वारा जांच अभियान चलाया गया। तो एक कोच से तीन झोला लावारिस स्थिति में बरामद हुआ जिसको सन्देह के आधार पर सर्च किया गया भारी मात्रा में शराब पाया गया। रेल थानाध्यक्ष बृंद कुमार ने बताया की एक झोला से 36 पीस केनबियर के अलावे अन्य दो झोला से अलग अलग ब्रांड का कुल 112 बोतल विदेशी शराब बरामद हुआ। हालांकि इस छापेमारी में शराब तस्कर की गिरफ्तारी नही हुई है। रेल थानाध्यक्ष ने बताया कि अज्ञात शराब तस्कर के विरुद्ध रेलथाना में प्राथमिकी दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई की जाएगी।

मस्जिद से ताजिया खिंचकर समाज सेवी सूर्या वत्स ने कायम की हिंदू मुस्लिम एकता का मिसाल

प्रात: किरण संवाददाता

सोनो जमुई : समाज सेवी सूर्या वत्स ने मुस्लिम समुदाय के महत्वपूर्ण पर्व मुहर्रम के मौके पर निकलने वाली सुसज्जित ताजिया को अपने हाथों से खिंचकर हिंदू मुस्लिम एकता का परिचय देते हुए एक मिसाल कायम की हें ।समाज सेवी सह जन सुराज पार्टी के नेता सूर्या वत्स ने बताया कि जन सुराज पार्टी के प्रमुख डा० प्रशांत किशोर के निर्देश पर मुस्लिम समुदाय के द्वारा मुहर्रम पर्व के मौके पर निकलने वाली ताजिया जुलूस में शामिल होकर सारथी बना ओर मस्जिद से ताजिया को खिंचते हुए खेल के मेदान तक ले गया । श्री वत्स ने बताया कि जन सुराज पार्टी के प्रमुख डॉ० प्रशांत किशोर ने कहा है कि जब हिंदु समुदाय के लोग मुस्लिम के मस्जिद की रक्षा में हाथ बंटाना शुभारंभ कर देगा तो समझ लेना कि असली भारत यही है । श्री वत्स ने आगे बताया कि मस्जिद से निकली ताजिया जुलूस में शामिल होने के उपरांत जब ताजिया को खिंचते हुए ले गया तो बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के युवकों में हमारे प्रति काफी उत्साहित की भावना देखी गई । साथ ही युवकों सहित बुढ़े बुजुर्ग तबके के लोगों ने कहा कि श्री वत्स के द्वारा मुहर्रम पर्व के मौके पर जुलुस में शामिल होना ओर मस्जिद से खिंचकर ताजिया को ले जाना उनके लिए सराहनीय कार्य हे , साथ ही हम सभी मुस्लिम समुदाय के लोग उनके प्रति काफी उत्साहित हैं ।

कुमारखंड में देश भक्ति जज्बे और शांतिपूर्ण माहौल में मनाया गया शहादत का पर्व मुहर्रम

प्रात: किरण संवाददाता

कुमारखंड (मधेपुरा) कुमारखंड प्रखंड क्षेत्रों में गुरुवार को मुस्लिम समुदाय के लोगों ने शांतिपूर्ण वातावरण में दसवीं तारीख को मुहर्रम पर्व देश भक्ति जब्जे के साथ मनाया। यह पर्व इस्लाम धर्म के अनुसार साल का पहला महीना माना जाता है। इस माह इस्लाम धर्म के गुरु पैगम्बर मोहम्मद साहब के नाती (नवासे) ने अपना बलिदान (कुबार्नी) देकर इस्लाम धर्म के लिए शहीद हो गया था। तब से सभी मुस्लिम समुदाय के लोग गम के साथ मुहर्रम का पर्व मनाते हैं। वहीं घर घर कुरआन की तिलावत नौवीं और दसवीं तारीख को करने के साथ ही मुस्लिम समुदाय के लोग रोजा भी रखते हैं। प्रखंड के विभिन्न गांवों जैसे मंसूरीबाग टिकुलिया, बिशनपुर बाजार, भतनी, चैनपुर, यदुआपट्टी, पुरैनी, पोखरिया टोला, घौडदोल, मंगलवाडा के रहटा टोला एवं रहमतगंज तथा ललकुड़िया, इसराइन कला के जोरबगंज, रहटा, लक्ष्मीपुर चंडीस्थान, बेलारी, रौता, सिहपुर गढिया सहित कई अन्य गांव में ताजिया के साथ जुलूस निकाला गया। टिकुलिया में जुलूस में युवाओं के हाथ में तिरंगा झंडा और देश भक्ति जज्बे के साथ बुलंद आवाज में नारे-ए-तकबीर, हिंदुस्तान जिंदाबाद, या अली और या हुसैन के नारे तथा ढ़ोल नगाड़े के धुन पर वातावरण गुंजता रहा। विभिन्न जगहों पर जुलूस निकाला और उसके बाद अदब व एहतराम के साथ अखाड़ा पहुंच कर सभी मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अस्त्र, शस्त्र जैसे बाना, फरसा, भाला, तलवार अन्य अस्त्र, शस्त्र से लैश होकर अपने-अपने करतब का शानदार नमुना पेश किया। इस दौरान विभिन्न खेल मैदान, अखाड़ा, सिपरा और ताजिया आकर्षण का केंद्र बना रहा। विभिन्न गांव के जंगियों ने ढोल, नगाड़े एवं तिरंगा के साथ सैकड़ों की संख्या में जुलुस में शामिल हुए। सभी जगह पुलिस प्रशासन काफी मुस्तैद नजर आ रहे थे। मुहर्रम के दौरान बीडीओ प्रियदर्शी राजेश पायरट, सीओ आकांक्षा, बीईओ कुमार गुणानंद सिंह, एमओ रुपेश कुमार, साधन सेवी अरुण कुमार आजाद, कुमारखंड थानाध्यक्ष संजीव कुमार, श्रीनगर थानाध्यक्ष राघवेंद्र नारायण, बेलारी थानाध्यक्ष राजू कुमार साह, भतनी थानाध्यक्ष सत्यप्रकाश, एसआई नागेंद्र कुमार , एसआई उमेश कुमार वन, एसआई दीनानाथ सिंह, एसआई गोपेंद्र प्रसाद सिंह, पीटीए मनरेगा आशीष कुमार सिंह, पंचायत तकनीकी

झगरु यादव हत्या काण्ड का पुलिस ने किया सफल उद्भेदन

प्रात: किरण संवाददाता

चकाई/जमुई : चंद्रमंडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत माधोपुर गांव निवासी 40 वर्षीय झगरु यादव हत्याकांड का पुलिस ने उद्भेदन कर लिया है। साथ ही इस मामले के तीन नामजद आरोपित को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। जानकारी देते हुए एसडीपीओ राजेश कुमार ने बताया कि बीते 15 जुलाई को झगरू यादव की मौत हुई थी। जिसके बाद मृतक की पत्नी आशा देवी ने गांव के ही पांच लोगों पर पति की हत्या कर देने का आरोप लगाते हुए थाने में आवेदन दिया था। थानाध्यक्ष प्राप्त आवेदन के आलोक में कांड संख्या 121/24 के तहत मामला दर्ज कर पुलिस मामले के अनुसंधान में जुट गई। साथ ही पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी राजेश कुमार के नेतृत्व में एक टीम का गठन कर आरोपितों के गिरफ्तारी के लिए अभियान चलाया गया। इसी दौरान गुप्त सूचना के आधार पर माधोपुर गांव में छापेमारी अभियान चलाकर प्रदीप दास पिता स्व इंद्रदेव दास, अमित दास पिता स्व इंद्रदेव दास एवं नरेश तुरी पिता प्यारी तुरी को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि शेष नामजद आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए अभियान चलाया जा रहा है। जल्द ही सभी लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। छापेमारी दल में थानाध्यक्ष सुबोध यादव, अवर निरीक्षक दीपक कुमार, सिपाही शशिकांत दास, नवीन कुमार, राहुल कुमार पासवान एवं तकनीकी शाखा जमुई की टीम शामिल थी।

ई. अलीगंज प्रखंड क्षेत्र में शांतिपूर्ण रूप से मनाया गया मुहर्रम

प्रात: किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः-प्रखंड में इमाम हुसैन की शहादत के याद में त्याग और बलिदान का पर्व मुहरमं शांति वा सौहार्द पूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ ।वहीं ई०अलीगंज प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों आढा, कैथा, बेला ,चंद्रदीप, मतबल्बा, तेलार में उर्दू कैलेंडर के 10 तारीख को पहलाम हुआ, वहीं अलीगंज, दरखा, सुंदरबाद, इस्लामनगर, दिन्नगर, सहोड़ा, सेवे,चौरासा, दांड, के अलावे अन्य गांव का पाहलाम उर्दू कैलेंडर के 11वीं तारीख को इस्लामनगर करबला में पहलाम होता है।, मुस्लिम गावों में हर्षो उल्लास एवं शांति पूर्ण से परंपरागत तरीके से मनाया। , विभिन्न जगहों से तजीया के साथ भव्य अखाडा निकाला गया।अलीगंज बाजार के ताजिया कमिटी की ओर से भव्य ताजिया बनाया गया। जो सभी देखने वाले प्रशंसा की।,वहीं अल्फालाह कमिटी की अलीगंज के युवाओं ने अखाड़े के माध्यम से हैरत अंगेज कारनामो का प्रदर्शन किया। एक से बढ़कर एक कर्तव्य दिखाये। अखाड़े में ढोल,नगाड़े,गाजे बाजे एवं प्रमरागत हथियार लाठी,डंडे,जुल्फकार ,सैफ से युवाओं ने एक से बढ़ कर एक खेला दिखाया, अलीगंज अंदर बाजार इमामबाड़ा में सुंदरबाद, दरखा के अखाड़ा पहुंच कर तीनो गांव का ताजिया के साथ अखड़ा मेन रोड अलीगंज होते हुए इस्लामनगर करबला पहुंच कर ,बारी बारी से अपने नंबर के अनुसार शांति पूर्ण पाहलाम किया, वहीं मोहम्मद जियाउल रसूल,हाफिज मोबिन,मोहम्मद तैयब ने बताया की इमाम हुसैन दिन को बचाने के लिए अहले वैत कर्बला में अपनी शहीद होकर दिनो इस्लाम को बचाया,उनकी शहादत पूरी दुनिया जानती है,इसलिए दस मोहर्रम को यौमे आशूरा भी कहते है,दिन को बचाने के लिए अपने बढ़ाने की खुशी में हम लोग जूस निकलते हैं वह सभी को खुशी का पैगाम देते हैं वही इस्लाम को बचाने के लिए अपने नन्हे से बेटे अली असगर को कुर्बान कर दिया और इस्लाम को बचा लिया,तभी से मोहर्रम पर्व मनाने का दौर शुरू हुआ, बताते चले कि मुहर्रम पर्व त्याग,समर्पण और सत्यमार्ग का अनुसरण करना तथा आपसी प्रेम व भाईचारे के साथ सेवा का भाव स्थापित करना है ।इस पर्व के साथ ही इस्लामी नया साल भी प्रारंभ होता है ।वही लोगों ने पर्व के दौरान अमन,शांति एकता,भाईचारा और खुशहाली की दुआ भी किया ।वही कई मुस्लिम भाईयो बहनों ने रोजा रखकर इबादत भी किया। इस्लामनगर कब्रिस्तान मे 12 गांव के लोग ताजिया,सीपर ,फुल विसर्जन करने बडी संख्या मे ताजिया जुलूस के साथ पहलाम करने आते है ।इस्लामागर कर्बला के मोजबर जुबैर एवं मोहम्मद जहांगीर ने बताया कि पुरे बिहार मे सबसे बडी कब्रिस्तान इस्लामनगर मे है जो लगभग 9 एकड के करीब मे है। और यहा बुजूर्ग बताते है कि तीन सौ वर्षो से भी ज्यादा दिनो से लगभग 150 गांवो के लोग ताजिया जुलूस के साथ पहलाम करने के लिए आते थे।

चन्द्रदीप पुलिस ने एक युवक को देशी कट्टा व जिंदा कारतूस के साथ किया गिरफ्तार

प्रात: किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः-,चंद्रदीप थाना क्षेत्र के आढ़ा गांव में गुप्त सूचना के आधार पर चंद्रदीप पुलिस ने मंगलवार की देर रात्रि में त्वरित कार्रवाई करते हुए एक युवक को देसी कट्टा व जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है। चंद्रदीप थानाध्यक्ष राजेंद्र साह ने बताया कि मंगलवार की अहले सुबह गुप्त सूचना मिली की थाना क्षेत्र अंतर्गत आढ़ा मुसहरी में एक व्यक्ति आर्म्स लेकर घूम रहा है। सूचना मिलने पर त्वरित कार्रवाई करते हुए इस संबंध में वरीय पुलिस पदाधिकारी को सूचना देते हुए रात्रि गस्ती की टीम को आढ़ा मुसहरी पहुंचने हेतु निर्देशित किया गया। पुलिस टीम द्वारा थाना क्षेत्र के आढ़ा मुसहरी पहुंचकर घेराबंदी कर एक व्यक्ति को एक देसी कट्टा एक जिंदा कारतूस तथा दो मोबाइल एवं एक अपाची मोटरसाइकिल और 14000 रुपए के साथ पकड़ा गया। गिरफ्तार व्यक्ति से नाम पता पूछा गया तो उसने अपना नाम राहुल कुमार उम्र 37 वर्ष पिता रमेश राम ग्राम- मामुधिचक थाना बहादुरपुर (राजेंद्र नगर) जिला पटना बताया। इस दौरान पुलिस ने युवक के पास से एक अपाची मोटरसाइकिल जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर इफ06अफ794 एवं दो मोबाइल भी बरामद किया है। युवक द्वारा मोटरसाइकिल का कोई वैध दस्तावेज नहीं प्रस्तुत किया गया। चंद्रदीप थानाध्यक्ष राजेंद्र साह ने बताया कि जब्त अपाची मोटरसाइकिल के संबंध में कोतवाली (पटना) थाना कांड संख्या 425/24 धारा 303(2)बी0 एन0 एस0 चोरी का मामला दर्ज है ।छापेमारी टीम में पुलिस अवर निरीक्षक संजय कुमार सिंह के साथ पुलिस के जवान मौजूद रहे। वहीं थाना अध्यक्ष राजेंद्र साह ने बताया की जो भी अपराधी या अपराध करने वाले को पुलिस छोड़ेगें नहीं।

दो दिवसीय मोहर्रम मेले का फीता काटकर किया उद्घाटन

प्रात: किरण संवाददाता

घैलाढ (मधेपुरा) प्रखंड क्षेत्र के झिटकिया पंचायत अंतर्गत मध्य विद्यालय पथराहा के परिसर में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बड़ी धूमधाम के साथ मुहर्रम पर्व के अवसर पर दो दिवसीय मुहर्रम मेला सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां इस मौके पर मेले का विधिवत उदघाटन युवा राजद के प्रखंड अध्यक्ष राजनंदन यादव ने फीता काट कर किया। वही मेले के दूसरे दिन भी बाहर से आए हुए जंगी खिलाड़ियों के द्वारा बेहतरीन खेल के प्रदर्शन के पूर्व खेल का विधिवत फीता काटकर उद्घाटन किया गया। जहां मेले का उद्घाटन करते हुए राजनंदन यादव ने कहा कि 680 ई0 से इस प्रथा का अनुसरण मुस्लिम भाइयों द्वारा किया जा रहा है। कर्बला की जंग में शहीद हुए हजरत इमाम हुसैन हसन के शहादत की याद को ताजा करते हुए मुसलमान भाइयों द्वारा ताजिया जुलुस के साथ साथ पारंपरिक हथियार के साथ खतरनाक खेल और तरकीब दिखाया जाता है। इस अवसर पर पैक्स अध्यक्ष अशोक प्रसाद, वार्ड सदस्य मो जफीर, मो मुबारक, अमरेन्द्र कुमार, वार्ड सदस्य राकेश कुमार, मो निजाम, समाजसेवी अंगद आनंद, मो जब्बार, मो एनुल, मो सकुर, मो मंजीर, मो कारी, मो नारद, मो मेराज, मो जसीम, मो समीम, मो जमाल, मो सिराज, मो आलम, मो अलाउद्दीन, राहुल बोस, विकास कुमार सहित सैकडो लोग उपस्थित थे।

6 दिवसीय डाइट प्रशिक्षण हेतु 200 शिक्षक खड़गपुर रवाना

एफएलएन प्रशिक्षण को कर रहे हैं आत्मसात

प्रात: किरण संवाददाता

जमुई : बिहार सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मकता लाने के उद्देश्य से बिहार के विभिन्न जिलों के डाइट सेंटरों पर एफएलएन प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा। इस कड़ी में जमुई जिला के विभिन्न प्रखंडों के 200 शिक्षकों का दल डायट हवेली खड़कपुर में 6 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण को आत्मसात कर रहे। दिनांक 15 जुलाई से 20 जुलाई तक चलने वाले बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्रशिक्षण का उद्देश्य वर्ग 1-5 में पढ़ने वाले शिक्षकों के अंदर गुणात्मकता और भावात्मकता का समावेशन करना है जो वर्षों से विद्यालयों में कार्य करते हुए वास्तविकता के धरातल पर उतारने में सफल नहीं हो पा रहे। विभिन्न कलात्मक और मनोरंजनात्मक गतिविधियों द्वारा कराए जा रहे छह दिवसीय प्रशिक्षण के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कौशलों का प्रदर्शन गतिविधियों के माध्यम से जिस प्रकार कराया जा रहा वह कहीं ना कहीं सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए मील का पत्थर साबित होगी।

एफएलएन प्रशिक्षण के तहत समूह आधारित गतिविधि, परियोजना गतिविधि, प्रोजेक्ट आधारित गतिविधि और अन्य कलात्मक प्रस्तुतियों का संगम शिक्षकों के बीच किसी संजीवनी से कम नहीं। प्रशिक्षण कर रहे कई प्रशिक्षुओं ने प्रशिक्षण के तौर तरीके पर खुशी जाहिर करते हुए बताया कि शिक्षा विभाग द्वारा इस तरह के प्रशिक्षण नियमित होते रहने चाहिए जिससे शिक्षक स्वयं का पुनर्मूल्यांकन करते हुए विद्यालय में बेहतर योगदान के लिए प्रयासरत रहेंगे।

सम्पादकीय

आतंकवाद का नया कश्मीर

अब डोडा जिले की बारी है। राजौरी-पुंछ, कठुआ और डोडा सभी जम्मू संभाग के हिस्से हैं। बीते तीन सप्ताह के दौरान तीन आतंकी हमले हो चुके हैं। डोडा आतंकी मुठभेड़ में कैप्टन समेत चार सैनिक शहीद हुए हैं। इससे पहले कठुआ में पुलवामा का सारांश सरीखा हमला किया गया था, जिसमें 5 जवान शहीद हुए थे। बीते दो साल में 1 कर्नल, 3 कैप्टन, 5 मेजर समेत 10 अफसर कुर्बान करने पड़े हैं। हालांकि 2005 से 2021 तक जम्मू संभाग बिल्कुल शांत रहा। यह सेना प्रमुख से लेकर सत्ताधारी लोगों का मानना और दावा भी है, लेकिन अब जम्मू आतंकवाद का नया कश्मीर बनता जा रहा है। पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल एवं उत्तरी कमान के प्रमुख जनरल रहे दीपेन्द्र सिंह हुड्डा का मानना है कि जम्मू संभाग के इस इलाके में मैदान कम और जंगल ज्यादा, घने हैं। डोडा में जहां आतंकी हमला हुआ, वहां पहाड़ के एक तरफ 200 वर्ग किमी का जंगल है, जबकि हमारा तलाशी अभियान सिर्फ 50 वर्ग किमी में ही चलता रहा है। कश्मीर में जंगल कम और बर्फ के पहाड़ ज्यादा हैं, लिहाजा आतंकियों पर दूर से भी नजर रखी जा सकती है। जम्मू के लिए हमें नई, आक्रामक रणनीति बनानी चाहिए। कश्मीर घाटी में इतने सुरक्षा बल आज भी हैं कि आतंकी हरकत करने के घंटे-दो घंटे में आतंकियों को ढेर किया जा सकता है। जम्मू में सुरक्षा बल अपेक्षाकृत कम हैं। आतंकी उसी का फायदा उठाकर भाग जाते हैं। जंगल इतने घने हैं कि हेलीकॉप्टर या ड्रोन से आतंकियों के सुराग नहीं लगाए जा सकते। बहरहाल यदि रणनीति बदलनी है, तो वह कब तक बदली जाएगी? अथवा हम शहादतों के आंकड़े गिनते रहेंगे? बेशक हमारे सुरक्षा बलों ने 2023 में 87 आतंकी और 3 जुलाई, 2024 तक 21 आतंकियों को ढेर किया है, लेकिन इससे क्या फर्क पड़ता है? आतंकी तो मरने के लिए या जेहाद की खातिर सीमा पार करके हमारे जम्मू-कश्मीर में घुसते हैं।

उनके साथ मुठभेड़ में या आतंकी हमले में भारत के जो सैनिक शहीद होते हैं, क्या उनका मूल्यांकन किया जा सकता है? क्या उनकी भरपाई की जा सकती है? एक लंबी, थकाऊ ट्रेनिंग और लाखों रुपए खर्च करके औसतन एक सैनिक तैयार किया जाता है। आखिर शहादत का यह सिलसिला कब तक चलेगा? क्या हमारे सैन्य ऑपरेशन आतंकियों और कश्मीर टाइगर्स सरीखे आतंकी गुट को नेस्तनाबूद करने के मद्देनजर संचालित नहीं किए जा सकते? कठुआ वाला हमला भी इसी आतंकी गुट ने किया था। वह संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित आतंकी संगठन जैश-ए-मुहम्मद का जम्मू-कश्मीर में एक फर्जी, नकली नाम है। कश्मीर टाइगर्स के आतंकी पाकिस्तान में भर्ती होते हैं, वहीं ट्रेनिंग लेते हैं और दिवालिया पाकिस्तान ही उन्हें पैसा देता है। सवाल है कि ऐसे संगठन को जम्मू-कश्मीर की सरजमीं पर ही चित्त क्यों नहीं किया जा सकता? इन आतंकियों के जो मददगार स्थानीय जयचंद हैं, उन्हें भी ढेर क्यों नहीं किया जा सकता? क्या भारत सरकार ने सैनिकों के हाथ बांध रखे हैं? 2021 से अब तक सेना और पुलिस के 52 जवान आतंकी हमलों में जान गंवा चुके हैं। इस पर संतोष किया जा सकता है कि 54 आतंकी भी ढेर किए गए हैं। इस पर क्या कहेंगे कि 70 से अधिक नागरिक भी मारे गए हैं। कश्मीर घाटी का ज्यादातर हिस्सा पाकिस्तान वाली नियंत्रण-रेखा से लगता है, लेकिन डोडा तो नियंत्रण-रेखा के करीब भी नहीं है, फिर वहां तक आतंकियों ने घुसपैठ कैसे की? जम्मू-कश्मीर में बहुत जल्द विधानसभा चुनाव होने हैं। कश्मीरी अपनी सरकार और प्रतिनिधि चुन सकेंगे। लोकतांत्रिक प्रक्रिया बहाल होगी। उसके मद्देनजर आतंकवाद बढ़ा है। उसे कुचला जा सकता है। पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने जो बयान दिया है और डीजीपी आरआर स्वैन को बर्खास्त करने की मांग की है, वह उनकी कुंठा है, क्योंकि वह पाकपरस्त रही हैं।

सबसे बड़ा पाप गद्दारी

शकील अख़्तर

शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद ने बहुत बड़ी बात कह दी। सब धमार्चार्यों को इस तरह सच बोलने का साहस दिखाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिदू धर्म में पाप पुण्य का कॉन्सेप्ट है। और इसमें सबसे बड़ा पाप विश्वासघात है। बहुत सही बात। सभी धर्मों में अलग अलग शब्दों में यही कहा गया है। अहसान फरामोशी, अमानत में खयानत इस्लाम में बहुत बुरा माना गया है। शेक्सपियर का यह वाक्य तो दुनिया में सबसे ज्यादा दोहराया जाने वाला है यू टू ब्रूटस! तुम भी! ईसाइयों में ईसा मसीह को धोखा देने वाले यहूदा को कभी माफ नहीं किया। पूरा मानव इतिहास भरा पड़ा है इस एक बुराई पाप की निंदा में। सेना में सुरक्षा बलों में सबसे ज्यादा गंभीर अपराध डबल क्रॉस को माना जाता है। दोनों तरफ के अधिकारी इसे कभी माफ नहीं करते हैं। अगर आप चाहें तो एक सच्ची घटना सुनाएं। जम्मू कश्मीर के कुछ पत्रकार दोस्तों को मालूम है। मिलिटेंसी में पत्रकारों की भी मशरूम ग्रोथ होती है। अखबारों को जरूरत होती है तो वह किसी भी स्थानीय आदमी को रख लेते हैं। जरूरी नहीं कि उन्हें लिखना पढा भी आता हो। एक नाम बाईलाइन में डालकर वे यह बताते थे कि हमारा संवाददाता भी फील्ड में है। उसे पहचान पत्र दे देते थे। और वह सब जगह घूमना शुरू कर देता था। कुछ खबर बताना हो तो फोन पर बोलकर बता देता था। तो ऐसे तमाम लोग आतंकवाद ग्रस्त क्षेत्रों में पत्रकार बन जाते थे। पंजाब में बने। जम्मू कश्मीर में। ज्यादातर तो अखबार में नाम छपने और अधिकारियों से संपर्क बनाने में खुश रहते थे। मगर सुरक्षा एजेंसियां इन पर कड़ी नजर रखती थीं। इनसे सूचना लेने का काम भी करती थीं। लेकिन जैसा विश्वास वे प्रोफेशनल पत्रकारों पर करती थीं वैसा नहीं। तो हां हम आपको जो बात बता रहे थे वह यह कि ऐसे ही एक बड़े हिंदी अखबार के संवाददाता पर एक सुरक्षा बल को संदेह था। एक बार ज्यादा नाराज हो गए। सीमावर्ती इलाके का टूर था। सेना और अन्य सुरक्षा बल करवाते रहते थे। नियत्रंण रेखा पर थोड़ा सा पाकिस्तान के कब्जे वाले इलाके में भी घुमा लाते थे। उस दिन केवल एक पत्रकार को उस तरफ ले जा रहे थे। सुरक्षा बल के सभी बड़े अधिकारी उन दिनों दोस्त थे। काम की कद्र करते थे। तो थोड़ा अजीब लगा। उनसे पूछा। तो जो जवाब मिला वह दिल दहला देने वाला था। उन्हें उसके डबल एजेंट होने पर कुछ सबूत मिले थे। यह तो हम सहित दूसरे कुछ पत्रकारों को मालूम था कि उस पर निगाह है। और सुरक्षा बल उससे कुछ काम भी करवाते हैं। उसके उधर होने पर भी कुछ लोगों को संदेह था। जम्मू का स्थानीय निवासी था। पहले कभी पत्रकार नहीं रहा था। सीधा उस अखबार ने आई कार्ड दे दिया था। उस दिन अफसर उसे उस तरफ ले जाकर कुछ करना चाह रहे थे। वहां अपने काउंटर पार्ट से भी उनकी कोई बात हुई थी। और शायद वे भी डबल क्रॉस को जान गए थे। आप जिस टूर पर हों और वहां कुछ हो जाए। बहुत ही शॉक पहुंचाने वाली बात होती है। बड़ी मुश्किल से अपने अफसरों को समझाया। उन्होंने माफ किया। बड़ी बात थी। नहीं तो उनका कहना था कि एक बार हम उस तरफ से गोली चलाने वाले को छोड़ दें मगर डबल क्रॉस करने वाले को कभी नहीं। और हम ही नहीं वह भी नहीं। यहां बात को समझने के लिए यह बता दें कि सीमा पर दोनों देशों के सुरक्षा बल भी कुछ कुछ मामलों में जैसे डबल क्रॉस, स्मगलिंग पर सूचनाओं का आदान प्रदान करते रहते हैं। तो सेना सुरक्षा बल से लेकर हर धर्म, मानवता सब जगह अंग्रेजी में बिट्रे, हिंदी में विश्वासघात उर्दू में गद्दारी बहुत बुरी बात नाकाबिले माफी मानी जाती है। शंकराचार्य ने इस पाप को महापाप बताकर धर्म और इतिहास की कई यादें दिला दी हैं। विभीषण राम का साथ देने के बावजूद आज भी खलनायक ही हैं। धमार्चार्यों का काम ही यह होता है कि वे आम धारणाओं, सामान्य सिद्धांतों से उपर उठकर नई स्थापना दें। अविमुक्तेश्वरानंद इससे पहले भी बहुत बड़ी बात कह चुके हैं। जब उनसे एक प्रमुख एजेंसी के पत्रकार ने झूठ बोलता हुआ सवाल पूछा कि राहुल गांधी ने यह कहा है। शंकराचार्य जी ने कहा कि कौआ कान ले गया सुनकर पहले अपना कान देखो। कौए के पीछे मत भागो। हमने पूरा वीडियो मंगाकर देखा। राहुल ने वह बात कहीं कही नहीं है जो तुम कह रहे हो। राहुल गांधी ने कहीं हिंदू को हिसंक नहीं कहा। राहुल उन लोगों को कह रहे हैं जो नफरत फैलाते हैं। और राहुल ने नाम लेकर लोकसभा में साफ कहा कि बीजेपी आरएसएस और मोदी सरकार नफरत और हिंसा फैलाते हैं। शंकराचार्य ने सारे झूठ का पदार्फाश कर दिया। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सिख सबके धमार्चार्यों को इसी तरह सच बोलने से परहेज नहीं करना चाहिए। कभी कभी अप्रिय सत्य भी होता है। मगर बाद में उस धर्म के मानने वालों के लिए लाभदायक होता है। लेकिन लोग शंकराचार्य की बात को धर्म से ज्यादा राजनीति से जोड़कर देख रहे हैं। लेकिन यह राजनीति की बात नहीं है। मानवीय मूल्यों की है धर्म के उच्च सिद्धांतों की है। उद्धव ठाकरे ने अच्छी भली चल रही उनकी सरकार को गिराए जाने वाले लोगों के लिए खुद धोखेबाज शब्द का इस्तेमाल किया था। राजनीति में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं जब किसी धोखा खाए आदमी ने इतने संयम और गरिमा से अपनी बात कही हो। जिन एकनाथ शिंदे और दूसरे लोगों को शिवसेना ने बनाया हो उनके इतने बड़े विश्वासघात के बावजूद उन्होंने किसी के लिए कठोर शब्द नहीं कहे।

अरविंद केजरीवाल को उच्चतम न्यायालय से मिली जमानत के निहितार्थ

अरविन्द केजरीवाल को जमानत मिलने के बाद आम आदमी पार्टी ने इसे भारतीय जनता पार्टी की साजिश का पदार्फाश बताया है। यहां एक सवाल यह उठ रहा है कि क्या न्याय व्यवस्था में जमानत मिलना विजय का पर्याय है, क्योंकि आम आदमी पार्टी इसे अपनी विजय और सरकारी एजेंसी की साजिश करार दे रही है। उल्लेखनीय है कि जमानत मिलने के बाद भी आरोप समाप्त नहीं हो जाता। प्रकरण चलता रहता है। अभी शराब घोटाले में न्यायालय का निर्णय नहीं आया है, लेकिन आम आदमी पार्टी की राजनीति इसे निर्णय मानकर चल रही है। आम आदमी पार्टी का यह कदम वास्तव में न्यायिक प्रक्रिया पर सवाल खड़े करने जैसा ही माना जाएगा। आम आदमी पार्टी की ओर से प्रारम्भ से ही यह बताने की कवायद की जा रही है कि शराब मामले में कोई घोटाला हुआ ही नहीं है। उनका तर्क है कि अगर घोटाला हुआ है तो उस घोटाले की राशि भी जब्त की जानी चाहिए, जबकि प्रवर्तन निदेशालय का कहना है कि इससे जो राशि प्राप्त हुई उसे गोवा के चुनाव में व्यय किया गया। दोनों में कौन सच बोल रहा है और कौन झूंठ, यह आने वाला समय ही बता पाएगा। लेकिन इसी मामले में आम आदमी पार्टी के अन्य नेता भी आरोपी हैं, उन्हें अभी तक जमानत नहीं मिल सकी है। इसलिए यह नहीं माना जा सकता कि घोटाला हुआ ही नहीं। हो सकता है कि यह घोटाला बहुत चतुराई के साथ किया हो, क्योंकि प्रमाण पर्याप्त नहीं हैं। केजरीवाल को जमानत दिए जाने पर आम आदमी पार्टी भले ही खुशियाँ मना ले, लेकिन यह सत्य है कि न्यायालय ने उनके मुख्यमंत्री के अधिकार सीमित कर दिए हैं।

सुरेश हिंदुस्तानी
लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

देश की राजधानी दिल्ली में शराब घोटाले को लेकर चल रही राजनीति ने अब एक नया मोड़ ले लिया है। इस मामले में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल को सर्वोच्च न्यायालय ने अंतरिम जमानत देकर जांच एजेंसी पर उठे संदेह के घेरे को और बड़ा कर दिया है। अरविन्द केजरीवाल को जमानत मिलने के बाद आम आदमी पार्टी ने इसे भारतीय जनता पार्टी की साजिश का पदार्फाश बताया है। यहां एक सवाल यह उठ रहा है कि क्या न्याय व्यवस्था में जमानत मिलना विजय का पर्याय है, क्योंकि आम आदमी पार्टी इसे अपनी विजय और सरकारी एजेंसी की साजिश करार दे रही है। उल्लेखनीय है कि जमानत मिलने के बाद भी आरोप समाप्त नहीं हो जाता। प्रकरण चलता रहता है। अभी शराब घोटाले में न्यायालय का निर्णय नहीं आया है, लेकिन आम आदमी पार्टी की राजनीति इसे निर्णय मानकर चल रही है। आम आदमी पार्टी का यह कदम वास्तव में न्यायिक प्रक्रिया पर सवाल खड़े करने जैसा ही माना जाएगा। आम आदमी पार्टी की ओर से प्रारम्भ से ही यह बताने की कवायद की जा रही है कि शराब मामले में कोई घोटाला हुआ ही नहीं है। उनका तर्क है कि अगर घोटाला हुआ है तो उस घोटाले की राशि भी जब्त की जानी चाहिए, जबकि प्रवर्तन निदेशालय का कहना है कि इससे जो राशि प्राप्त हुई उसे गोवा के चुनाव में व्यय किया गया। दोनों में कौन सच बोल रहा है और कौन झूंठ, यह आने वाला समय ही बता पाएगा। लेकिन इसी मामले में आम आदमी पार्टी के अन्य नेता भी आरोपी हैं, उन्हें अभी तक जमानत नहीं मिल सकी है। इसलिए यह नहीं माना जा सकता कि घोटाला हुआ ही नहीं। हो सकता है कि यह घोटाला बहुत चतुराई के साथ किया हो, क्योंकि प्रमाण पर्याप्त नहीं हैं। केजरीवाल को जमानत दिए जाने पर आम आदमी पार्टी भले ही खुशियाँ मना ले, लेकिन यह सत्य है कि न्यायालय ने उनके मुख्यमंत्री के अधिकार सीमित कर दिए हैं। उनको न तो मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने का अधिकार है और न ही किसी दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर सकते हैं।

किसी भी घोटाले की जांच के लिए जांच एजेंसी कार्य करती हैं। लेकिन शराब घोटाले के मामले में जांच एजेंसी पर संदेह के बादल भी उमड़ रहे हैं। हो सकता है कि जांच एजेंसियां अपनी भूमिका को लेकर एकदम सही हो, लेकिन आम आदमी पार्टी के नेता अरविन्द केजरीवाल की गिरफ़्तारी के बाद जांच एजेंसी को विलेन के रूप में प्रचारित करने का अभियान सा चलता दिखाई दिया। यह कोई पहली बार नहीं हो रहा है। जांच एजेंसियों पर पहले भी सत्ता के इशारे पर कार्य करने के गंभीर आरोप लगते रहे हैं। ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि जांच एजेंसियां केंद्र सरकार के अधीन कार्य करती हैं, लेकिन जांच एजेंसियों पर यह आरोप लगाना न्याय संगत नहीं कहा जा सकता कि केंद्र सरकार के इशारे पर कार्य कर रही हैं। दूसरी बड़ी बात यह है कि आम आदमी पार्टी अपने नेता अरविन्द केजरीवाल की गिरफ़्तारी की साजिश करने में जांच एजेंसी से अधिक भाजपा को निशाने पर लेने की राजनीति कर रही है। ऐसा नहीं है कि केवल आम आदमी पार्टी ही राजनीति कर रही है, बल्कि भाजपा भी कम नहीं है, वह भी इस मामले में बयान देने से पीछे नहीं है।

जहाँ तक भाजपा की बात है तो वह केंद्र में सत्ता संभालने के बाद पहले ही कह चुकी है कि न खाऊँगा और न खाने दूंगा। इस बात को ध्यान में रखकर यही कहा जा सकता है कि भाजपा की केंद्र सरकार भ्रष्टाचार के विरोध में कार्यवाही करना चाहती है, लेकिन विपक्ष के राजनीतिक दल इसमें टांग अड़ाने की राजनीति कर रहे हैं। इसका एक कारण यह भी माना जा रहा है कि विपक्ष के अधिकांश बड़े नेता किसी न किसी आरोप में जमानत पर बाहर हैं। कई नेताओं पर गंभीर आरोप हैं और कई जेल में हैं। इसलिए विपक्ष और खास कर आम आदमी पार्टी के कदम को सरकार पर दबाव बनाने की राजनीति के रूप में भी देखा जा रहा है। हम जानते ही हैं कि बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भ्रष्टाचार के मामले में सजायाफ्ता हैं। लेकिन इसके बाद भी वे बिहार और देश की सक्रिय राजनीति में दखल दे रहे हैं। आज हालांकि लालू प्रसाद यादव चुनाव नहीं लड़ सकते, क्योंकि सजा प्राप्त कोई भी व्यक्ति चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य हो जाता है। सवाल यह है कि क्या ऐसा व्यक्ति राजनीति कर सकता है। नहीं करना चाहिए, लेकिन लालू ऐसा कर रहे हैं। लालू प्रसाद यादव ने केवल राजनीति ही नहीं की, बल्कि विपक्ष के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर खड़े दिखाई दिए। इस प्रकार की राजनीति करना किसी भी दल के लिए भी ठीक नहीं और देश के लिए भी ठीक नहीं मानी जा सकती। भ्रष्टाचार किसी भी स्तर का हो, जिसने भी किया है, उसके विरोध में कार्यवाही होना ही चाहिए। आम आदमी पार्टी भी यही कहकर दिल्ली की सत्ता पर विराजमान हुई थी। जो अब अपने सिद्धांत से परे जाती हुई दिखाई दे रही है।

हम जानते हैं कि आम आदमी पार्टी के नेताओं ने राजनीति प्रारम्भ करने से पूर्व अन्ना हजारे के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान में सक्रिय भूमिका निभाई थी। उस समय कांग्रेस की केंद्र सरकार के भ्रष्टाचार के कारण पूरा देश उबाल में था। इसी कारण अन्ना हजारे के आंदोलन को व्यापक रूप से सफलता मिली। इसके बाद एक ईमानदार राजनीतिक दल के रूप में आम आदमी पार्टी की स्थापना की गई।

भारतीय परम्पराओं के अनुपालन से देश बढ़ रहा आगे

भारत का सनातन चिंतन जितना अधिक शक्तिशाली था गुलामी के उस दौर में उस पर किए गए आक्रमण उसे कमजोर बनाने में कामयाब रहे। परंतु, अब समय आ गया है कि भारत के प्राचीन आर्थिक चिंतन को गंभीरता के साथ देखते हुए वर्तमान आर्थिक विकास की दृष्टि को उसके साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए तभी जाकर आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत के वैभवकाल को पुन: प्राप्त किया जा सकेगा। भारत में प्राचीन ऋषियों और मनीषियों की परंपरा एक गृहस्थ परंपरा रही है और उस गृहस्थ परंपरा में आध्यात्म के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक चिंतन भी जुड़ा रहा है। अपने राज्य के ऋषियों के जीवन यापन की चिंता जहां राजा की प्राथमिकता में रहता था वहीं राजा को राज्य चलाने के लिए उचित मार्गदर्शन देने का सांस्कृतिक कार्य उन ऋषि-मुनियों द्वारा किया जाता था। इसलिए उन मनीषियों का चिंतन आर्थिक दिशा में भी सदैव बना रहता था। राजा अपने राज्य का विस्तार करने के साथ-साथ उसे आर्थिक रूप से और अधिक समृद्ध कैसे बनाएं इसके बारे में ऋषि-मुनियों के साथ बैठकर ही राज दरबार में चिंतन होता था और राज्य आर्थिक रूप से सशक्त बन जाते थे। इसलिए भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। प्राचीन भारत में धार्मिक आयोजनों एवं धार्मिक पर्यटन का भारत के आर्थिक विकास पर पूर्ण प्रभाव रहा है। प्राचीन भारत में धार्मिक आयोजनों से अर्थव्यवस्था को बल मिलता रहा है इसलिए उस कालखंड में धार्मिक आयोजन निरंतर होते रहे हैं। भारत की ऋषि परंपरा ने जन सामान्य को उन सबके साथ जोड़ कर रखा था। त्यौहारों की निरंतरता और उन्हें मनाए जाने का उत्साह भारत की तत्कालीन अर्थव्यवस्था को गति देता रहा है।

प्रहलाद सबनानी
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

भारत जो किसी वक्त में सोने की चिड़िया रहा है जिसका किसी वक्त में वैश्विक अर्थव्यवस्था मंप बहुत बड़ा योगदान रहा है, उस भारत के गुलाम होने के बाद उसकी अर्थव्यवस्था को मुगलों ने एवं अंग्रेजों ने तहस-नहस किया है। भारत का सनातन चिंतन जितना अधिक शक्तिशाली था गुलामी के उस दौर में उस पर किए गए आक्रमण उसे कमजोर बनाने में कामयाब रहे। परंतु, अब समय आ गया है कि भारत के प्राचीन आर्थिक चिंतन को गंभीरता के साथ देखते हुए वर्तमान आर्थिक विकास की दृष्टि को उसके साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए तभी जाकर आर्थिक विकास की दृष्टि से भारत के वैभवकाल को पुनः प्राप्त किया जा सकेगा।

भारत में प्राचीन ऋषियों और मनीषियों की परंपरा एक गृहस्थ परंपरा रही है और उस गृहस्थ परंपरा में आध्यात्म के साथ-साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक चिंतन भी जुड़ा रहा है। अपने राज्य के ऋषियों के जीवन यापन की चिंता जहां राजा की प्राथमिकता में रहता था वहीं राजा को राज्य चलाने के लिए उचित मार्गदर्शन देने का सांस्कृतिक कार्य उन ऋषि-मुनियों द्वारा किया जाता था। इसलिए उन मनीषियों का चिंतन आर्थिक दिशा में भी सदैव बना रहता था। राजा अपने राज्य का विस्तार करने के साथ-साथ उसे आर्थिक रूप से और अधिक समृद्ध कैसे बनाएं इसके बारे में ऋषि-मुनियों के साथ बैठकर ही राज दरबार में चिंतन होता था और राज्य आर्थिक रूप से सशक्त बन जाते थे। इसलिए भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। प्राचीन भारत में धार्मिक आयोजनों एवं धार्मिक पर्यटन का भारत के आर्थिक विकास पर पूर्ण प्रभाव रहा है। प्राचीन भारत में धार्मिक आयोजनों से अर्थव्यवस्था को बल मिलता रहा है इसलिए उस कालखंड में धार्मिक आयोजन निरंतर होते रहे हैं। भारत की ऋषि परंपरा ने जन सामान्य को उन सबके साथ जोड़ कर रखा था। त्यौहारों की निरंतरता और उन्हें मनाए जाने का उत्साह भारत की तत्कालीन अर्थव्यवस्था को गति देता रहा है। आज के वक्त में भी धार्मिक पर्यटन के चलते भारतीय पर्यटन उद्योग में रोजगार के नए अवसर निर्मित हो रहे हैं। वर्तमान केंद्र सरकार के द्वारा भी पिछले 10 वर्षों में भारत में विभिन्न तीर्थस्थलों को विकसित किया जा रहा है। अभी तक जो तीर्थस्थल विकसित हो चुके हैं, वहां का पर्यटन एकदम से कई गुना बढ़ गया है। वहां की आर्थिक समृद्धि बढ़ गई है। वहां के लोगों का जीवन स्तर बढ़ गया है। वहां संपत्तियों के दाम बढ़ गए हैं। इसलिए इस दिशा में सरकार अब आगे और कार्य करने जा रही है तथा कई नवीन धार्मिक कारीडोर बनाने जा रही है, क्योंकि इससे रोजगार के लाखों नए अवसर उत्पन्न होंगे।

भारत की कुटुंब व्यवस्था अपने आप में एक अनूठी कुटुंब व्यवस्था है। भारत के संयुक्त परिवार विश्व के लिए आश्चर्य का विषय रहे हैं। इन दिनों संयुक्त परिवार विघटित अवश्य होते जा रहे हैं, लेकिन बावजूद उसके आपातकाल में एक दूसरे के लिए सबके एकत्र होने की जो जिजीविषा उन सबके भीतर है वह भारत में कुटुंब व्यवस्था का अनूठा स्वरूप है, तथा यह स्वरूप देश की अर्थव्यवस्था को भी आगे बढ़ाने का काम करता है। एक परिवार में दो हाथ कमाने जाते हों और वहीं दस हाथ कमाने जाते हों, दोनों बातों का फर्क होता है। इसलिए कुटुंब व्यवस्था में एक दूसरे के लिए आपस में खड़े होने का जो व्यवहार होता है, वह व्यवहार आर्थिक चिंतन के साथ भी जुड़ कर परिवार को आगे बढ़ाने का काम करता है।

भारत में प्राचीन काल से पर्यावरण को पर्याप्त महत्व दिया जाता रहा है। देश में नदियां शुद्ध रहती थी वृक्ष घने जंगलों के रूप में रहते थे और पूरा पर्यावरण शुद्ध रहता था। पूरे विश्व में भारत एकमात्र ऐसा देश है जहां पर नदियों को, वृक्षों को, धरती को पूजा जाता है। पूरे पर्यावरण से परिवार का जुड़ाव धार्मिक रूप से रहता है। बहुत सारे व्रत और त्यौहार पर्यावरण से जुड़े हुए रहते हैं। इसलिए सनातन काल से भारत में पर्यावरण की चिंता रही है। जैविक विविधता ने भी भारत के सनातन काल को समृद्ध किया। पर्यावरण संरक्षण को उस समय में नैतिक कर्तव्य माना गया है। बाद में जब मुगलों ने भारत में शासन किया और हिंदुओं का धर्मांतरण किया तो बहुत सारी परंपराएं भी खंडित होने लगी। सनातन काल में जिस गौ माता को पूजा जाता था मुस्लिम उस गौ माता को खाने लगे। मुस्लिम शासन काल भारत के पतन और विखंडन का समय था। उनके बाद जब इस देश में अंग्रेज आ गए तो उनकी निगाह में भारतीय अपरिपक्व और मूर्ख रहे इन दोनों के समय में, मुगलों ने और अंग्रेजों न भारत को दोनों हाथों से लूटकर खाली कर दिया। जो भारतीय अर्थव्यवस्था कभी विश्व की अर्थव्यवस्था का 33 प्रतिशत हिस्सा थी वह बहुत नीचे जा चुकी थी। पर्यावरण बिखरने लगा। नालंदा जैसे विश्वविद्यालय को नुकसान पहुंचाया गया। उसकी लाइब्रेरी को जला दिया गया। इस सब के पीछे भारत को ज्ञान के स्तर पर समाप्त करने की साजिश काम कर रही थी। मुस्लिम शासक हिंदुओं के धर्मांतरण पर, हिंदुओं को मारने पर और उनकी संपत्ति हड़पने पर काम कर रहे थे। ऐसा कहा जाता है कि औरंगजेब ब्राह्मणों को मारकर रोज सवा मन जनेऊ जलाता था। मंदिरों को नष्ट कर उन पर मस्जिदें बना दी गई। दक्षिण ने अपने आपको इस मुस्लिम आक्रमण से बहुत बचाया और इसीलिए भारत के दक्षिण भाग में आज भी समृद्ध मंदिर हैं, जो उस कालखंड के गौरव की प्रस्तुति के रूप में हमारे सामने खड़े हुए हैं। इसी कालखंड में भारत का भक्ति काल जरूर समृद्ध हुआ और उसने भारत के निवासियों को मानसिक ताकत प्रदान की। तुलसीदास की भक्ति के सामने अकबर जैसा आदमी डर गया और झुक गया।

भारत की आजादी की लड़ाई तो सफलतापूर्वक लड़ी गई परंतु एक दुष्परिणाम भारत विभाजन के रूप में भी सामने आया, जिसमे लाखों हिंदुओं का नरसंहार हुआ। आजादी के 70 वर्ष में भारत की वह आर्थिक उन्नति नहीं हो पाई जैसी कि अपेक्षा की गई थी। वर्ष 2014 में केंद्र में एक मजबूत सरकार ने शासन को संभाला। कठोर आर्थिक निर्णय लिए। जनता का भी उन्हें साथ मिला तथा लगभग 10 वर्ष के कार्यकाल में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हो गई। वर्तमान सरकार के समक्ष बहुत बड़ी बड़ी चुनौतियां हैं और आज भारत, बहुत सी विदेशी ताकतों एवं उनके षड्यंत्रों के साथ जूझ रहा है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि जो संकल्प लेकर भारतीय परम्पराओं के अनुरूप सरकार काम कर रही है, उसमें भारत की अर्थव्यवस्था शीघ्र ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगी। यह इस अर्थव्यवस्था की ताकत है कि कोरोना खंडकाल में भारत ने अपने 80 करोड़ गरीब लोगों को निशुल्क अन्न उपलब्ध कराया तथा कोरोना की वैक्सीन भी समस्त नागरिकों को निशुल्क उपलब्ध कराई गई। भारत अब न सिर्फ सड़क निर्माण के क्षेत्र में बड़ा काम कर रहा है

चुनाव : क्या यह हिंदुत्ववादी राजनीति के दौर का अन्त है?

प्रो प्रदीप माथुर

जो लोग हिंदुत्व और हिन्दू धर्म में क्या अंतर है यह नहीं जानते उनके लिए पहले दोनों शब्दों का अर्थ समझना बहुत आवश्यक है। भारत की बहुसंख्या जनता का सनातन धर्म जिसे हम हिन्दू धर्म कहते है मानवता के समस्त मूल्यों और जीवन के उच्च आदर्शो को अपने में समाहित करता है। वैचारिकता, बौद्धिकता और आध्यात्मिक चिंतन उसके अभिन्न अंग है। वह मानव मात्र को समान मानता है और वसुधैव कुटुम्ब यानि विश्व एक परिवार समान है उसका उदारवादी, सहिष्णु और सर्वग्राहों चरित्र परिभाषित करता है।

इसके ठीक विपरीत हिंदुत्व एक अबौद्धिक, अतार्किक और पूर्वग्राही मानसिकता का प्रतीक है। वह सनातम धर्म का सकीर्ण साम्प्रदायिक रूढ़िवादी और क्रूर रूप से आक्रमक एक विकृत स्वरूप है। वास्तव में हिंदुत्ववादी मनोवृत्ति सनातन हिन्दू धर्म का उसी तरह हानि पहुंचा रही है जैसे तालिबानी विचारधारा इस्लाम धर्म की छवि गिरा कर उसका नुकसान कर रही है।

एक राजनीतिक रणनीति के रूप में हिंदुत्ववादी विचारधारा को अपनाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भाजपा आज भारत में राज्य सत्ता के शीर्ष पर है। 2024 के चुनावों से पहले बड़ा सवाल यह था कि क्या हिंदुत्व मोदी को अगला कार्यकाल दिलाने में मदद करेगा? यह सवाल दो कारणों से महत्वपूर्ण था। पहला, मोदी, अमित शाह और गुजरात लॉबी के उनके साथियों के हाथों में हिंदुत्व जादू की छड़ी की तरह काम कर रहा था। दूसरा यह कि गुजरात लॉबी देश की आर्थिक प्रगति और मोदी सरकार के कार्यकाल में बढ़ी भारत की अंतरराष्ट्रीय छवि के बारे में जो भी दावे करती रही हो, हर कोई जानता था कि भाजपा अंततः चुनाव जीतने के लिए सांप्रदायिक प्रचार पर निर्भर करेगी, जैसा कि उसने कर्नाटक और अन्य राज्यों के विधानसभा चुनावों में किया था। इसमें कोई संदेह नहीं कि चुनाव जीतने के लिए हिंदुत्व पार्टी का सबसे विश्वसनीय और घातक हथियार रहा है।

इसलिए, हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा चुनावों के नतीजों का आकलन करते समय, यह जानना स्वाभाविक है कि क्या हिंदुत्व अभी भी एक सफल रणनीति है या इसने जनता के बीच अपनी अपील खो दी है। यह सवाल इसलिए और भी प्रासंगिक है क्योंकि अयोध्या और उसके आसपास भाजपा की करारी हार हुई है और हिंदुत्व के केंद्र वाराणसी में मोदी के लिए विजय का अंतर काफी कम हो गया है। फिर प्रधानमंत्री को निकट सहयोगी स्मृति इरानी तो चुनाव हार ही गयी। लगभग 26 विपक्षी दलों के इंडिया नाम के संयुक्त मोर्चे में शामिल होने के बाद, मोदी की बीजेपी के लिए चुनौती पिछले दो लोकसभा चुनावों की तुलना में कहीं ज्यादा कठिन थी। मोदी को यह पता था, लेकिन फिर भी उनका मानना था कि, बहुसंख्यक हिंदुओं को उनकी आस्था के आधार पर भावनात्मक कार्ड खेलकर आसानी से बहकाया जा सकता है। लगभग सभी राजनीतिक पर्यवेक्षकों और विश्लेषकों का मानना था, और यह सही भी था कि बीजेपी नेतृत्व 2024 के चुनावों में भी जीत हासिल करने के लिए एक नया

सांप्रदायिक कार्ड लेकर आएगा। और बीजेपी ने यही किया था।

पर राम मंदिर का उद्घाटन, जो भाजपा की चुनावी मदद के लिए सही समय से पहले किया गया था, काम नहीं आया। मतदाताओं द्वारा राम मंदिर उद्घाटन को अस्वीकार किए जाने से हैरान मोदी और वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने चुनाव प्रचार के दौरान कई अन्य सांप्रदायिक कार्ड खेले और चुनाव आयोग मुह फेर कर बैठा रहा।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
पटना, शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024

बाल विवाह को कानूनी हस्तक्षेप से नियंत्रण किया जा सकता हैं

प्रयास जुवेनाइल एड सेन्टर पूर्वी चम्पारण ने कहा, कानूनी कार्रवाई बाल विवाह के खात्मे की कुंजी हैं

- 2023-24. में एक वर्ष के दौरान कुल 50 बाल विवाह रुकवाए
- मौजूदा दर के हिसाब से बाल विवाह के लंबित मामलों के निपटारे में भारत को लग सकते हैं 19 साल

प्रात: किरण, संवाददाता

रक्सौल। भारत में बाल विवाह के खात्मे में कानूनी कार्रवाइयों और अभियोजन की अहम भूमिका को उजागर करने वाली एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए, बिहार के पूर्वी चम्पारण जिला के गैरसरकारी संगठन प्रयास जुवेनाइल एड सेन्टर ने कहा है कि कानूनी कार्रवाइयां और कानूनी हस्तक्षेप 2030 तक बाल विवाह के खात्मे के लक्ष्य को हासिल करने की कुंजी हैं और उसने एक वर्ष के दौरान पूर्वी चम्पारण में कुल 50 बाल विवाह रुकवाए हैं। ह्वाटूवाड्र्स जस्टिस : इंडिंग चाइल्ड मैरेजह्न शीर्षक से जारी यह रिपोर्ट इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन की शोध टीम ने तैयार की है। प्रयास जुवेनाइल एड सेन्टर और चाइल्ड प्रोटेक्शन फंड 2030 तक देश से बाल विवाह के खात्मे के लिए काम कर रहे बाल विवाह मुक्त भारत के सहयोगी संगठन के तौर पर साथ हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे-5 के अनुसार पूर्वी चम्पारण में बाल विवाह की दर अभी भी 41% प्रतिशत में थी, जबकि राष्ट्रीय औसत 23.3 है। संगठन ने सरकार से अपील की कि वह अपराधियों को सजा सुनिश्चित करे ताकि बाल विवाह के खिलाफ लोगों में कानून का भय पैदा हो सके। आईसीपी की रिपोर्ट टुवाड्र्स जस्टिस : इंडिंग चाइल्ड मैरेज बाल विवाह के खात्मे के लिए न्यायिक तंत्र द्वारा पूरे देश में फौरी कदम उठाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। रिपोर्ट के अनुसार 2022 में देश भर में बाल विवाह के कुल 3,563 मामले दर्ज हुए, जिसमें सिर्फ 181 मामलों का सफलतापूर्वक निपटारा हुआ। यानी लंबित मामलों की दर 92 प्रतिशत है। मौजूदा दर के हिसाब से इन 3,365 मामलों के निपटारे में 19 साल का समय लगेगा। बाल विवाह की रोकथाम के लिए असम सरकार की कानूनी कार्रवाई पर जोर देने की रणनीति के शानदार नतीजे मिले हैं और इस मॉडल की सफलता को देखते हुए इसे पूरे देश में आजमाया जा सकता है। रिपोर्ट के अनुसार 2021-22 से 2023-24 के बीच असम के 20 जिलों में बाल विवाह के मामलों में 81 प्रतिशत की कमी आई है, जो बाल विवाह के खात्मे में कानूनी कार्रवाई की अहम भूमिका का सबूत है। इस अध्ययन में राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो और असम के 20 जिलों के 1,132 गांवों से आंकड़े जुटाए गए, जहां कुल आबादी 21 लाख है, जिनमें 8 लाख बच्चे हैं। नतीजे बताते हैं कि बाल विवाह के खिलाफ जारी असम सरकार के अभियान के नतीजे में राज्य के 30 प्रतिशत गांवों में बाल विवाह पर पूरी तरह रोक लग चुकी है, जबकि 40 प्रतिशत उन गांवों में इसमें उल्लेखनीय कमी देखने को मिली जहां कभी बड़े पैमाने पर बाल विवाह का चलन था। रिपोर्ट के तथ्यों और आंकड़ों का हवाला देते हुए संगठन ने कहा कि बाल विवाह के मामलों में सरकार की मदद से कानूनी हस्तक्षेप यहां भी काफी प्रभावी साबित हुआ है। प्रयास जुवेनाइल एड सेन्टर की जिला परियोजना समन्वयक आरती कुमारी ने कहा, इंडिया चाइल्ड प्रोटेक्शन की यह रिपोर्ट साफ तौर से कानूनी कार्रवाई और अभियोजन कि अहमियत को रेखांकित करती है। हम लोगों में बाल विवाह के खिलाफ जागरूकता के प्रसार के साथ यह सुनिश्चित करने के अथक प्रयास कर रहे हैं कि परिवारों और समुदायों को समझाया जा सके कि बाल विवाह अपराध है। साथ ही जहां बाल विवाहों को रुकवाने के लिए समझाने बुझाने का असर नहीं होता, वहां हम कानूनी हस्तक्षेप का भी इस्तेमाल करते हैं। कानून पर अमल बाल विवाह के खात्मे की कुंजी है और हम सभी को साथ मिलकर इस पर अमल सुनिश्चित करने की जरूरत है। आईसीपी, बाल विवाह मुक्त भारत का गठबंधन सहयोगी है जिसने 2022 में राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरूआत की और इसके 200 सहयोगी संगठन भुवन ऋभु की बेस्टसेलर किताब व्हेन चिल्ड्रेन हैव चिल्ड्रेन : टिपिंग प्वाइंट टू इंड चाइल्ड मैरेज में सुझाई गई कार्ययोजना पर अमल करते हुए पूरे देश में काम कर रहे हैं। सीएमएफआई अपने कामकाज में मुख्य रूप से कानूनी हस्तक्षेपों और परिवारों एवं समुदायों को बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में समझाने बुझाने के उपायों का इस्तेमाल करता है। सीएमएफआई के सहयोगी संगठनों ने कानूनी हस्तक्षेपों की मदद से 2023-24 में 14,137 और पंचायतों की मदद से 59,364 बाल विवाह रुकवाए। बाल विवाह की रोकथाम के लिए असम सरकार की कानूनी रणनीति के राज्य में कारगर नतीजों की चर्चा करते हुए बाल विवाह मुक्त भारत के संयोजक रवि कांत ने कहा, इस रिपोर्ट से यह साबित होता है कि बाल विवाह के खात्मे में कानूनी कार्रवाइयों की सबसे निर्णायक भूमिका है और असम मॉडल सही दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। अब हमें इसे आगे ले जाते हुए इसे पूरे देश में लागू करने की जरूरत है ताकि बच्चों के खिलाफ अपराधों का अंत किया जा सके।

रिपोर्ट के तथ्यों और आंकड़ों की चर्चा करते हुए रवि कांत ने आगे कहा, इस तरह के मामलों में सजा की बेहद मामूली दर चिंता का विषय है। वर्ष 2022 में बाल विवाह के सिर्फ 11 प्रतिशत मामलों में दोषसिद्धि हुई जबकि इसी अवधि में बच्चों के खिलाफ अन्य अपराधों में दोषसिद्धि की दर 34 प्रतिशत थी। यह बाल विवाह के मामलों में गहन जांच और अदालती सुनवाई की जरूरत को उजागर करता है । यह एक निवारक के रूप में काम करने के अलावा समुदायों को यह भी संकेत देगा कि बाल विवाह ठोस कानूनी परिणामों के साथ एक गंभीर अपराध है। रिपोर्ट में दो अहम सिफारिशें की गई हैं जिसमें लंबित मामलों के निपटारे के लिए फास्ट ट्रैक अदालतों के गठन के अलावा बाल विवाह को बलात्कार की आपराधिक साजिश के बराबर मानते हुए इसमें सहभागी माता-पिता, अभिभावकों और पंचायत प्रतिनिधियों के लिए सजा को दोगुना करने का सुझाव भी शामिल है।

मुहर्रम का मेला शांति पूर्वक संपन्न

प्रात: किरण, संवाददाता

लहलादपुर: प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत बुधवार के देर रात तक मुहर्रम का मेला शांति पूर्वक संपन्न हो गया. इसमें लगभग सभी गांवों से एक से बढ़कर एक बेहतरीन एवं आकर्षक शिप्पड़ के साथ ताजिये निकाले गये. दंदासपुर, हरपुर कोठी, लहलादपुर, सारण, ताजपुर, बनपुरा, चकदेह, दयालपुर, बसाढ़ीं, सहित दर्जनों गाँवों से ताजिये निकाले गये, जिनमें ताजपुर का ताजिया काफी आकर्षक रहा. ताजपुर के ताजिये में बने तोप तथा मिसाइल का प्रदर्शन लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था. गंडकी नदी के दो-दो पुल टूट जाने के कारण नदी के उत्तर वाले पंडितपुर, बनपुर लतीफ, बादरजीमी, धमसर आदि गांवो के ताजिये को जरा कुछ दुरी तय करके आना पड़ा ये सभी ताजिये हरपुर कोठी तथा बसही गांव स्थित पुल से गुजरे. ताजिये के जुलूस एवं अखाड़ा को नियंत्रण में बीडीओ नीलेश कुमार, सीओ शम्मी कुमार, थानाध्यक्ष निमार्ला सुमन तथा अन्य पुलिस पदाधिकारी अपने दल-बल के साथ काफी मुस्तैद एवं चौक्स दिखे. समाचार प्रेषण तक किसी भी अप्रिय घटना की सूचना नही

संक्षिप्त खबरें

पूर्व लापता हुए दिव्यांग व्यक्ति का शव बरामद

मांझी। मांझी थाना क्षेत्र के महम्मदपुर-ज्ञानी छपरा रोड के किनारे पानी भरे गड्ढे से बुधवार की शाम को एक दिन पूर्व लापता हुए दिव्यांग व्यक्ति का शव बरामद किया गया। गड्ढे में डूबने से मौत होने की जानकारी मिलते हीं मृतक के परिवार में कोहराम मच गया। वहीं सूचना पर पहुंची मांझी थाना पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया। मृतक महम्मदपुर गांव निवासी स्व. भोला मियां का पुत्र 53 वर्षीय कजमुल्ला अंसारी बताया जाता है। घटना के संबंध में मृतक के पुत्र आबिद अंसारी ने स्थानीय थाने में एक आवेदन दिया है। जिसमें कहा गया है कि कजमुल्ला अंसारी दिव्यांग थे। वे 16 जुलाई की शाम को अपने घर से ज्ञानी छपरा रोड में बैट्री चालित व्हील चेयर पर घूमने निकले थे। शाम तक जब घर नही पहुंचे तो परिजन परेशान हो गए और उनकी खोजबीन में जुट गए। इस बीच शक के आधार पर 17 जुलाई की शाम को करीब 6 बजे ज्ञानी छपरा रोड के किनारे घर से करीब डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर खोदे गए गड्ढे में खोजबीन की गई तो बैटरी चालित व्हील चेयर समेत उनका शव बरामद हुआ। जानकारी मिलने पर घटना स्थल पर ग्रामीणों की भीड़ उमड़ पड़ी। वहीं मृतक के अन्य परिजन भी बिलखते हुए घटना स्थल पर पहुंच गए। उधर सूचना मिलते हीं मांझी पुलिस भी मौके पर पहुंच गई और मृतक के शव को अपने कब्जे में ले लिया। गुरुवार को पोस्टमार्टम के बाद पुलिस ने मृतक के शव को परिजनों को सौंप दिया। जिसके बाद परिजनों ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया। घटना के बाद से परिजनों का रो- रोकर बुरा हाल है। मृतक को तीन पुत्री व दो पुत्र है। जिनमें से एक पुत्री की शादी हो चुकी है। एक पुत्र राजस्थान में प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में काम करता है। जिससे उसके घर का भरण- पोषण चलता है। परिवार की माली हालत ठीक नही बतायी जा रही है।

बैठक छोड़ सदन से बाहर आई नाजिया सुल्ताना

छपरा कार्यालय। सदन से बाहर आकर नाजिया सुल्ताना ने कहा कि पूर्व में बोर्ड की बैठक में जनहित के लिए गए निर्णयों का इस बैठक में न तो स्मपुष्टि रखी गई है ना उस बोर्ड की बैठक की कार्यवाही पंजी पार्षदों को उपलब्ध करवाया गया ना ही ससक्त स्थाई समिति द्वारा नियम विरोध लिए गए निर्णयो को बोर्ड के सामने लाया गया न उसकी कॉपी दी गई। इस बैठक में भी बजट पेश करने के लिए बैठक बुलाने के बजाय सीधा परिचर्चा के लिए बुलाया गया जिसका विरोध कई पार्षदों ने किया विरोध में जो बातें बोर्ड में रखी गई उसे भी प्रोसिडिंग पे चढ़ाए बिना सिग्नेचर करवाया जा रहा था जिस का विरोध करते हुवे बिना सिग्नेचर किए सदन से बाहर आ गई

बाल तस्करी की रोकथाम के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

बेतिया(मोहन सिंह)।बाल तस्करी की रोकथाम के लिए जिला समाहरणालय सभागार बेतिया में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन गुरुवार को किया ' कार्यशाला का शुभारम्भ जिले के उप विकास आयुक्त द्वारा किया गया, जिसमे समादेष्टा, सीमा सुरक्षा बल, जिला जन संपर्क पदाधिकारी, सहायक निदेशक, बाल संरक्षण इकाई, जिला प्रोग्राम पदाधिकारी, बाल विकास, पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय एव रेल, श्रम अधीक्षक, जिले के सभी बाल कल्याण पुलिस पदाधिकारी, चाइल्ड हेल्प लाइन, बाल कल्याण समिति तथा बाल कल्याण से जुड़े स्वय सेवी संस्थाओ के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लिया गया ' राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग, नई दिल्ली द्वारा कार्यशाला के लिए नामित प्रतिनिधि श्रीमती कात्यायनी आनन्द द्वारा बाल तस्करी से रोकथाम विषय पर चर्चा की गयी ' श्रीमती आनन्द ने सभा को बताया गया कि पश्चिम चम्पारण जिला देश का सीमावर्ती क्षेत्र है, जहाँ नेपाल के साथ उतरप्रदेश की सीमा भी जुडी हुई है. यहाँ बच्चों की तस्करी एक बड़ी समस्या है, जिसकी रोकथाम हेतु कार्यशाला में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों को जागरूक किया गया ' सभा को संबोधित करते हूए उप विकास आयुक्त महोदया ने जिला के वरीय पदाधिकारी एव पुलिस पदाधिकारियो को निदेश दिया गया कि बाल तस्करी से जुड़े मामलों का अविलम्ब निष्पादन सुनिश्चित किया जाय

हथियार के बल पर दुकान में की लूटपाट,चार बनाए गए अभियुक्त

भेल्दी(सारण)। भेल्दी बाजार में एक दुकान पर चार लोगों ने धावा बोलकर हथियार के बल पर नगदी समेत अन्य सामान लूट लिए। भेल्दी थाने में दर्ज प्राथमिकी में भेल्दी के भरत प्रसाद सिंह ने कहा है कि उनके दुकान के बगल में गोदाम में है।बुधवार की देर शाम कुछ लोग अवैध हथियार दिखाकर दुकान का लूटपाट किए।साथ ही गोदाम का ताला तोड़कर उसमें रखे रूपए व सामान लूट लिए और मारपीट किए। इस मामले में भेल्दी थाने के जलालपुर टोले खरीदाहा के सुमित कुमार राय,राकेश कुमार राय,बरियारपुर के मिथिलेश कुमार राय,अमनौर थाने के अपहर के विजय मांझी को नामजद अभियुक्त बनाया गया है।

सभी पार्षदों की बात को ध्यान में रखकर किया गया 2024- 25 का बजट तैयार: महापौर

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। महापौर लक्ष्मी नारायण गुप्ता की अध्यक्षता मे सामान्य बोर्ड बैठक आयोजित हुआ, जिसमें वित्तीय वर्ष 2024 -25 के बजट को सदन मे पास कराने को लेकर चर्चा की गई ' बैठक में सभी वार्ड सदस्यों द्वारा बजट को पास कराने के पहले उपस्थापन कराने की बात उठायी गई ' वार्ड नंबर 22 के पार्षद डब्लज के द्वारा सदन में बजट पर उप चर्चा की बात कही गई ,साथ ही यह बताया गया कि पूर्व में पहले बजट पर उप चर्चा की जाती रही है, उसके बाद बजट स्वीकृत किया जाता है ' लेकिन इस बार बिना चर्चा के ही सदन में बजट पास कराने के लिए बैठक महापौर के द्वारा बुलाई गई, जिससे सदन में पहले सभी वार्ड पार्षद के द्वारा विरोध दर्ज कराया गया ' तत्पश्चात वार्ड नंबर 35 के पार्षद श्याम कुमार के द्वारा कहा गया कि पहले वजट की उपस्थापना कराए ' जिस पर सभी सदस्यों के द्वारा सदन मे उपस्थापन पर चर्चा कराने पर सहमति व्यक्त की गई ' अगले बैठक में बजट कि सम्पूष्टी की जाएगी ' महापौर के द्वारा बजट पर संक्षेप सार को सभी पार्षदों के बीच पढ़कर सुनाया गया क जिसमें बेघरो के लिए सबको आवास योजना के तहत 1100 घर का निर्माण जायेगा '
जिन बंधुओ के पास जमीन नहीं है, उसके लिए नगर निगम के तरफ से आवास बनाकर दिया जायेगा ' अथितियों के ठहरने के लिए स्थायी एवं अस्थायी रैन बसेरा का निर्माण एवं रख -रखाव का व्यस्था करना है ' इस बजट में सबसे बड़ी बात यह है कि शहरी गरीबो के विकास पर 26% खर्च करने का प्रावधान रखा गया है ' जबकि मलिन बस्ती उदारीकरण, सामुदायिक भवन का निर्माण एवं मरम्मती, निगम क्षेत्र में पुस्तकालय अध्यन केंद्र का निर्माण, छात्रों के लिए छात्रवृति योजना एवं कैरियर कॉउंसलिंग, निगम आपके द्वार योजना का शुभारम्भ, पार्षद के लिए एक- एक प्रिंटर का प्रावधान, निगम क्षेत्र में प्रदुषण नियंत्रण एवं रोकथाम के लिए पहल, निगम क्षेत्र में पेड़ लगाना, शौचालय एवं प्रसाधन की व्यस्था, निगम क्षेत्र में यात्री बस सेवा एवं पिंक ऑटो की शुरूवात, सड़को एवं पथ निर्माण रख -रखाव, हर घर नल योजना का प्रावधान, एम्बुलेंस,शव साधन एवं डिप फ्रिजर का क्रय करना , वृद्ध आश्रय स्थल योजना, शिकायत केंद्र की व्यवस्था, निगम क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरा लगाना तथा डिजिटल मॉनिटरिंग रूम का निर्माण आदि बातों को इस बजट के भाषण मे महापौर लक्ष्मी नारायण गुप्ता के द्वारा कहा गया कमहापौर के द्वारा यह भी कहा गया कि वार्ड पार्षद के सभी बातों को ध्यान में रखकर बजट तैयार किया गया है कबैठक में उप महापौर रागनी देवी,सशक्त स्थायी समिति सदस्य,अपर समहर्ता सह प्रभारी नगर आयुक्त, बिहार विधान पार्षद सदस्य डॉ वीरेन्द्र नारायण यादव,उप नगर आयुक्त, सिटी मैनेजर, विधायक प्रतिनिधि छपरा विधानसभा तथा सभी पदाधिकारी एवं नगर निगम के कर्मी उपस्थित थे।

बेतिया नगर निगम के उप मेयर के दो पुत्रों पर एससी/एसटी के तहत मामला दर्ज

बेतिया। बेतिया नगर निगम की उप मेयर गायत्री देवी के दो पुत्रों पर एससी / एस टी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार नगर निगम बेतिया के कनीय अभियंता सुजय सुमन के सहायक बृजेश कुमार बैठा के साथ उपमेयर के पुत्र रमण गुप्ता एवं उसके दो छोटे भाई रोहित कुमार गुप्ता एवं राहुल कुमार गुप्ता ने कुछ अज्ञात लोगों के साथ मिलकर वार्ड नंबर 13 में इंदिरा चौक के समीप निमार्णाधीन नाले के काम को जबरन रोकने का विरोध करने पर मारपीट करने एवं जाति सूचक गाली देने तथा यह धमकी देने कि पहले एक प्रतिशत पीसी मेरा हिस्सा देने के बाद ही यहां काम शुरू हो सकता है। इस संबंध में जेई के सहायक बृजेश कुमार बैठा ने एस सी / एस टी थाना बेतिया में एक आवेदन दिया है। आवेदन के आलोक में सरकारी कार्य में बाधा डालने एवं जाति सूचक मारपीट करने के मामले में एक प्राथमिक की दर्ज की गई है। इस संबंध में सोशल मीडिया पर मारपीट करने का एक वीडियो भी वायरल हो रहा है। बताते चलें कि रमन गुप्ता पूर्व से ही एक विवादित व्यक्ति रहे हैं और इनके दो छोटे भाइयों पर एक पत्रकार के साथ मारपीट करने के मामले में बानुछापर ओपी में एक मामला भी दर्द है।

चन्द्रदीप पुलिस ने एक युवक को देशी कट्टा व जिंदा कारतूस के साथ किया गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः चंद्रदीप थाना क्षेत्र के आढ़ा गांव में गुप्त सूचना के आधार पर चंद्रदीप पुलिस ने मंगलवार की देर रात्रि में त्वरित कार्रवाई करते हुए एक युवक को देसी कट्टा व जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार किया है। चंद्रदीप थानाध्यक्ष राजेंद्र साह ने बताया कि मंगलवार की अहले सुबह गुप्त सूचना मिली की थाना क्षेत्र अंतर्गत आढ़ा मुसहरी में एक व्यक्ति आर्म्स लेकर घूम रहा है। सूचना मिलने पर त्वरित कार्रवाई करते हुए इस संबंध में वरीय पुलिस पदाधिकारी को सूचना देते हुए रात्रि गस्ती की टीम को आढ़ा मुसहरी पहुंचने हेतु निर्देशित किया गया। पुलिस टीम द्वारा थाना क्षेत्र के आढ़ा मुसहरी पहुंचकर घेराबंदी कर एक व्यक्ति को एक देसी कट्टा एक जिंदा कारतूस तथा दो मोबाइल एवं एक अपाची मोटरसाइकिल और 14000 रुपए के साथ पकड़ा गया। गिरफ्तार व्यक्ति से नाम पता पूछा गया तो उसने अपना नाम राहुल कुमार उम्र 37 वर्ष पिता रमेश राम ग्राम- मामुधिचक थाना बहादुरपुर (राजेंद्र नगर) जिला पटना बताया। इस दौरान पुलिस ने युवक के पास से एक अपाची मोटरसाइकिल जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर इफ06अफ794 एवं दो मोबाइल भी बरामद किया है। युवक द्वारा मोटरसाइकिल का कोई वैध दस्तावेज नहीं प्रस्तुत किया गया। चंद्रदीप थानाध्यक्ष राजेंद्र साह ने बताया कि जब्त अपाची मोटरसाइकिल के संबंध में कोतवाली (पटना) थाना कांड संख्या 425/24 धारा 303(2)बी0 एन0 एस0 चोरी का मामला दर्ज है।छापेमारी टीम में पुलिस अवर निरीक्षक संजय कुमार सिंह के साथ पुलिस के जवान मौजूद रहे। वहीं थाना अध्यक्ष राजेंद्र साह ने बताया की जो भी अपराधी या अपराध करने वाले को पुलिस छोड़ेगें नहीं।

चोरी के मोटरसाइकिल के आरोप में 02 अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

छपरा ।सारण पुलिस के द्वारा गश्ती-सह- वाहन चेकिंग के क्रम में मुफ्फसिल थानान्तर्गत विशुनपुरा चौक पर सघन वाहन चेकिंग किया जा रहा था कि कुछ संदिग्ध मोटरसाइकिल सवार युवकों द्वारा पुलिस को देखकर भागने का प्रयास किया गया, जिसमें 02 युवकों को 02 मोटरसाइकिल के साथ पकड़ा गया वाहन सत्यापन एवं पूछताछ के क्रम में पता चला कि दोनों मोटरसाइकिल चोरी का है और उसमे से एक मोटरसाइकिल का रजि0 नं0 वाहन के चेसिस नं0, इंजन नं0 से सम्बद्ध न होकर, नंबर प्लेट को कूटरचित कर उपयोग किया जा रहा है गहन पूछताछ के क्रम में दोनों अभियुक्तों द्वारा स्वीकार किया गया कि वे मोटरसाइकिल की चोरी करते हैं और फिर उसे बेच देते हैं चोरी के मोटरसाइकिल का आदतन खरीद-फरोख्त करने व रजि0 नं0 का कूटकरण कर उपयोग करने के आरोप में दोनों युवकों को 02 चोरी के मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार किया गया इस संबंध में मुफ्फसिल थाना कांड संख्या- 424/24, दिनांक-16.07.24, धारा- 303(2)/317(2)/317(4)/317(5) /318(4) /336(3)/338/3(5) इठर दर्ज कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है

गिरफ्तार अभियुक्तो में रतन कुमार , उम्र- 20 वर्ष, पिता- रामभुज महतो, सा०- लवकुशपुर खलपुरा कमाला, थाना- मुफ्फसिल, जिला- सारण सत्यम कुमार , उम्र- 18 वर्ष, पिता- रंजित साह, सा०- महाराजगंज, थाना- मुफ्फसिल, जिला- सारण शामिल है। गिरफ्तार अभियुक्त रतन कुमार का अबतक का ज्ञात आपराधिक इतिहास :-. मुफ्फसिल थाना कांड संख्या- 317/23, धारा- 379/411 भा0द0वि0 गरखा थाना कांड संख्या- 769/23, धारा- 399/402/412/411 भा0द0वि0 एवं 25(1-b)/26/35 आर्म्स एक्ट गिरफ्तार अभियुक्त सत्यम कुमार का अबतक का ज्ञात आपराधिक इतिहास :-. गरखा थाना कांड संख्या- 769/23, धारा- 399/402/412/411 भा0द0वि0 एवं 25(1-b)/26/35 आर्म्स एक्ट जप्त/बरामद सामानों में चोरी के मोटरसाइकिल :- 02, 2. कूटरचित वाहन नंबर प्लेट :- 01 शामिल है। टीम में शामिल पुलिस पदाधिकारी :- विशाल आनंद, पु०नि०-सह -थानाध्यक्ष मुफ्फसिल थाना, प्र०पु०अ०नि० ओम प्रकाश कुमार, प्र०पु०अ०नि० राजेश कुमार, प्र०पु०अ०नि० गुलशन कुमार, मुफ्फसिल थाना एवं थाना के अन्य कर्मी सम्मिलित थे।

कृषि विज्ञान केंद्र, माधोपुर ने किया मधुमक्खी पालन पर 4 दिवसीय प्रशिक्षण का उद्घाटन

प्रात: किरण, संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम)।कृषि विज्ञान केंद्र माधोपुर में मधुमक्खी पालन पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन माधोपुर के वरिये वैज्ञानिक एवं प्रधान डॉ अभिषेक प्रताप सिंह ने किया।
कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए वरिये वैज्ञानिक एवं प्रधान ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और कृषि में मधुमक्खी पालन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मधुमक्खी पालन न केवल कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक है, बल्कि यह ग्रामीण बेरोजगार युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर भी प्रदान करता है। मधुमक्खी पालन से शहद और अन्य उत्पादों की प्राप्ति होती है, जो कि बाजार में अच्छी कीमत पर बेचे जा सकते हैं, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है।वही कार्यक्रम समन्वयक सौरभ दुबे ने मधुमक्खी पालन की आधुनिक तकनीकों, शहद उत्पादन के तरीकों, और इसके व्यवसायिक संभावनाओं के बारे में जानकारी दी। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विशेष रूप से उन युवाओं को ध्यान में रखकर आयोजित किया गया है, जो स्वरोजगार के नए अवसरों की तलाश में हैं। मधुमक्खी पालन एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, यह पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है, क्योंकि मधुमक्खियाँ परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे फसलों की पैदावार में वृद्धि होती है। सभी प्रतिभागियों ने इस अवसर का पूरा लाभ उठाने का संकल्प लिया और कहा कि वे अपने गांवों में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने का प्रयास करेंगे। इस अवसर पर केवीके के अन्य वैज्ञानिक और सभी स्टाफ सदस्य भी उपस्थित थे।

19,20,21 एवं 22 जुलाई को होगा अध्यापक नियुक्ति प्रतियोगिता पुनर्परीक्षा का आयोजन

- जिला मुख्यालय छपरा में 19 जुलाई को 18, 20 जुलाई को 16, 21 जुलाई को 14 एवं 22 जुलाई को 12 परीक्षा केन्द्रों पर होगी परीक्षा
- परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर सभी केंद्राधीक्षक एवं प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों की की गई ब्रीफिंग

छपरा कार्यालय।

बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा अध्यापक नियुक्ति प्रतियोगिता पुनर्परीक्षा का आयोजन 19,20,21एवं 22 जुलाई को किया जा रहा है। जिसके लिए सारण जिला में 19 जुलाई की परीक्षा के लिये 18, 20 जुलाई की परीक्षा के लिये 16, 21 जुलाई की परीक्षा के लिये 14 एवं 22 जुलाई की परीक्षा के लिये 12 परीक्षा केन्द्र बनाये गये हैं। 19,20 एवं 21 जुलाई को यह परीक्षा एक पाली में मध्याह्न 12:00 बजे से 02:30 बजे अपराह्न तक आयोजित होगी तथा 22 जुलाई को एक पाली में पूर्वाह्न 9:30 बजे से मध्याह्न 12:00 बजे तक आयोजित होगी। परीक्षार्थियों का परीक्षाकेंद्र में प्रवेश परीक्षा प्रारम्भ होने से दो घंटे पूर्व शुरू होगा तथा परीक्षा प्रारंभ होने से एक घंटा पूर्व प्रवेश बंद हो जायेगा। 12 बजे से प्रारंभ होने वाली परीक्षा हेतु अभ्यर्थियों का प्रवेश पूर्वाह्न 10 बजे से 11 बजे तक तथा पूर्वाह्न 9:30 बजे से प्रारंभ होने वाली परीक्षा हेतु प्रवेश पूर्वाह्न 7:30 बजे से पूर्वाह्न 8:30 बजे तक अनुमान्य होगा। निर्धारित समय सीमा के उपरांत किसी भी अभ्यर्थी को परीक्षाकेंद्र में प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर जिलाधिकारी अमन समीर ने आज सभी केंद्राधीक्षकों एवं प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों एवं पुलिस पदाधिकारियों की ब्रीफिंग की।

बताया गया कि परीक्षा को शांतिपूर्ण एवं कदाचारमुक्त संपन्न कराने के लिए परीक्षा केन्द्र पर केन्द्र प्रेक्षक सह स्टैटिक दण्डाधिकारी, जोनल दण्डाधिकारी एवं सुपर जोनल दण्डाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी पुलिस पदाधिकारी के साथ प्रतिनियुक्त किये गए हैं। जो परीक्षा प्रारंभ होने के ढाई घंटे पूर्व में अपने प्रतिनियुक्ति स्थल पर पहुँचकर परीक्षा समाप्ति के उपरांत तक विधि व्यवस्था को संधारित करेंगे।

सभी जोनल एवं सुपर जोनल दण्डाधिकारी एवं सम्बद्ध पुलिस पदाधिकारी सतत भ्रमणशील रहकर परीक्षा का संचालन कराते हुए विधि व्यवस्था को संधारित करेंगे।

बताया गया कि प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर जैमर लगाया गया है, साथ ही सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से भी परीक्षा पर नजर रखी जायेगी। सभी परीक्षा केंद्रों पर सतत वीडियोग्राफी भी कराई जायेगी। प्रवेश के समय सभी अभ्यर्थियों की अच्छे से फ्रिस्किंग सुनिश्चित करने को कहा गया। किसी भी अभ्यर्थी को किसी भी तरह के इलेक्ट्रॉनिक सामग्री या घड़ी के साथ प्रवेश की अनुमति नहीं होगी। परीक्षा प्रारंभ होने के समय से परीक्षा के समाप्त होने तक की अवधि में अनुमंडल पदाधिकारी सदर, छपरा के द्वारा परीक्षा तिथि को केन्द्रों के 500 गज की परिधि में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत निषेद्याज्ञा लागू करने का आदेश जारी किया गया है। परीक्षा केन्द्र के आस-पास फोटोस्टेट की दूकान, साईबर कैफे परीक्षा के दौरान पूर्णतः बंद रहेंगे।

परीक्षा के सफल संचालन के लिए अनुमंडल कार्यालय, सदर छपरा के परिसर में जिला नियंत्रण कक्ष की स्थापना की गयी है। जिसका दूरभाष संख्या 06152- 242444 है।

ब्रीफिंग में अपर समाहर्त्ता, अनुमंडल पदाधिकारी सदर, अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय,सभी केंद्राधीक्षक, प्रतिनियुक्त दंडाधिकारी एवं पुलिस पदाधिकारी मौजूद थे।

नल जल योजना की मोटर खराब,तीन माह से बंद है जलापूर्ति

तरैया। प्रखंड के सरेया रत्नाकर पंचायत के वार्ड संख्या 10 में नल जल के मोटर खराब रहने के कारण तीन महीनो से पानी की आपूर्ति बंद है।इस संबंध में दर्जनों ग्रामीणों ने एक लिखित आवेदन प्रखंड विकास पदाधिकारी तरैया को देकर नल जल योजना चालू करने की मांग किया है।ग्रामीणों का कहना है कि नल जल योजना के पानी बंद हो जाने के कारण आम जनता की परेशानी बढ़ गई है।नल जल के मोटर बनवाने के लिए दो माह पहले ही खोलकर गया था लेकिन अभी तक बन कर नही आया है।उक्त नल जल के पानी से सरेया रत्नाकर पंचायत के वार्ड संख्या 10 एवं भागवतपुर पंचायत के वार्ड संख्या 11,12, 13 एवं 14 के आम जनता लाभान्वित होते है।उक्त आवेदन पर हस्ताक्षर करने वालो में शंकर राय,मुन्ना कुमार,डॉ हरेंद्र सिंह, सोनू यादव,असर्फी सिंह,पुनित राय,दुर्गावती देवी,सुरेश राय, दीपक साह,रमाशंकर साह, सतनारायण राय,वार्ड सदस्य 14 मोहन साह,पूजा देवी,कन्हैया यादव,मधु कुमारी सहित अन्य शामिल है।

वरिष्ट नेत्र चिकित्सक डॉ एस के पाण्डेय ने बच्चों के बीच किया पठन पाठन सामग्री का वितरण

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सामाजिक संगठन लायंस क्लब के पूर्व जिलापाल छपरा शहर के वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक डॉ एस के पाण्डेय के जन्मदिन पर लियो क्लब छपरा टाउन के द्वारा लियो पाठशाला कार्यक्रम के तहत राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित कुमारी अनीशा के द्वारा संचालित निःशुल्क शिक्षा केंद्र मौंना हूस्से मोहल्ला में पठन पाठन की सामग्री कॉपी किताब, वाइट बोर्ड, बैठने हेतु त्रिपाल बच्चो को उपहार स्वरूप दिया गया। लियो अध्यक्ष मनीष कुमार ने कहा की अपने अभिभावक का जन्मदिन किसी उत्सव से कम नहीं होता, आदरणीय डॉ पाण्डेय सर से सामाजिक कार्यों को करने की प्रेरणा मिलती है।
उक्त मौके पर लायंस सचिव अमित गुप्ता के बताया कि 11 महिलाओं के साड़ी लायंस क्लब की रीजन चेयरपर्सन सीमा पाण्डेय, पूर्व मेयर राखी गुप्ता और लायंस सदस्यो के मौजूदगी में गिफ्ट के रूप में दिया गया। उक्त कार्यक्रम की जानकारी जोन चेयरपर्सन लायन गोविद सोनी ने दिया

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातः किरण

आरा,बक्सर,सासाराम,कैमूर

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
पटना, शुक्रवार, 19 जुलाई, 2024

पूर्व सांसद प्रतिनिधि डॉ. सुरेन्द्र सागर ने की राज्यपाल से मुलाकात
वीकेएसयू के प्रशासनिक और शैक्षणिक व्यवस्था को दुरुस्त करने की मांग की

प्रात: किरण संवाददाता

आरा, भाजपा के पूर्व जिला प्रवक्ता एवं पूर्व राज्यसभा सांसद आरके सिन्हा के पूर्व सांसद प्रतिनिधि डॉ. सुरेन्द्र सागर ने बिहार के महामहिम राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर से राजभवन में मुलाकात की. राजभवन में राज्यपाल से मुलाकात के दौरान उन्होंने वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के प्रशासनिक और शैक्षणिक क्षेत्र से जुड़े मामलों की ओर राज्यपाल का ध्यान आकृष्ट कराया और वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के प्रशासनिक एवं शैक्षणिक ढांचे को दुरुस्त करने की मांग की. उन्होंने राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर से वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय से संबद्ध एफिलियेटेड डिग्री कॉलेजों की समस्याओं का समाधान कराने और राज्य सरकार द्वारा दिए जाने वाले अनुदान राशि के वर्षो के बकाया अनुदान राशि का वितरण सुनिश्चित कराते हुए बकाये अनुदान राशि का एकमुश्त भुगतान कराने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है. पूर्व सांसद प्रतिनिधि डॉ. सुरेन्द्र सागर ने वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय प्रक्षेत्र से जुड़े भोजपुर, बक्सर, रोहतास और कैमूर जिले में स्थित अंगिभूत और संबद्ध कॉलेजों के आसपास हुए अतिक्रमण और बनाये गए दुकान, खटाल आदि को हटाने के लिए सम्बंधित अधिकारियों को आदेश देने की मांग की और खासकर महिला महाविद्यालयों के आसपास सुरक्षा बहाल करवाने की दिशा में आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है. बिहार विश्वविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता एकलव्य एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता तरंग को पुनः शुरू करने की भी मांग की है.उन्होंने बताया कि राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेंद्र विश्वनाथ अर्लेकर से बिल्कुल भावनात्मक माहौल में बातचीत हुई और उन्होंने न सिर्फ सारे मामलों को गंभीरता से सुना बल्कि वीकेएसयू से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर चर्चा कर विचार विमर्श भी किया और मांगो पर कार्रवाई का आश्वासन भी दिया है. इस दौरान राष्ट्रपति एवं पीएम मोदी के हाथो सम्मानित सामाजिक कार्यकर्ता शैलेश कुमार राय और कुछ अन्य लोग भी मुलाकात के दौरान साथ थे और उन्होंने ने भी राज्यपाल सह कुलाधिपति के समक्ष अपनी कुछ मांगे रखी.

राज्य संविदा एनम संघर्ष मोर्चा ने विशाल प्रदर्शन सिविल सर्जन भोजपुर के समक्ष किया

प्रात: किरण संवाददाता

आरा: राज्य संविदा एनम संघर्ष मोर्चा गोप गुट भोजपुर के एनम कर्मचारियों ने विशाल प्रदर्शन सिविल सर्जन भोजपुर के समक्ष किया, प्रदर्शन का नेतृत्व कर्मचारी महासंघ गोप गुट भोजपुर के जिला सचिव उमेश कुमार सुमन, चिकित्सा जन स्वस्थ्य कर्मचारी संघ भोजपुर के जिला सचिव उमा शंकर सिंह, अनिल कुमार, एनम संविदा संघर्ष मोर्चा के जिला संयोजक सपना कुमारी, कोषाध्यक्ष दीप्ति कुमारी, स्नेह लता, कुमारी विमला, कुमारी ज्योति, अनुराधा कुमारी ने किया, कार्यक्रम को संबोधित सपना कुमारी ने किया, संचालन सोनी सागर ने किया, उपस्थित एनम संविदा कर्मियों को संबोधित करते हुए जिला सचिव उमा शंकर सिंह स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि आज राज्य सरकार के कर्मी पूरे बिहार में सिविल सर्जन के यहां प्रदर्शन कर रहा है, अपनी मांग के पूर्ति के लिए विगत 12 दिनों से कार्य बहिष्कार किया है, पूरा स्थिति चरमराई है आम लोगों परेशान है पिचसी पूरा बंद है, लेकिन स्वास्थ्य मंत्री, और मुख्य मंत्री सहित राज्य सरकार चुप चाप मस्त है ,यदि समय रहते एनम के सवालों पर विचार नहीं किया गया तो एनम का आंदोलन 23.7.24 को पटना में विशाल कार्यक्रम के होगा, और पटना में पूरे विहार से एनम आएगी,,कार्यक्रम को एनम संविदा संघर्ष मोर्चा के संयोजक सपना कुमारी भी अपने संबोधन में कहा कि एनम को डरने की जरूरत नहीं है, हम सभी के साथ कर्मचारी महासंघ गोप गुट बिहार है, साथ ही तमाम ट्रेड यूनियन भी है, आज पूरे बिहार के जिला सिविल सर्जन के यहां एनम का जोरदार प्रदर्शन किया जा रहा है पूरे बिहार के पिचसी बंद है, कार्य बहिष्कार किया है, 23.7.24 को पटना में भोजपुर से ल्ले की शत प्रतिशत उपस्थिति होनी चाहिए, ताकि हमारी मांग पर राज्य सरकार जल्द निर्णय ले सके, नहीं तो आंदोलन आगे भी चलेगा, कार्यक्रम में जिला सचिव सुमन जी ने कहा कि एनम संविदा कर्मियों के मांग के साथ पुराना पेंशन की मांग भी चल रहा है, सेवा निवृति के बाद कर्मी का सहारा पुराना पेंशन है, जिसे केंद्र सरकार 2004 से बंद किया है, और स्वयं केंद्र सरकार और राज्य सरकार के निर्वाचित सदस्य पूर्व निर्वाचित सदस्य दो दो तीन तीन पुराना पेंशन ले रहे हैं लेकिन केंद्र और राज्य कर्मियों के लिए ल्लरुर लागू किया गया है जो ठीक नहीं है, हम सभी कर्मियों को पुराना पेंशन लागू होना चाहिए नहीं तो पुराना पेंशन के लिए भी आंदोलन तेज होगा, साथ ही संविदा मानदेय आउट सोर्सिंग पर कार्यरत कर्मियों को नियमित करना होगा, और समान काम के बदले समान वेतन लागू करना होगा, इस रिपोर्ट को राज्य सरकार लागू नहीं कर रही है, जो कर्मियों के साथ दोहरी नीति है,,कार्यक्रम को सभी सूँ से उपस्थित ल्ले भी संबोधित किया आरती कुमारी उर्वशी कुमारी सुजाता कुमारी शोभा रानी गीता कुमारी प्रमिला कुमारी अनु कुमारी बबीता कुमारी बबीता देवी, रीता कुमारी बिनु कुमारी ममता, अंशु माला अनुराधा सोनी, भगत रंजन, अंजनी स्न्न८ प्रीति ज्योति सुधा कंचन प्रियंका निकिता अर्चना दीप्ति, नीलम, नूतन कंचन प्रतिमा पुष्पांजलि चांदनी सुमन मीता स्नेह लता रिंकू सपना नूतन शर्मा, कुमारी बिमला प्रिया गीता रिंकू भी कार्यक्रम को संबोधित किया, साथ ही मांग पत्र की कॉपी को सिविल सर्जन भोजपुर की पांच सदस्यीय टीम कार्यालय में जाकर दिया गया, और अंत में संयोजिका सपना कुमारी ने कहा कि 23.7.24 को पूरा भोजपुर सहित बिहार के ल्ले और आशा कर्मी भी पटना में आएगी, भवदीय सपना कुमारी ल्ले ३्रैं संघर्ष मोर्चा गोप गुट भोजपुर.

पिस्टल का भय दिखाकर लगभग 4.30 लाख की लूट

आरा। जिले के आरा-छपरा हाइवे पर कोइलवर थाना क्षेत्र के हरिपुर व चनपुरा के बीच तीन बाइक पर सवार 9 नकाबपोश अपराधियों ने पिस्टल का भय दिखाकर बबुरा के किराना व्यवसायी से लगभग 4.30 लाख रुपये लूट फरार हो गए। मिली जानकारी के अनुसार बबुरा निवासी विश्वनाथ प्रसाद का 25 वर्षीय पुत्र संजीव कुमार उर्फ मोनू कोइलवर क्षेत्र से साप्ताहिक कलेक्शन का पैसा लेकर अकेले अपने घर जा रहा था इसी दौरान हरिपुर के समीप 3 बाइक पर सवार 9 बेखौफ अपराधियों ने युवक को घेर लिया जिसके बाद युवक भागने लगा भागने के क्रम में युवक को गिरकर बैग में रखे करीब 4.30 लाख रुपये लेकर फरार हो गए। भुक्तभोगी के पिता ने बताया कि उनके बेटे संजीव कुमार उर्फ मोनू साप्ताहिक पैसे का कलेक्शन लेकर गुरुवार को अकेले अपने घर जा रहा था जबकि आये दिन वो अपने एक सहयोगी के साथ पैसे का कलेक्शन लेकर घर जाते थे गुरुवार को अकेले का फायदा उठाकर अपराधियों ने घटना को अंजाम दिया है। वही सदर एसडीपीओ-2 रंजीत कुमार सिंह ने बताया कि युवक कोईलवर क्षेत्र में तीन चार जगहों से पैसे का कलेक्शन कर आ रहे थे। इस दौरान आरा-छपरा हाईवे पर मानव सेवा धर्म संस्थान के समीप तीन बाइक पर सवार आठ से नौ की संख्या में अपराधियों ने व्यवसायी को अकेला पाकर पैसे से भरा बैग छीन फरार हो गए।

संक्षिप्त खबरें

बाईक के धक्के से बुजुर्ग महिला जख्मी

बरियारपुर(मुंगेर)। बहादुरपुर ऋषि कुण्ड मुख्य मार्ग पर तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार 70 वर्षीय बुजुर्ग महिला को ठोकर मारकर चलते बना। मौके ऐ बरदात बरियारपुर पुलिस गस्ती दल के नजर पड़ी । आनन फानन मे गस्ती दल ने अपने वाहन के द्वारा ईलाज के लिये प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र लाया। चिकित्सको ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर ईलाज के लिए हायर सेन्टर भेजा दिया।

ढोल बाजे व नागड़ा के साथ निकाला गया ताजिया जुलूस

तारापुर (मुंगेर)।मोहर्रम को लेकर दसवीं रोज गुरुवार के शाम ढ़लते ही तारापुर के खानपुर, मिल्की, गाजीपुर, बिचला मोहल्ला , इब्राहिमपुर,कैंप मोहल्ला , उर्दू चौक, पुरानी बाजार , से ढ़ोल ,नगाड़ा,ताशा डंका , एवं बाजे , के साथ सभी इमामबाड़ा के खलीफा के नेतृत्व जुलूस निकाला गया । गौरतलब है कि जलूस में शामिल युवाओं ने अपने परंपरागत तलवार भाला फरसा लाठी हॉकी से लैस होकर सभी अपने-अपने निशान के साथ ईदगाह मैदान गाजीपुर पहुंचा।यहां भी एक दूसरे के साथ ताजिया एवं निशान का मिलन कराया गया । ताजिया मिलन करने के बाद विशाल जुलस तारापुर मुख्य मार्ग के रास्ते बिहमा कर्बला के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे । बीच-बीच में युवाओं ने जगह-जगह रख कर धारदार हथियार से कई तरह के प्रदर्शन किया । इस दौरान जुलूस में शामिल युवकों ने लगातार या अली या हुसैन के नारे लगा रहे थे । तत्पश्चात फिर सभी ताजिया का मिलन शिव मार्केट तारापुर में कराया गया । ताजिया मिलन के बाद धीरे-धीरे जुलूस कर्बला बिहमा के लिए निकल चले । इस दौरान चप्पे चप्पे पर एहतिहात के तौर पर जिला प्रशासन ने पुलिस बल के साथ - साथ दंडाधिकारी मौजूद थे । इस मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी राकेश रंजन कुमार प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रशांत कुमार सी ओ संतोष कुमार सहित विभिन्न राजनीतिक दल के प्रतिनिधि मौके पर मौजूद थे ।

इन्व्हीर क्लब द्वारा बिरहोर जनजाति के 101 लोगों को किया भोजन वितरित

गया।इनर व्हील क्लब के प्रतिनिधिमंडल ने अध्यक्ष तृप्ति गुप्ता के नेतृत्व में जिले के फतेहपुर प्रखंड अंतर्गत गुरपा वन क्षेत्र में रहने वाले बिरहोर जनजाति के परिवारों से मुलाकात की गई है। सामाजिक आर्थिक रूप से समाज के अंतिम पायदान पर स्थित बिरहोर जनजाति के लोगों के बीच अत्यधिक गर्मी एवं भोजन-पानी के अभाव को देखते हुए तृप्ति गुप्ता, उनकी टीम एवं पूर्व जिला संपादक शुभ्रा गुप्ता द्वारा 101 लोगों को भोजन वितरित किया गया है

हम के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह मंत्री का बेलागंज में भव्य स्वागत

गया। हम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय डॉ संतोष कुमार मांझी का गया जिले के बेलागंज प्रखंड के अंतर गत ग्राम अगंधा में भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीम राव अम्बेडकर के प्रतिमा अनावरण समारोह में बतौर मुख्य अतिथि सम्मिलित होने जाने के क्रम में एनडीए गठबंधन के सम्मानित साथियों ने जोरदार स्वागत किया गया है।

रैड क्रास गया के नये सचिव बने डॉ तनवीर उस्मानी

गया। रेड क्रॉस भवन, गया में प्रबंधन समिति के नव निर्वाचित सदस्यों की बैठक आयोजित की गई है । निवार्ची अधिकारी सह ए डी एम ला और आर्डर की उपस्थिति में नए पदाधिकारियों का चयन किया गया जो इस प्रकार है:चेयरमैन - उपेन्द्र नारायण सिंह,वाइस चेयरमैन - डा. राम सरेख सिंह,कोषाध्यक्ष - बिजेंद्र सिंह सचिव - डा. तनवीर उस्मानी। यह पदाधिकारी आगामी 3 वर्षो के लिए सामाजिक और मानवता के लिए किए जाने वाले सभी क्रिया कलापों की देखरेख करेंगे ।

23 लाख से अधिक लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाने का रखा लक्ष्य

प्रात: किरण संवाददाता

गया। आयुष्मान भारत कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जिला में मुख्यमंत्री आरोग्य योजना के तहत गरीब राशनकार्डधारकों का आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए शिविर लगाया जा रहा है ।सभी जनवितरण प्रणाली दुकानों पर शिविर लगाकर आयुष्मान कार्ड बनाया जाना है। इसके लिए बीडीओ एवं मार्केटिंग ऑफि सर समन्वय स्थापित कर अधिक से अधिक लोगों का आयुष्मान कार्ड बनावायें। आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति रिपोर्ट जिला को प्रतिवेदित करेंगे. यह बातें जिला पदाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम ने समाहरणालय सभागार में आयुष्मान भारत कार्यक्रम को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक के दौरान कही है। उन्होंने कहा कि गरीब राशनकार्डधारियों का कार्ड बनें और उनमें इसके बारे में जागरूकता लायी जाये ताकि अधिक से अधिक कार्ड बन सकें ।बीडीओ एवं एमओ को निर्देश दिया कि जनवितरण प्रणाली दुकानों पर सात बजे से काम प्रारंभ हो जाना चाहिए। आयुष्मान भारत के इस विशेष अभियान के लिए आशा, जीविका और आंगनबाड़ी के कर्मियों द्वारा लाभार्थियों को नजदीकी जनवितरण प्रणाली दुकानों पर लाने का काम करें। सभी प्रखंड आपूर्ति निरीक्षक और जनवितरण प्रणाली दुकानों के डीलर समन्वय स्थापित कर विशेष अभियान को सफल बनाने में अपनी सहभागिता दें।

1878 जनवितरण प्रणाली दुकान हुए टैग जिला में 18 जुलाई से जनवितरण प्रणाली दुकानों पर शिविर लगाकर आयुष्मान कार्ड बनाने की शुरूआत हो गयी है।यह विशेष अभियान 31 जुलाई तक चलेगा। डीपीसी जय अनुराग ने बताया कि वर्तमान में जिला में कुल 34,07,516 आयुष्मान कार्ड लाभार्थी को चिन्हित किया गया हैं जिसमें अब तक कुल 11,02, 142 आयुष्मान कार्ड निर्गत किया चुका है। इस विशेष अभियान में शेष बचे कुल 23,05,374 लाभार्थियों का कार्ड बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

विशेष अभियान के तहत जिले के चिन्हित एक हजार 878 जनवितरण प्रणाली दुकानों को टैग किया गया है। इस संबंध में बताया कि मुख्यमंत्री आरोग्य योजना के तहत सभी राशनकार्ड धारकों का हेल्थ कार्ड बनाया जा रहा है। आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए कागजात आयुष्मान कार्ड बनाने के लिए अपने नजदीकी जनवितरण प्रणाली दुकान पर आधार कार्ड, राशन कार्ड एवं मोबाइल लेकर जायें। यह वे जरूरी कागजात हैं जिसकी वहां जरूरत होती है। इसके लिए अपने क्षेत्र के प्रखंड आपूर्ति निरीक्षक एवं जनवितरण प्रणाली दुकानों के डीलर से संपर्क करें ।विशेष अभियान में लक्षित लाभार्थी मोहनपुर 81360 ,डोभी 69024,बाराचट्टी 69413 गुरुआ 88283,खिजरसराय 88942 ,अतरी 47633,बेलागंज 87713 ,मानपुर 72429,कोंच 99770 ,आमस 54605,गुरारू 71120,वजीरगंज 108339नीमचक बथानी 46865,परैया 51393,टनकुप्पा 65460,फतेहपुर 114594,बोधगया 131312,टिकारी 133938,बांकेबाजार 76958,इमामगंज 125134,शेरघाटी 90644 ,मोहड़ा 64176,डुमरिया 91591,गया सदर 291552।

इतने पीडीएस दुकानों पर लगेगा कैंप: आमस 52,अतरी 29,बांकेबाजार 68,बाराचट्टी 72,बेलागंज 70,बोधगया 81,डोभी 64,डुमरिया 112,फतेहपुर 89,सदर प्रखंड 81,गुरारू 56,गुरुआ 85,इमामगंज 182,खिजरसराय 82,कोंच 73,मानपुर 65,मोहनपुर 89,मोहड़ा 41,नीमचक बथानी 43,परैया 45,शेरघाटी 146,टनकुप्पा 58,टिकारी 115 ,वजीरगंज 80

इंडिया गठबंधन की बैठक में प्रतिरोध मार्च निकालने का निर्णय

प्रात: किरण संवाददाता

हाजीपुर। बिहार में बढ़ते अपराध की घटनाओं, हत्या, भष्ट्राचार के विरुद्ध इंडिया गठबंधन दलों की संयुक्त बैठक राष्ट्रीय जनता दल के जिला कार्यालय में जिला अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ सिंह चन्द्रवंशी की अध्यक्षता में हुई। वैशाली जिला राजद के अध्यक्ष श्री वैद्यनाथ सिंह चन्द्र वंशी बैठक को सम्बोधित करते हुए बताया की राज्य में बढ़ती अपराधिक घटनाओं व लचर कानून व्यवस्था के खिलाफ इंडिया गठबंधन दलों द्वारा दिनांक 20 जुलाई, 2024 को जिला मुख्यालय पर प्रतिरोध मार्च निकाल कर जिला अधिकारी को संयुक्त ज्ञापन सौपेगें। उन्होंने महागठबंधन के साथियों सहित राजद के सभी विधायकगण, पूर्व विधायकगण, पार्षदगण, राजद के प्रदेश पदाधिकारी एवं जिला राजद के पदाधिकारी एवं सभी प्रकोष्ठ के पदाधिकारी एवं कार्यकताओं को भारी संख्या में शामिल होने का अह्वान किया है। बैठक में प्रदेश महासचिव श्री अनिल चन्द्र कुशवाहा, प्रधान महासचिव संजय राय, जिला युवा राजद अध्यक्ष संजय पटेल, माले के नेता विशेश्वर प्रसाद यादव, काँग्रेस के नेता उत्तम प्रसाद यादव, सीपीआई के विश्वनाथ विपल्लवी, राजद के उपाध्यक्ष राजेश कुमार शर्मा, जिला प्रवक्ता रंजीत यादव, माले के नेता दिनबंधु प्रसाद सहित अन्य लोग उपस्थित हुए।

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए मुंगेर के शिक्षकों को मिला राष्ट्रीय सम्मान

प्रात: किरण संवाददाता

मुंगेर सदर शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए मुंगेर जिला के शिक्षिका शोभा कुमारी प्रेम सखी एवं शिक्षक अरविंद कुमार सिंह को राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया है ।इन शिक्षकों ने मुंगेर जिला का मन सम्मान बढ़ाया' है।

इन्हे संपतपाल सिंह राठौर स्मृति राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान इन्हे जनदृष्टि व्यवस्था सुधार मिशन द्वारा उत्तर प्रदेश के बदायूं में आयोजित एक दिवसीय संतपाल सिंह राठौर स्मृति राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान समारोह में देश भर 151 नवाचारी शिक्षकों के साथ मिला इस सम्मान समारोह का। आयोजन प्रभाशंकर मेमोरियल स्काउट भवन बदायूं में प्रख्यात शिक्षाविद् रामबहादुर पांडेय की अध्यक्षता में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि नगर विधायक महेश चंद्र गुप्ता एवम जनदृष्टी व्यवस्था सुधार मिशन के अध्यक्ष श्री हरि प्रताप सिंह राठौर ने उन्हें सम्मान स्वरूप मोमेंटो प्रमाण पत्र एवम अंग वस्त्र भेट किया एवं उज्जवल भविष्य की कामना की है। शिक्षिका शोभा कुमारी प्रखंड बरियारपुर, शिक्षिका प्रेम सखी प्रखंड खड़गपुर शिक्षक अरविंद कुमार सिंह प्रखंड खड़गपुर के शिक्षक है ड्यूटी के साथ-साथ सामाजिक कार्यों में भी बढ़ चढ़कर योगदान करता रहता है।

न्यायधीश को दी गई भावभीनी विदाई

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद के एसीजेएम सह सब जज डॉ राजेश कुमार सिंह के पदोन्नति पर न्यायधीशों और अधिवक्ताओं ने बधाई व विदाई दी। अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि पटना हाईकोर्ट ने न्यायधीश डॉ राजेश कुमार सिंह को व्यवहार न्यायालय सुपौल का सीजेएम बनाया है। 26 मई 23 से न्यायधीश डॉ राजेश कुमार सिंह व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में बहुत तेजी से वादों का सुनवाई करते थे। जिनके तबादला के खबर सुनते ही जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद में उदासी फैल गई, और सबजज के कई कोर्ट रिक्त से वादों के सुनवाई के प्रति चिंता बढ़ गई है, आज व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में न्यायधीश डॉ राजेश कुमार सिंह को साल बुके मेमेंटो और माला देकर सम्मानित किया गया। सम्मानित करने वाले न्यायधीश एडीजे आंनद भूषण, एडीजे सौरव सिंह, एसीजेएम डॉ फतेह दिवान, अविनाश कुमार, प्रथम श्रेणी न्यायिक दंडाधिकारी शोभित शौरभ, ओमप्रकाश नारायण सिंह, शुभांकर शुक्ला, इनके अलावे जिला विधिज्ञ संघ औरंगाबाद के अध्यक्ष विजय कुमार पाण्डेय महासचिव जगनरायण सिंह, पूर्व अध्यक्ष रसिक बिहारी सिंह, पूर्व महासचिव जगनरायण सिंह, स्पेशल पीपी शिवलाल मेहता सहित कार्यसमिति के अधिकांश सदस्य उपस्थित थे।

कोईलवर के दो तेज तर्रार पुलिस निरीक्षकों को मिली पुलिस उपाधीक्षक पद पर प्रोन्नति

आरा। बिहार के 103 पुलिस इंस्पेक्टरों को डीएसपी में प्रोन्नति दी गई है। इस संबंध में गृह विभाग की तरफ से अधिसूचना जारी कर दी गई है। बिहार पुलिस के निरीक्षक स्तर से अधिकारियों को पुलिस उपाधीक्षक वेतनमान स्तर-9 में प्रमोशन दिया है। 2024 की शुरूआत में भी पुलिस इंस्पेक्टरों को डीएसपी के रूप में प्रोन्नति दी गई थी। नव प्रोन्नत पुलिस अधिकारियों को पद भार ग्रहण करने की तिथि से आर्थिक लाभ मिलेगा।इसी कड़ी में कोईलवर के दो तेज तर्रार पुलिस निरीक्षकों को भी पुलिस उपाधीक्षक पद पर प्रोन्नत किया गया है। कोईलवर नगर पंचायत के वार्ड 03 निवासी विजय कुमार गुप्ता और वार्ड 06 निवासी मेराज हुसैन को भी डीएसपी बनाया गया है। उनकी प्रोन्नति की खबर पाकर पूरे नगर पंचायत में खुशी का माहौल है। लोगों ने अपने गांव के लाल के डीएसपी बनने पर बधाई दी है। बता दें कि पुलिस निरीक्षक से पुलिस उपाधीक्षक में प्रोन्नत पाए दोनों अधिकारी 1994 बैच के सब इंस्पेक्टर हैं। अपने सेवाकाल में दरोगा से लेकर इंस्पेक्टर तक इन्होंने बिहार के कई जिलों में सेवा दी और अपनी तेज तर्रार और पैनी कार्यकुशलता से इन्होंने कई कांडो का सफल उद्भेदन भी किया है। बहरहाल कोईलवर के दोनों तेज तर्रार पुलिस निरीक्षकों के पुलिस उपाधीक्षक बनने पर नगर में हर्ष का माहौल है। आसपास के लोगों ने परिजनों से मिलकर उन्हें मुबारकबाद दी है।

अंजाम देने से पूर्व एक अपराधी को पुलिसने किया गिरफ्तारी

प्रात: किरण संवाददाता

आरा:भोजपुर पुलिस अधीक्षक प्रमोद कुमार यादव ने अपने कार्यालय में प्रेस वार्ता कर दी जानकारी भोजपुर पुलिस की बड़ी उपलब्धि... उदवंतनगर थानान्तर्गत किसी बड़ी घटना को अंजाम देने से पूर्व 01 अपराधकर्मी, 03 अवैध अग्नेयास्त्र एवं 08 जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार में रात्रि पहर दिनांक-18.07.24 को समय 1:00 बजे गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम गड़हा में एक व्यक्ति अपने घर में हथियार छिपाकर रखा हुआ है, जो किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के फिराक में है, त्वरित रेड / छापामारी करने पर उसके पास से हथियार बरामद किया जा सकता है। उक्त आसूचना का सत्यापन, अवैध आग्नेयास्त्र की बरामदगी तथा अपराधकर्मी की गिरफ्तारी हेतु रामकल्याण यादव, पु०नि०-सह-थानाध्यक्ष उदवंतनग थाना के नेतृत्व में प्र०पु०अ०नि० नितीश कुमार उदवंतनगर थाना एवं थाना के सशस्त्र बलों के साथ एक विशेष टीम का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए समय करीब 2:00 बजे ग्रीम गड़हा उक्त व्यक्ति के घर के पास पहुंचा तो पुलिस टीम को देखते हीं 01 व्यक्ति भागने लगा, जिसे सशस्त्र बलों के सहयोग से खदेड़कर पकड़ लिया गया। पकड़ाये गये व्यक्ति के घर की विधिवत तलासी लिया गया तो उसके घर के अन्दर मूंसा में छिपाकर रखे 01 देशी रायफल, 02 देशी कट्टा एवं 08 जिंदा कारतूस बरामद हुआ। इस संबंध में उदवंतनगर थाना कांड सं0-303/24 दि0-18.07.24 धारा-25(1-ु)/26 अ९२ अ३ दर्ज किया गया हैं।

वर्ग 3 की नन्ही छात्रा ने पेश की ईमानदारी की अदभुत मिशाल

महूआ आप सबों ने एक कहावत जरूर सुनी होगी : ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है इस ब्रह्म वाक्य पर चलते हुए महुआ मध्य विद्यालय ,कन्या की तीसरी कक्षा की छात्रा दीपांशु कुमारी ने ईमानदारी की अदभुत मिसाल पेश की। जिसकी चर्चा सर्वत्र हो रही है ।बताते चले की चकमजाहिद गांव के रामप्रवेश कुमार की पुत्री दीपांशी प्रत्येक दिन की तरह अपने घर से विद्यालय आ रही थी, रास्ते में उसे एंड्राइड मोबाइल गिरी हुई मिली ।वह मोबाइल को अपने साथ लेकर विद्यालय आई और आते के साथ अपने प्रधानाध्यापक के कक्ष में उस मोबाइल को जमा कर दी। प्रधानाध्यापक एवं अन्य शिक्षकों ने मोबाइल धारक को मोबाइल की जानकारी दी। मोबाइल धारक दौड़े दौड़े विद्यालय पहुंचे, जहां पर दीपांशु के हाथों से ही उन्हें मोबाइल वापस किया गया। मोबाइल धारक भी गद्दोपुर के संतोष पंडित बताए जाते हैं ।इस नन्ही सी बच्ची की ईमानदारी की चर्चा विद्यालय के शिक्षकों, उनके सहपाठियों के साथ-साथ क्षेत्र के सभी लोगों के जुबान पर सिर चढ़कर बोल रही है ।आज के जमाने में जहां आधुनिक बच्चों द्वारा मोबाइल से चिपके नजर आते हैं, वही इस नन्ही सी बच्ची ने महंगी मोबाइल को भी वापस करना मुनासिब समझा। अपने शिक्षकों के माध्यम से मोबाइल धारक को वापस कर अपने गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त किया ।विद्यालय के प्रधानाध्यापक राम लगन भारती, शिक्षक सत्येंद्र कुमार ,अमित कुमार, कुमार सरोज के साथ साथ बिहार राज्य प्रारम्भिक शिक्षक संघ के जिला सचिव पंकज कुशवाहा, जिला उपाध्यक्ष ललित दास, संजय कुमार सुमन, सकिंदर कुमार सहित अन्य ने अपने विद्यार्थी के सर्वोत्तम कार्य के लिए भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की है।

जिला परिषद उपाध्यक्ष ने पथ और पुलिया का किया मांग

गया। गया जिला परिषद उपाध्यक्ष सह राजद के वरिष्ठ नेता डॉ शितल प्रसाद यादव ने बिहार सरकार के लधू उधौग मंत्री सह गया जिला के प्रभारी मंत्री नीतीश मिश्रा से एक ज्ञापन देकर बाराचट्टी विधानसभा क्षेत्र के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यह क्षेत्र काफी पिछड़ा इलाका है ।यह हमारा श्रेत्र पड़ता है इस क्षैत्र में रोड एवं पुल का बहुत आवश्यकता है गोखुला नदी में बहुत ही पुराना पुल है जो काफी जर्जर हालत में है,गजरागढ बाजार होतै हुए नया जी टी रोड तक बने पुल पर बहुत गड्डा हो गई है इसे पथ निर्माण विभाग द्वारा कराया जाए ।वही पंचायत बारा के ग्राम बाराडीह से बल्थर भाया सेवाई तक पथ निर्माण विभाग, मोहनपुर प्रखंड के मटिहानी पंचायत के ग्राम परसोनी मोड़ से भाया इटहरी गांव तक पथ नाली का निर्माण,वही मटिहानी पंचायत के ग्राम गणेश चक्र पथ का एम आर कराया जाए, और भी कयी मांग को जिला परिषद उपाध्यक्ष ने जल्द से जल्द करवाने की मांग प्रभारी मंत्री से की है।

ताजिया जुलूस में मारपीट व पत्थर बाजी से कई लोग जख्मी, स्थिति नियंत्रण में

प्रात: किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर।मुंगेर ताजिया जलूस के मौके पर खड़गपुर में दो इमामबाड़ा अखाड़ों के लोगों के बीच जमकर लाठी भाला तलवारबाजी और पत्थर बाजी किया गया । इस घटना में एक दर्जन लोगों के घायल होने का समाचार प्राप्त हुआ है ।पुलिस सूत्रों ने बताया कि मुख्य बाजार स्थित इमामबाड़ा के समीप जमकर मारपीट की घटना में दोनों ओर से लगभग एक दर्जन लोग घायल हुए हैं ।जानकारी के अनुसार मोहर्रम की दशमी पर बुधवार की सुबह मन ओला और रोशन नगर का जुलूस और अखाड़ा जब पुरानी चौक से आगे बढ़ने लगा तभी दोनों मोहल्ले के अखाड़े के नौजवानों के बीच कहां सुनी हुई । पुरानी चौक और थाना चौक के बीच स्थित इमामबाड़ा के समीप दोनों अखाड़े के उत्तेजित युवकों और शरारती तत्वों ने एक दूसरे से भिड़ गए। दोनों ओर से लाठी तलवार और लोहे के कटीले और धारदार हथियार का जमकर प्रयोग हुआ । रोशन नगर अखाड़ा और मंसूर टोला अखाड़ा के नौजवान ने एक दूसरे पर जमकर ईंट पत्थर बरसाए जिसमें दोनों ओर से लगभग एक दर्जन लोग जख्मी हो गए। जिसमें मंसूर टोला के मोहम्मद निजाम मोहम्मद जमील उद्दीन मोहम्मद दिलखुश और मोहम्मद और गंभीर रूप से जख्मी हो गए जबकि घटना में जख्मी कई लोग अपना इलाज निजी चिकित्सक से करा रहे हैं। प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया की ताजिया जुलूस को आगे बढ़ाने को लेकर दोनों पक्षों के बीच विवाद की घटना हुई। अनुमंडल प्रशासन और अनुमंडल पुलिस प्रशासन के प्रयास से मामला शांत हुआ।

सड़क निर्माण कार्य मे लगाया गया घटिया सामग्री 4 माह में बर्बाद

प्रात: किरण संवाददाता

शेरघाटी। प्रखंड क्षेत्र के एक ऐसा गाँव जहाँ पांच गांव के लगभग 25 हजार की आबादी को जोड़ने वाली पथ के कच्ची होने का मलाल ग्रामवासियों बरकरार है। सभी गांव को सड़क, बिजली देने के सरकार के दावे को आइना दिखा रही है बौली सड़क ।घटना ढाब चिरैया पंचायत के ग्राम घुजी टोला बौली मुसहरी सड़क पर बरसात में चलना मुश्किल है। देश एक ओर जहां अमृत महोत्सव मना रहा है , वहीं गांव के लोग सड़क के लिए तरस रहे हैं। ग्रामीणों ने बताया कि दूसरे छोर से चार महीने पहले बनाई गई पीसीसी सड़क फट रहा है। पूरे सड़क के गिट्टी बाहर आ गए हैं। सड़क घटिया तरीके से निर्माण किया गया है। लोगों ने कहा कि बौली मुसहरी टोला होकर सैदपुर से गोपालपुर मुख्य मार्ग तक का कच्ची सड़क को पक्कीकरण की आवश्यकता है । इस रूट में ग्राम पचाडी, पचरतन, भंगी डीह, घुज्जी आदि गांव के लगभग 25 हजार की आबादी का सीधा संबंध है। सड़क की कमी से विकास प्रभावित है। रोजगार और काम की कमी के कारण लोगों को प्रतिदिन गांव से बाहर जाना पड़ता है। सड़क नहीं होने से कठिनाई हो रही है। इस गांव में एक नर्सिंग कॉलेज भी है। रामप्रताप ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, आदि तक यही सड़क पहुंचती है।

ग्रामीण बोले

वार्ड सदस्य पवन कुमार ने कहा कि भंगी डीह से बौली तक लगभग ढाई किलोमीटर पीसीसी सड़क चार माह पूर्व ही बनाया गया था। सही तरीके से निर्माण नहीं किए जाने के कारण जगह-जगह फट गया है वहीं दूसरी ओर सड़क निर्माण में लगाए गए गिट्टी बाहर निकल गए हैं। जो घटिया निर्माण कहा जा सकता है।

2 एक नर्सिंग स्कूल के निदेशक नीतीश कुमार ने बताया कि सड़क का निर्माणकार्य मे गुणवत्तापूर्ण मेटीरियल नही दिये जाने के कारण चार माह में ही सड़क खराब हो गया।

इसी प्रकार का आरोप गांव के भुनाथ उर्फ अखिलेश चौधरी, जीतन मांझी, कैलाश मांझी भी लगाते हैं।

3 मंजू देवी

वार्ड 14 की मंजू देवी ने कहा कि हमलोग को पीने का पानी सही से नहीं मिल रहा है। यहां नल जल योजना भी नहीं है। देवी मंदिर के पास नल जल की आवश्यकता है। इससे पूरे वार्ड में पानी मिल जाएगा।

4 गुड़िया कुमारी मांझी बताती है कि बीमार होने पर 7 किलोमीटर दूर शेरघाटी जाना पड़ता है। उप स्वास्थ्य केंद्र भांगीडीह में है जहां 15 में एक दिन नर्स दीदी आती हैं।

5 विनय यादव

सड़क खराब रहने से विकास प्रभावित है। गांव की गली अंधेरे में रहता है ।सोलर लाइट का प्रस्ताव गया है। लेकिन अब तक लगा नहीं है।

किस तरह के सड़क निर्माण कार्य में बढ़ते गए अनियमितता के कारण आज सड़क की स्थिति वेद से वतर और गड्ढे में सड़क या सड़क में गड्ढा यह स्पष्ट ही नहीं हो पा रहा है।

भले ही सरकार लाखों रुपए खर्च कर सड़क निर्माण कार्य करवाती है,लेकिन ठेकेदार और जेइइ के मिली भगत से निर्माणकार्य में अनिमितता काफी बरता गया,जिसका जिम्मेदार कौन है यह कहा नहीं जा सकता है,

ऐसे लोगों पर सख्त कार्रवाई होनी चाहिए इधर बातचीत के दौरान कुछ लोगों का कहना है कि निर्माण कार्य में हुए अनियमितता के सड़क तुरंत खराब हो गया।

डीएम ने मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर लाईट अधिष्ठापन कार्यों की समीक्षा

प्रात: किरण संवाददाता

अरवल। जिला पदाधिकारी वर्षा सिंह की अध्यक्षता में विडियो कॉन्फ्रंसिंग के माध्यम से मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर लाईट अधिष्ठापन कार्यों की समीक्षा की गई। समीक्षा के क्रम में जिला पदाधिकारी द्वारा मुख्यमंत्री ग्रामीण सोलर लाईट अधिष्ठापन से संबंधित जानकारी ली गई। जिला पंचायत राज पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि द्वितीय चरण में मे० श्री सावित्र सोलर प्रा०लि० को अरवल प्रखण्ड अंतर्गत 11 पंचायतों के लिए एल०ओ०आई० दिया जा चुका है, परन्तु उक्त फर्म द्वारा पी०बी०जी० अप्राप्त है। करपी प्रखण्ड अंतर्गत कुल 14 पंचायतों का एल०ओ०आई० दिया गया है, परन्तु उनसे पी०बी०जी० अप्राप्त है। साथ ही यह भी बताया गया कि श्री सावित्र सोलर प्रा०लि० के द्वारा वंशी प्रखण्ड अंतर्गत सोलर अधिष्ठापित है। कुर्था प्रखण्ड अंतर्गत 09 पंचायतों में कार्यादेश निर्गत है। इस संबंध में श्री सावित्र सोलर प्रा०लि० द्वारा बताया गया कि शीघ्र ही पंचायतों में सोलर स्ट्रीट लाईट अधिष्ठापित करने की कार्रवाई की जायेगी। इसी प्रकार मे० सोलेक्श प्रा० लि० को एल०ओ०आई० दिया जा चुका है परन्तु पी०बी०जी० अभीतक अप्राप्त है। इस संबंध में जिला पदाधिकारी द्वारा निदेशित किया गया कि उत्तम गुणवत्ता युक्त सोलर लाईट का अधिष्ठान एवं ससमय अनुरक्षण, मरम्मती का कार्य करना सुनिश्चित करेंगे। बैठक में सभी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, सभी प्रखण्ड पंचायत राज पदाधिकारी, कनीय अभियंता, ब्रेडा तथा सोलर सिस्टम अधिष्ठापन हेतु नामित फर्म मे० श्री सावित्र सोलर, प्रा०लि० एवं मे० सोलेक्श एनर्जी लि० के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

बिना क्रिएटिविटी के दुकान बनकर रह जाएगी इंडस्ट्री, स्टार सिस्टम टूटना चाहिए

एक्टर राजीव खंडेलवाल इस वक्त सीरीज शोटाइम को लेकर चर्चा में हैं, जिसके पहले सीजन का दूसरा पार्ट ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर आएगा। राजीव ने फिल्म इंडस्ट्री की खामियों के साथ-साथ स्टार्स और आंकड़ों पर गहरी बात कही।

स्टार्स की असुरक्षा, ताकत के दुरुपयोग की खबरें आम है। जैसा सीरीज में आपका किरदार अरमान करता है कि काबिल को-स्टार को निकलवा देता है। आखिर इतने इनसिक्योर क्यों होते हैं स्टार?

आपका सवाल सही है पर हमारे जो स्टार या सीनियर एक्टर हैं, उनसे मैं इतना करीब नहीं हूं कि इस बारे में पुख्ता जवाब दे सकूं। दूसरे, ये किरदार कई एक्टर्स का मिश्रण है। किसी को कोई डर होता है, किसी का कुछ, सबको मिलाकर अरमान को गढ़ा गया है, पर जैसा आपने कहा, हम सुनते रहते हैं कि एक स्टार ने दूसरे के सीन कटवा दिए, मुझे लगता है कि ऐसा तब होता है जब आपको पता होता है कि मेरा स्टारडम टैलेंट की वजह से नहीं है। बस मेरी पिछली पांच फिल्मों ने 100 करोड़ कमा लिए हैं, वो कैसे कमाए मुझे पता नहीं है पर मेरा स्टारडम इस वजह से है। ऐसे में, कोई और मेरे सामने अच्छा परफॉर्म करेगा तो मेरे टैलेंट की पोल खुल जाएगी। इसलिए आप चाहेंगे कि मेरे साथ कम टैलेंटेड लोग ही काम करें। फिर पब्लिक को आपने आंकड़े दिखा दिए, भले ही सच में वो फिल्म देखें या न देखें और हमारी इंडस्ट्री इतनी अजीब है कि निर्माता को पता है कि यह डेटा नकली हैं फिर भी वो घूम-फिरकर उधर ही पहुंच जाते हैं।

आपको लगता है कि फिल्मों के कंटेंट के बजाय कमाई और करोड़ क्लब पर जोर इंडस्ट्री के लिए नुकसानदेह है?

बिल्कुल, अभी अच्छी या बुरी फिल्म के बारे में कोई बात नहीं करता। आप फिल्म के कंटेंट के बारे में बोलो कि मजा नहीं आया, बकवास है, मगर बोलते क्या हैं कि अरे, उसने तो पांच करोड़ ही कमाए है, फिल्म डब्बा हो गई है। अगर सब ऐसे बात करेंगे तो कंटेंट की बात कौन करेगा? फिर आपको पता भी नहीं है कि वो आंकड़े सही भी हैं या नहीं। अभी तो लोग खुद ही टिकटें बुक करने लगे हैं, कॉर्पोरेट बुकिंग होती है। कुल मिलाकर, अब ये सिर्फ धंधा रह गया है। इंडस्ट्री सिर्फ पैसा बनाने के बारे में रह गई है। मैं उम्मीद करता हूं कि जो चंद लोग कंटेंट की सोचते हैं, उन्हें वो ताकत और सपोर्ट मिले कि वह भी बचा रहे। धंधा तो चलता ही रहेगा पर वह इतना हावी न हो जाए, क्योंकि क्रिएटिविटी भी हमारी इंडस्ट्री का बड़ा हिस्सा रही है। तभी तो पहले की इतनी सारी परफॉर्मेंसेज, कहानी, गाने, संगीत सब हमें याद है। वही सब चला जाएगा तब तो ये पूरी तरह एक दुकान बनकर रह जाएगी।

इंडस्ट्री में जो स्टार सिस्टम है, उसके बारे में आपकी क्या राय है? आपको नहीं लगता कि फिल्म से ज्यादा स्टार को तवज्जो देना जायज नहीं है?

स्टार सिस्टम हर इंडस्ट्री में होता है। कार्पोरेट में भी आप उसी कंपनी के साथ काम करते हैं जो मुनाफा देती है। यहां भी वही है। सबको पता है कि स्टार की हजार मांगें गलत है, ये चीज इंडस्ट्री को कमजोर कर रही है पर मेरा फायदा हो रहा है तो हम चलाए जा रहे हैं। आज बड़ी चर्चा होती है कि प्रोड्यूसर एक्टर्स की डिमांड पर बहुत पैसा खर्च करते हैं लेकिन आपने ही यह स्थिति पैदा की। आप ही ने उसे दो गाड़ियां भेजी होंगी, कोल्ड कॉफी पिलाई होगी। अब आपको दिक्कत हो रही कि ये तो डिमांड बढ़ती जा रही पर आपने ही ये राक्षस बनाया है तो अब भुगतो। स्टार सिस्टम टूटना चाहिए क्योंकि फिल्म सिर्फ स्टार से नहीं बनती। उसमें राइटिंग उतनी ही अहम है। स्पॉट बॉय का योगदान उतना ही बड़ा है। प्रोडक्शन का रोल उससे भी बड़ा है, पर जब एक फिल्म आती है तो वो एक्टर के नाम से जानी जाती है कि फलां एक्टर की फिल्म चल गई। जबकि एक्टर ने न तो फिल्म बनाई थी, न लिखी थी। फिर वो फिल्म का माई बाप कैसे हो गया? ये सोचने वाली बातें हैं।

घरवाले चाहते थे मैं सीए बनूं पर फिर सिटीलाइट्स मिल गई

सिटीलाइट्स से फिल्मी पारी की शुरुआत करने वाली पत्रलेखा इन दिनों फिल्म वाइल्ड वाइल्ड पंजाब में नजर आ रही हैं। खास बातचीत में पत्रलेखा ने बताया कि उनका परिवार उन्हें सीए बनाना चाहता था, लेकिन तभी उन्हें डेब्यू फिल्म ऑफर हुई थी। एक्ट्रेस ने पति राजकुमार राव से अपने रिश्ते पर भी बातें बताई हैं।

सिटीलाइट्स फिल्म से आपने अच्छी शुरुआत की थी, आपकी फिल्म को सराहना भी मिली, मगर फिर बीच में लंबा गैप क्यों हो गया?

मैं लगातार काम तो करती गई, मगर बात बनी नहीं उन फिल्मों में। सिटीलाइट्स के बाद मुझे उस तरह का दमदार काम भी नहीं मिला। मेरे पास बहुत ज्यादा ऑप्शंस नहीं थे, इसके बावजूद मैं काम करती गई। फिर आ गया पेंडेमिक, मगर पेंडेमिक मेरे लिए काफी फायदेमंद रहा, क्योंकि उसी दौरान ओटीटी का उदय हो रहा था। तब काफी शोज और मूवीज बन रही थीं और मैंने जमकर काम किया। और अब सब एक-एक करके स्ट्रीम और रिलीज होने की कगार पर हैं।

सुना है कि आपके घरवाले आपको सीए बनाना चाहते थे, मगर फिर आप अभिनय के क्षेत्र में आ गईं?

मेरे डैड सीए थे, तो वे चाहते थे कि मैं उनके ऑफिस का कार्यभार संभालूं। असल में मैं मैथ और अकाउंट्स में भी काफी अच्छी थी। मेरा मन भी था कि डैड की विरासत को आगे बढ़ाऊं, मगर मैं उस दिशा में जा नहीं पाई। मुझे लगता है किस्मत भी एक चीज होती है। जब मैंने पापा के सामने अभिनेत्री बनने की इच्छा जाहिर की, तो उन्हें शुरुआत में थोड़ा बुरा जरूर लगा, मगर जब मुझे विज्ञापन फिल्मों में काम मिलने लगा, तो उन्हें लगा कि 2-3 साल काम कर लूं और इस क्षेत्र में अगर बात नहीं बनी, तो सीए का एग्जाम दे दूं। मगर उसी दौरान मुझे अपनी पहली फिल्म सिटीलाइट्स मिल गई और मेरा अभिनय का सफर शुरू हो गया।

आपके करियर का सबसे मुश्किल दौर और अच्छा दौर कौन-सा था?

मेरे करियर का सबसे मुश्किल दौर था सिटीलाइट्स के बाद के पांच साल। जब मेरे पास कोई काम नहीं था। न तो मुझे कोई काम दे रहा था, न ही कुछ क्लिक हो रहा था। सब यही कहते रहते थे कि तुम अच्छी एक्ट्रेस हो, मगर समझ में नहीं आता कि तुम्हारे साथ क्या करें? असल में उन्हें मुझे कास्ट ही नहीं करना था। अच्छा दौर, तो पिछले 2-3 साल से रहा है, जहां मैं लगातार काम कर रही थी। मुझे लगता है कि आपकी कड़ी मेहनत और फोकस कभी बेकार नहीं जाती। एक न एक दिन तो तीर निशाने पर लगता ही है।

आप और राजकुमार राव पति-पत्नी होने के नाते एक-दूसरे को परिपूर्ण कैसे करते हैं?

हम दोनों एक-दूसरे के सबसे बड़े सपोर्टर हैं। उनकी कामयाबी मेरी कामयाबी है। मेरी सफलता उनकी सफलता है, ठीक उसी तरह उनका फेल्योर मेरा है और मेरा उनका। हमारा सब कुछ साझा है। हम लोग गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं।

अक्षय कुमार और अरशद वारसी की जॉली एलएलबी 3 की शूटिंग पूरी

अरशद वारसी अभिनीत जॉली एलएलबी और अक्षय कुमार की जॉली एलएलबी 2 को दर्शकों और समीक्षकों का भरपूर प्यार मिला था। इन दोनों भागों की सफलता के बाद निर्माताओं ने फिल्म के तीसरे भाग का एलान कर दिया था। फिल्म की शूटिंग भी तेजी से की गई, जिसकी झलकियां प्रशासकों को समय-समय पर देखने को मिली। वहीं अब दर्शकों के लिए एक और दिलचस्प खबर सामने आई है, जो इसकी शूटिंग से जुड़ी हुई है। अक्षय कुमार और अरशद वारसी की मुख्य भूमिकाओं वाली जॉली एलएलबी फ्रेंचाइजी की बहुप्रतीक्षित तीसरी किस्त ने आखिरकार अपनी शूटिंग पूरी कर ली है। सुभाष कपूर निर्देशित इस फिल्म के बारे में नई जानकारियां एक्स अकाउंट पर साझा किए गए एक वीडियो के जरिए मिली, जहां टीम मार्टिनी शॉट नाम के आखिरी शॉट का जश्न मनाने के लिए एक साथ आई थी। वीडियो में फिल्म के क्रू मेंबर्स को ऑफिस सेटिंग में शूटिंग पूरी होने पर ताली बजाते और चीयर करते हुए देखा गया। जॉली एलएलबी 3 की शूटिंग अजमेर और राजस्थान में की गई है, जिसमें से ज्यादातर शूटिंग अजमेर के एक वास्तविक कोर्ट रूम में 40 दिनों से ज्यादा समय तक चली। इस साल की शुरुआत में अक्षय ने राजस्थान शेड्यूल के खत्म होने की घोषणा करते हुए एक वीडियो साझा किया था।

अभिषेक बनर्जी की स्त्री 2 और वेदा होगी एक ही दिन रिलीज, बोले- यह खुद से क्लैश जैसा

एक्टर अभिषेक बनर्जी ने कई बेहतरीन फिल्मों और वेब सीरीज में काम किया है। उन्होंने अपनी दमदार एक्टिंग से अलग पहचान बनाई है। उनकी दो फिल्में स्त्री 2 और वेदा एक ही दिन यानी 15 अगस्त को रिलीज होने वाली है। अभिषेक ने कहा, एक ही दिन दो फिल्मों का रिलीज होना अवास्तविक लगता है। यह बॉक्स ऑफिस पर खुद से क्लैश जैसा है! एक्टर ने कहा कि वह यह नहीं चुन सकते कि कौन सी फिल्म उनके दिल के ज्यादा करीब है।

उन्होंने कहा, मैं यह नहीं चुन सकता कि कौन सी फिल्म मेरे दिल के ज्यादा करीब है, क्योंकि यह अपने पसंदीदा बच्चे को चुनने या यह तय करने जैसा है कि आप मम्मी या पापा में से ज्यादा किससे प्यार करते हैं। लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि यह मेरे फैंस के लिए एक ही दिन में मेरे दो अलग-अलग पहलुओं को देखने का एक शानदार अवसर है। राजकुमार राव और श्रद्धा कपूर स्टारर स्त्री 2 एक हॉरर कॉमेडी है, जबकि जॉन अब्राहम स्टारर वेदा एक जबरदस्त एक्शन थ्रिलर है। अभिषेक के बारे में बात करें तो उनका जन्म 5 मई 1985 को पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में हुआ, लेकिन पढ़ाई दिल्ली से हुई। उन्होंने दिल्ली के केंद्रीय विद्यालय, एंड्रयूज गंज से स्कूलिंग की। स्कूल के दिनों में वह डीडी के शो भी करते थे। इसके अलावा दिल्ली में थिएटर भी करते थे। उन्होंने अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत आमिर खान स्टारर फिल्म रंग दे बसंती से की। एक्टर के अलावा, वह कास्टिंग डायरेक्टर भी हैं। उन्होंने नॉक आउट, द डर्टी पिक्चर, नो वन किल्ड जेसिका, बजाते रहो, डियर डैड्र दो लफ्जों की कहानी, रॉक ऑन 2, उमरिका, गब्बर इज बैक, कलंक, ओके जानू, टॉयलेट- एक प्रेम कथा, सीक्रेट सुपरस्टार और मिकी वायरस में बतौर कास्टिंग डायरेक्टर काम किया।

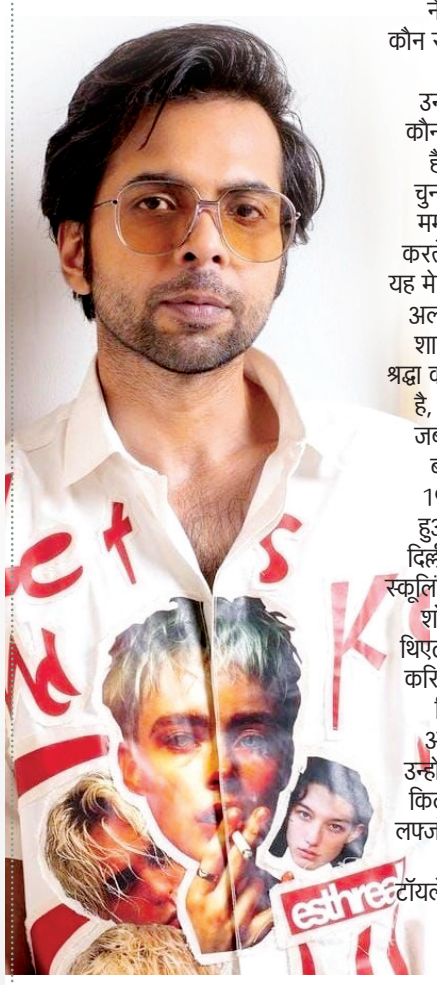

कम उम्र की महिला की भूमिका नहीं निभाना चाहती हैं तब्बू

बॉलीवुड अभिनेत्री तब्बू अपनी आगामी फिल्म औरों में कहां दम था की रिलीज का इंतजार कर रही हैं। इस फिल्म में वह अभिनेता अजय देवगन के साथ नजर आएंगी। दोनों को एक बार फिर स्क्रीन पर देखने के लिए दर्शक काफी उत्सुक हैं। उन्होंने हाल ही में उम्र के हिसाब से किरदारों पर बात की है। उन्होंने कहा कि हाल ही में बड़ी उम्र के कलाकारों ने स्क्रीन पर युवा किरदार निभाना शुरू कर दिया। तब्बू ने कहा कि पहले जब उम्र कम होने का कॉन्सेप्ट नहीं था, तब अलग-अलग अभिनेता हीरो का युवा किरदार निभाते थे।

युवा महिला की भूमिका नहीं निभाना चाहती तब्बू

तब्बू ने हाल ही में एक बातचीत में कहा कि वह अभिनेताओं के विपरीत अब स्क्रीन पर एक युवा महिला की भूमिका नहीं निभाना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि अगर उन्हें इस तरह के किरदार ऑफर हुए, तो वो नहीं करेंगी। उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि वह अब 30 साल की लड़की भूमिका निभाने के लिए तैयार होंगी। अभिनेत्री ने स्पष्ट रूप से कहा कि उनके पास अपनी उम्र को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। तब्बू ने आगे कहा कि दर्शकों ने देखा है कि वे कलाकार अब कैसे दिखते हैं। हालांकि, युवा भूमिकाएं निभाने वाले बड़े अभिनेताओं के किरदार फिल्म और उसके कॉन्सेप्ट पर निर्भर करती है। कई बार ये काफी अच्छा काम कर सकता है। मगर औरों में कहां दम था के लिए उन्हें इसकी आवश्यकता नहीं थी। नीरज पांडे के निर्देशन में बनी ये फिल्म 2 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

मीना कुमारी की बायोपिक में हुई देरी, कृति के साथ इस दिन फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे मनीष!

दिवंगत अभिनेत्री मीना कुमारी के प्रशंसक मनीष मल्होत्रा द्वारा बनाई जा रही उनकी बायोपिक का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जिसमें कृति सेनन मुख्य अभिनेत्री की भूमिका में होंगी। दरअसल, साल 2023 में खबर आई थी कि सेलिब्रिटी फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा दिग्गज अभिनेत्री मीना कुमारी के जीवन पर आधारित एक बायोपिक का निर्देशन करेंगे। बाद में साल में, उन्होंने इस बात की पुष्टि की और खुलासा किया कि वह स्क्रिप्ट पर काम कर रहे हैं। वहीं अब फिल्म की शूटिंग के बारे में नई जानकारी सामने आई है। पहले ही हो चुकी है एक साल की देरी मीना कुमारी की बायोपिक को लेकर ताजा जानकारी यह है कि इस फिल्म के लिए दर्शकों को और इंतजार करना होगा, क्योंकि इसकी शूटिंग को अगले साल तक के लिए टाल दिया गया है। रिपोर्ट्स के अनुसार, मनीष मल्होत्रा ने अपने निर्देशन की पहली फिल्म की घोषणा अक्तूबर से 2025 की शुरुआत तक टाल दी है। बायोपिक का टलना कोई नई बात नहीं है। मूल रूप से अक्तूबर 2023 में रिलीज होने वाली इस फिल्म में एक साल की देरी हुई।

कृति सेनन करेंगी पहली बायोपिक

कृति सेनन दस साल से अभिनय कर रही हैं, लेकिन यह उनकी पहली जीवनी है। फिल्म का शीर्षक अभी तय नहीं किया गया है। फिल्म में वे मीना कुमारी के जीवन को पर्दे पर उतारेंगी। वहीं कृति की आने वाली फिल्म की बात करें तो वे अगली बार मिस्ट्री-थ्रिलर फिल्म दो पत्ती में नजर आएंगी, जिसमें वे काजोल के साथ स्क्रीन साझा करेंगी। नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली यह फिल्म ब्लू बटरफ्लाई फिल्म्स के बैनर तले उनकी पहली प्रोडक्शन भी होगी।

बेतहाशा बढ़ी उर्वशी के इंस्टाग्राम फॉलोअर्स की संख्या

उर्वशी रौतेला का सोशल मीडिया पर भौकाल रहता है। इंस्टाग्राम पर उनके फॉलोअर्स की संख्या 74 मिलियन होने की कगार पर है। फिलहाल उनके फॉलोअर्स की संख्या, 73.3 मिलियन हैं। अभिनेत्री को इस उपलब्धि पर दुनियाभर से बधाई मिल रही है। उर्वशी ने एक वीडियो साझा कर लिखा है, जब दुनियाभर से फैंस 74 मिलियन के लिए बधाई देने लगें, लेकिन आप नरेंद्र मोदी जी से अब भी पीछे ही हों। उर्वशी के इस पोस्ट पर यूजर्स अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं, एक यूजर ने लिखा, फॉलोअर्स की संख्या महत्वपूर्ण नहीं, आपका आगे बढ़ते रहना मायने रखता है।

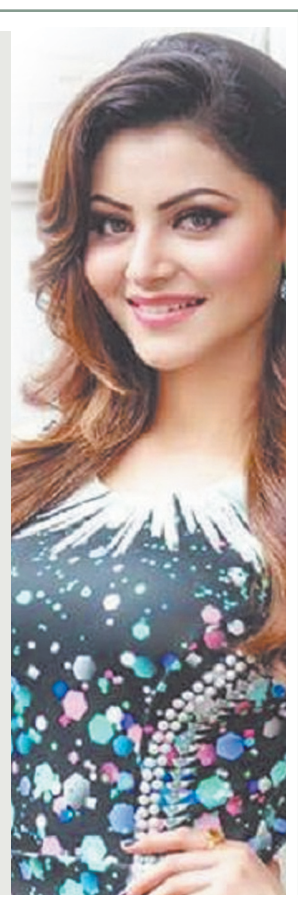

निर्यात में वृद्धि, स्थानीय मुद्रा में व्यापार, एफटीए से भारत-रूस वाणिज्य को बढ़ावा मिलेगा

नई दिल्ली, एजेंसी। निर्यात बढ़ाने, स्थानीय मुद्रा व्यापार को व्यावहारिक बनाने और यूरेशियन आर्थिक संघ के साथ मुक्त व्यापार समझौता जैसे कदमों से भारत और रूस के बीच व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने बृहस्पतिवार को एक रिपोर्ट में कहा कि भारत को व्यापार घाटे को लेकर चिंतित नहीं होना चाहिए, क्योंकि उसे रूस से बाजार मूल्य से सस्ते दाम पर कच्चा पेट्रोलियम तेल मिल रहा है। इससे भारत का समग्र तेल आयात बिल भी कम हो रहा है। फरवरी 2022 में यूक्रेन युद्ध शुरू होने तथा अमेरिका द्वारा रूस पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद से भारत और रूस के बीच व्यापार संबंधों में काफी बदलाव आया है। रूस से आयात में तीव्र वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया, वित्त वर्ष 2020-21 और 2023-24 में निर्यात 59 प्रतिशत बढ़ा, जबकि आयात में करीब 8,300 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। व्यापार घाटा 2020-21 में युद्ध से पहले के 2.8 अरब अमरीकी डॉलर से बढ़कर वर्तमान में 57.2 अरब अमरीकी डॉलर हो गया है।

बजट: सीमा शुल्क को युक्तिसंगत बना सकता है केंद्र, घरेलू उद्योगों की रक्षा के लिए लिया जा सकता है फैसला

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकार पूर्ण बजट में देश को वैश्विक विनिर्माणकेंद्र बनाने और घरेलू उद्योगों की रक्षा के लिए इस्पात, सौर बैटरी, एल्युमीनियम और लिथियम सेल सहित विभिन्न क्षेत्रों में सीमा शुल्क को युक्तिसंगत बना सकती है। इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (आईसीसी) के अध्यक्ष अमेय प्रभु ने कहा, कच्चे माल पर शुल्क से घरेलू कंपनियों और खासकर डाउनस्ट्रीम इकाइयों पर असर पड़ता है।

इसलिए, इन क्षेत्रों में घरेलू उद्योग को बढ़ाने के लिए सुरक्षात्मक उपायों की आवश्यकता है।इन उपायों के जरिये हम घरेलू विनिर्माण को मजबूती से बढ़ावा देकर भारत को वैश्विक केंद्र बना सकते हैं। मिश्रित पेट्रोलियम गैस पर शुल्क 2.5 फीसदी करने की सिफारिश आईसीसी अध्यक्ष ने कहा, मिश्रित पेट्रोलियम गैस पर शुल्क को पांच फीसदी से घटाकर 2.5 फीसदी किया जाना चाहिए।ऐसा कर उलटे शुल्क ढांचे में सुधार लाया जा सकता है।उन्होंने सरकार से लाभांश पर कर नही लगाने की भी सिफारिश की है।

1700 के पार जाएगा ड्रोन कंपनी का शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। जेन टेक्नोलॉजीज के शेयर आज गुरुवार को कारोबार के दौरान फोकस में हैं। कंपनी के शेयर आज कारोबरा के दौरान 4 प्रतिशत तक चढ़कर 1405 रुपये के इंट्रा डे हाई पर पहुंच गए। इधर, घरेलू ब्रोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज ने इस शेयर पर कवरेज शुरू किया है और इसे खरीदने की सलाह दी है। मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज ने जेन टेक्नोलॉजीज के शेयरों पर बाय रेटिंग दी है और 1,775 रुपये प्रति शेयर के टारगेट प्राइस के साथ कवरेज शुरू किया है।

ब्रोकरेज फर्म को उम्मीद है कि कंपनी इंडस्ट्रीज की तुलना में बहुत तेज गति से बढ़ेगी। इस मार्जिन काफी मजबूत रहेगा और अन्य डिफेंस सेक्टर में अपनी कैपासिटीज का विस्तार करेगी। ब्रोकिंग हाउस का यह भी मानना है कि जेन टेक्नोलॉजीज की मौजूदा ऑर्डर बुक हेल्दी रेवेन्यू जेनरेट कर रही है और इसका एसेट-लाइट मॉडल संभावित रूप से मजबूत आरओई और आरओसीई उत्पन्न कर सकता है। इसका एएमसी कारोबार कुछ सालों में उत्पाद कारोबार के अनुरूप बढ़ने की उम्मीद है।

संक्षिप्त समाचार

रेमेडियम लाइफकेयर लिमिटेड का बोर्ड 1000 करोड़ रुपये के विशेष रसायन कंपनी के अधिग्रहण पर विचार करेगा

मुंबई, एजेंसी। एपीआई इंटरमीडिएट्स (केएसएम और सीआरएम) और एपीआई व्यापार के लिए आवश्यक विभिन्न अन्य कच्चे माल के व्यापार में संलग्न रेमेडियम लाइफकेयर लिमिटेड (बीएसई-539561) ने घोषणा की है कि उसका बोर्ड 8 अगस्त 2024 को वैश्विक उपस्थिति वाली विशेष रसायन क्षेत्र की एक असूचीबद्ध कंपनी के अधिग्रहण पर विचार करने के लिए बैठक करेगा। यह अधिग्रहण स्टॉक स्वैप और वैकल्पिक रूप से परिवर्तनीय डिबेंचर जारी करके किया जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप 100त्न खरीद होगी। अधिग्रहण मूल्य लगभग 1000 करोड़ रुपये होने की उम्मीद है, जो मूल्यांकन मापदंडों पर सहमति और लक्षित कंपनी के वित्त और कानूनी औपचारिकताओं की उचित जांच के पूरा होने के अधीन है। बोर्ड 30 जून 2024 को समाप्त तिमाही के लिए अनऑडिटेड स्टैंडअलोन वित्तीय परिणामों पर भी विचार करेगा और उन्हें मंजूरी देगा।

विश्वास स्वरूपम ने 15 लाख पर्यटकों का आंकड़ा पार किया

नाथद्वारा, (राजस्थान)। राजस्थान के नाथद्वारा में स्थित विश्वास स्वरूपम, जिसे स्टैच्यू ऑफ बिलीफ के नाम से भी जाना जाता है, ने नवंबर 2022 में उद्घाटन के बाद से अब तक 15 लाख से अधिक पर्यटकों का स्वागत किया है, जो एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। भगवान शिव की यह 369 फीट ऊंची मूर्ति तेजी से भारत में एक प्रमुख आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्थल बन गई है, जो देशभर के पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। यह जानना भी दिलचस्प होगा कि यह मूर्ति दुनिया में भगवान शिव की सबसे बड़ी मूर्तियों में से एक है, जो 32 एकड़ में फैली हुई है और कुल ऊंचाई 112 मीटर (34 मीटर आधार सहित) है, इसे 2.5 लाख क्यूबिक टन कंक्रीट से बनाया गया है। इस मूर्ति का जीवनकाल लगभग 250 वर्ष अनुमानित किया गया है। इसे 250 किमी प्रति घंटे तक की हवाओं को आसानी से झेलने और भूकंपीय क्षेत्र ढ्ढङ्क में भी स्थिर रहने के हिसाब से डिज़ाइन किया गया है।

'मेरा बलम थानेदार' में बरखा बिष्ट ने रहस्यमयी महिला के रूप में एंट्री लेकर हंगामा

मुंबई, एजेंसी। कलर्स का मनोरंजक पारिवारिक ड्रामा 'मेरा बलम थानेदार' एक अजीब बदलाव के साथ कहानी में मिठास घोलने वाला है। अपनी दिलचस्प कहानी के लिए प्यार बटोरने के बाद, आईपीएस अधिकारी वीर (शगुन पांडे) और उत्साही बुलबुल (श्रुति चौधरी) के वैवाहिक सफर को दर्शाने वाला, यह शो मीठी माई के रूप में अभिनेता बरखा बिष्ट का स्वागत करेगा। मीठा मीठा बोलो के तकियाकलाम के साथ, शो की यह नई सदस्य भगवान कृष्ण को समर्पित एक सुंदर गॉडवुमन है, जिसके एक हाथ में बांसुरी और दूसरे हाथ में टॉफी से भरी थैली है। एक साल की गहन तपस्या करने के बाद, मीठी माई अपने अजमेर आश्रम में लौट आती है, जिनके पीछे उनकी चमत्कारी प्रार्थनाओं की कसम खाने वाले भक्तों का जत्था है। ऐसा लगता है कि भगवान कृष्ण के मन में इस संत के लिए विशेष स्थान है, जिन्होंने उसे ऐसी अद्भुत शक्तियों का आशीर्वाद दिया है जो हर किसी को उनके सामने नतमस्तक और हैरान कर देता है। क्या उनके रहस्यमय तरीके वीर और बुलबुल के पहले से ही अस्त-व्यस्त ज़िंदगी में और भी उथलपुथल मचाएंगे? इसके अलावा, क्या वह वाकई चमत्कार करती हैं या फिर यह बस ढोंग है? यह तो आने वाला समय बताएगा।

कार को टैक्सी बनाएंगे तो बीमा का दावा गंवाएंगे

बचने के लिए इन बातों का ध्यान रखना जरूरी

नई दिल्ली, एजेंसी। बीमा कंपनियां वाहन बीमा दावों की प्रक्रिया सरल बनाने की कोशिश कर रही हैं। एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस ने हाल ही में आर्टिफिशल इंटेलिजेंस के जरिये गाड़ी के निरीक्षण की तकनीक को व्हाट्सऐप चैटबॉट में डाल दिया। इससे ग्राहक 20,000 रुपए तक के मामूली नुकसान के लिए होने वाले दावे तुरंत निपटा लेंगे। पॉलिसीबाजार ने क्लेम एश्योरेंस प्रोग्राम शुरू किया, जिसमें ग्राहकों को उनके दावे के लिए खास क्लेम मैनेजर मिलेगा और गाड़ी को नेटवर्क के गैराज तक ले जाने की सुविधा भी दी जाएगी।

कंपनियां तो यह सब कर रही हैं मगर ग्राहकों को भी कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। उन बातों का ध्यान रखना और उनसे बचना बहुत जरूरी है, जिनकी वजह से उनके दावे खारिज हो सकते हैं।

दावे खारिज होने के बड़े कारण

यदि कोई पॉलिसीधारक अपनी पॉलिसी से बेजा फायदा लेने के लिए फर्जी दावा करता है तो बीमा कंपनी उसे खारिज कर देगी। एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस में निदेशक और चीफ बिजनेस ऑफिसर पार्थनील घोष कहते हैं, 'अगर दावा पॉलिसी की जोखिम अवधि खत्म होने के बाद किया गया है तो कंपनी उसे खारिज कर देगी।' वाहन बीमा वाहनों की खास श्रेणियों के लिए बेचा जाता है। अगर आप निजी कार के लिए बीमा ले रहे हैं तो आपसे निजी इस्तेमाल के हिसाब से ही प्रीमियम वसूला जाएगा। एको इंश्योरेंस के चीफ अंडरराइटिंग ऑफिसर अनिमेष दास समझाते हैं, 'अगर आप अपनी कार को टैक्सी की तरह इस्तेमाल करते है और दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं तो आपका दावा नहीं माना जाएगा।' थर्ड पार्टी बीमा के बगैर गाड़ी चलाने पर भी दावे खारिज हो सकते हैं। पॉलिसीबाजार डॉट कॉम में हेड (मोटर इंश्योरेंस रीन्यूअल्स, क्लेम्स ऐंड कस्टमर एक्सपीरिएंस) संदीप सराफ का कहना है, 'मोटर यान अधिनियम के मुताबिक हरेक ग्राहक के पास वैध थर्ड पार्टी बीमा होना चाहिए। अगर ग्राहक उसके बगैर दावा करता है तो खारिज कर दिया जाएगा।' वाहनों को मोटर यान अधिनियम का पालन करते हुए सार्वजनिक सड़कों पर ही चलाया जाना चाहिए। घोष का कहना है, 'अगर रजिस्ट्रेशन के बगैर या शराब पीकर या वैध लाइसेंस के बगैर गाड़ी चलाते हैं तो भी आपका दावा खारिज हो सकता है।'

बरतें एहतियात

यातायात के नियमों का उल्लंघन करने से बचें। आईसीआईसीआई लोम्बार्ड में हेड (कॉरपोरेट अंडरराइटिंग ऐंड क्लेम्स) गौरव अरोड़ा कहते हैं, 'यातायात को अनदेखा करना, तेज गति में चलाना, ओवरटेक करना, गलत साइड पर गाड़ी चलाना और क्षमता से ज्यादा लोगों को गाड़ी में भरना ऐसी चूक हैं, जिनसे बचना चाहिए।' उनकी सलाह है कि ऐसे किसी व्यक्ति को अपनी गाड़ी न चलाने दें, जिसके पास वैध लाइसेंस नहीं है।सराफ हादसा होते ही हरकत में आने की सलाह देते हैं।

वह कहते हैं कि दुर्घटना होने के 24 से 72 घंटों के भीतर इसकी जानकारी बीमा कंपनी को दे देनी चाहिए। अगर आप वाहन में बदलाव करते हैं मसलन उसमें सीएनजी किट लगाते हैं तो बीमा कंपनी को जरूर बता दें। सराफ कहते हैं, 'जो भी बदलाव किए गए हैं, वे गाड़ी के रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट (आरसी) में चढ़वाने चाहिए और बीमा कंपनी को भी इसके बारे में इत्तिला करना चाहिए।' गलत जानकारी देने से भी बचें। गाड़ी को पहले हुए नुकसान का दावा इस बार के नुकसान के साथ करने की कोशिश भी नहीं होनी चाहिए।

57 लाख लगाए और 111 करोड़ कमाए...

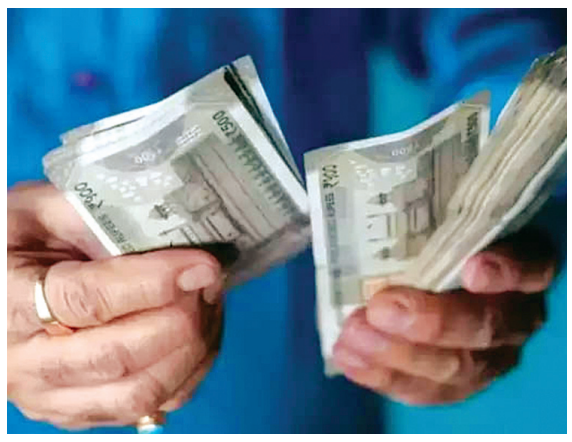

नई दिल्ली, एजेंसी। ई-कॉमर्स फर्म स्नैपडील और निवेश फंड टाइटन कैपिटल के फाउंडर कुणाल बहल और रोहित बंसल की लॉटरी लग गई है। उन्होंने 2015 में होम सर्विसेज प्लेटफॉर्म अर्बन कंपनी में 57 लाख रुपये का निवेश किया था और इस पर उन्हें 200 गुना रिटर्न मिला है। सूत्रों के मुताबिक बहल और बंसल ने अर्बन कंपनी में अपनी पूरी हिस्सेदारी 111 करोड़ रुपये में वी कैपिटल की कंपनी धारणा कैपिटल को बेच दी है। उनके अलावा कंपनी के कुछ कर्मचारियों ने भी सेकेंडरी डील के तहत अपने स्टॉक ऑप्शन बेच दिए हैं।

बहल ने अर्बन कंपनी से बाहर निकलने की पुष्टि की, लेकिन इस बारे में ज्यादा जानकारी नहीं दी। टाइटन कैपिटल ने जिन अन्य निवेशों में 100 गुना या उससे अधिक रिटर्न बनाया है, उनमें ओला कैब्स, ऑफबिजनेस और क्रेडजेनिक्स शामिल हैं। बहल और बंसल ओला कैब्स से पूरी तरह निकल चुके हैं जबकि उन्होंने क्रेडजेनिक्स से आंशिक निकासी की है। ऑफबिजनेस में उनकी हिस्सेदारी बनी हुई है। टाइटन कैपिटल ने एक बयान में कहा कि अर्बन कंपनी अब मजबूत स्थिति में पहुंच चुकी है।

इंडेल मनी का अंडमानमें प्रवेश

द्वीपों में छह शाखाएँ खोली गईं

इन द्वीपों में व्यापार के अवसरों का दोहन करने और स्थानीय समुदायों की ऋण की मांग को पूरा करने के लिए एनबीएफसी की पहल

मुंबई, एजेंसी। गोल्ड लोन क्षेत्र की गैर-बैंकिंग वित्त कंपनी (एनबीएफसी) इंडेल मनी ने अंडमान द्वीप समूह में छह शाखाएं खोली हैं। कंपनी का लक्ष्य द्वीपों के नागरिकों को तेज़ और सुविधाजनक वित्तीय सेवाएँ प्रदान करना है। कंपनी के अध्यक्ष मोहनन गोपालकृष्णन ने गरचरमा, जंगलीघाट, विंबर्लीगंज, हड्डो, एबरडीन बाजार और प्रोथ्रापुर स्थित छह शाखाओं का उद्घाटन किया। पहलेसेही 13 राज्यों में मौजूद, कंपनी राष्ट्रव्यापी विस्तार योजना के एक हिस्से के रूप में, 8 शाखाएं खोलकर अगस्त 2024 में राजस्थान में प्रवेश करने के लिए तैयार है। इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए इंडेल मनी के कार्यकारी निदेशक और सीईओ उमेश मोहनन ने कहा, वर्तमान में, अंडमान द्वीप समूह के क्षेत्र में वित्तीय सेवाएं सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं। दरअसल यहां पर्यटन उद्योग बड़े पैमाने पर है। इस उद्योग से जुड़े स्थानीय आबादी को ऋण और वित्तीय सेवाओं की त्वरित आवश्यकता होती है। पारंपरिक ऋण देने वाली कंपनियां यहां पर्याप्त सेवाएं प्रदान करने में असमर्थ हैं। इंडेल मनी जैसी गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) इस अंतर को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में योगदान दे रही हैं। अंडमान में हमारे व्यवसाय का विस्तार देश के हर कोने तक पहुंचने और वित्तीय समावेशन और सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हुए प्रत्येक नागरिक की सेवा करने की हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। इंडेल मनी ने हाल ही में अहमदाबाद में अपनी 300वीं शाखा खोली है। कंपनी का गुजरात, ओडिशा, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पुडुचेरी और केरल इन राज्यों में एक बड़ा नेटवर्क है। राजस्थान और पश्चिम बंगाल में भी अगली तिमाही में कंपनी की सेवा शुरू हो जाएगी। कंपनी विभिन्न वित्तीय आवश्यकताओं वाले ग्राहकों को गोल्ड लोन सेवाओं का एक व्यापक सेट प्रदान करती है।

मेटा द्वारा भारत के व्यवसायों के लिए मेटा वैरिफाईड सदस्यता शुरू की गई

मेटा वैरिफाईड भारत में व्यवसायों के लिए इंस्टाग्राम और फेसबुक पर उपलब्ध हो रहा है।

मुंबई, एजेंसी। मेटा ने भारत में फेसबुक और इंस्टाग्राम पर व्यवसायों के लिए मेटा वैरिफाईड सब्सक्रिप्शन प्लान पेश किए हैं। कंपनी ने पिछले साल एक छोटे से परीक्षण के साथ व्यवसायों के लिए मेटा वैरिफाईड शुरू किया था, जिसका उद्देश्य यह जानना था कि मेटा किस प्रकार अपने ऐप्स पर व्यवसायों को अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सबसे उपयोगी सदस्यता टूलकिट प्रदान कर सकता है। इससे पहले इस साल मेटा ने अपने प्रारंभिक परीक्षण का विस्तार कर एक सदस्यता प्लान को चार तक ले जाने की घोषणा भी की थी, और कंपनी ने पिछले साल व्हाट्सऐप पर व्यवसायों के लिए मेटा वैरिफाईड का लॉन्च कर इसे आगे बढ़ाया, जिसकी घोषणा इसकी कन्वर्सेशंस कॉन्फरेंस के दौरान की गई थी। फेसबुक और इंस्टाग्राम पर इस विस्तारित मेटा वैरिफाईड व्यवसायिक प्रस्तुति में बेहतर अकाउंट सपोर्ट, इम्पर्सनेशन सुरक्षा, और डिस्कवरी एवं कनेक्शन को सपोर्ट करने के लिए अतिरिक्त फीचर्स के साथ वैरिफाईड बैज शामिल है।

टाटा पावर वित्त वर्ष 2025 में 20,000 करोड़ रुपये कैपेक्स निवेश करेगी

मुंबई, एजेंसी। भारत की अग्रणी एकीकृत बिजली कंपनियों में से एक टाटा पावर ने आज वित्त वर्ष 2023-24 के लिए शेयरधारकों की अपनी 105वीं वार्षिक आम बैठक (एजीएम) आयोजित की थी। शेयरधारकों को संबोधित करते हुए चेयरमैन श्री नटराजन चंद्रशेखरन ने कहा कि, कंपनी का मजबूत वित्तीय और परिचालन प्रदर्शन लगातार विकास, वित्तीय विवेक और परियोजना को चलाने में उत्कृष्टता के प्रति इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। टाटा पावर के चेयरमैन श्री एन चंद्रशेखरन ने कहा, वित्त वर्ष 2025 में 20,000 करोड़ रुपये का कैपेक्स निवेश करने की टाटा पावर की योजना है। यह वित्त वर्ष 2024 में निवेश किए गए 12,000 करोड़ रुपये से अतिरिक्त है।

मिआ बाए तनिष्क के नेवर बिफोर सेल में आकर्षक ऑफर्स का लाभ उठाइए

मिआ बाए तनिष्क के शानदार आभूषणों के मेकिंग चार्जेस पर 110 प्रतिशत तक की भारी छूट पाइए

मुंबई, एजेंसी। भारत के सबसे बड़े फाइन ज्वेलरी ब्रांड्स में से एक, मिआ बाए तनिष्क ने नेवर बिफोर सेल की घोषणा की है। इस एक्सक्लूसिव ऑफर में उपभोक्ताओं को मेकिंग चार्जेस पर मिलेगी 110 प्रतिशत तक की छूट, स्टाइलिश आभूषणों को बहुत ही आकर्षक कीमतों में खरीदने का यह सुनहरा मौका है। एक से बढ़कर एक, बेहद खूबसूरत और स्टाइलिश आभूषणों की विशाल श्रेणी को इस सेल में शामिल किया गया है, आभूषणों से प्यार करने वाले हर व्यक्ति को इसमें अभूतपूर्व खुशी मिलेगी। मिआ बाए तनिष्क के इस अपनी तरह के अनोखे ऑफर में 1 आभूषण की खरीदी पर मेकिंग चार्जेस पर 50 प्रतिशत की छूट मिलेगी, 2 आभूषण खरीदने पर मेकिंग चार्जेस पर 100 छूट मिलेगी। 4 आभूषण खरीदने पर उनमें से सबसे कम कीमत का आभूषण फ्री मिलेगा। आपके पुराने तनिष्क या मिआ प्रोडक्ट एक्सचेंज कीजिए और ऊपर दी गयी ऑफर्स के अलावा पाइए 10 अतिरिक्त छूट। 18 जुलाई से शुरू हो रहे इस सेल में मिआ बाए तनिष्क की अपने उपभोक्ताओं को मूल्य प्रदान करने की प्रतिबद्धता रेखांकित की जाएगी। सेल का सबसे ज़्यादा लाभ उठाने के लिए स्टोर में आकर खरीदारी करें, यादगार खरीदारी की खुशी और संतुष्टि पाएं। स्टड्स, फिंगर रिंग्स, ब्रेसलेट्स, इयररिंग्स, ईयर कफ्स, नेकलेस और पेंडेंट्स के कई अलग-अलग शानदार डिज़ाइन पर यह स्पेशल ऑफर लागू है। चमचमाते सोने के आभूषणों में आंखें चकाचौंध कर देने वाले हीरे जड़े हुए कई स्टाइल इसमें हैं। पार्टियों से लेकर एनिवर्सरी, कॉकटेल इवनिंग और जन्मदिवस तक, खास पलों को मिआ बाए तनिष्क के साथ यादगार बनाइए।

महिला एशिया कप : जीत के साथ शुरूआत करना चाहेगी टीम इंडिया, पाकिस्तान से पहला मैच

दाम्बुला(एजेंसी)। गत चैम्पियन भारतीय महिला क्रिकेट टीम एशिया कप के पहले मैच में आज को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से खेलेगी और अक्टूबर में होने वाले टी20 विश्व कप की तैयारियों के लिये इस टूर्नामेंट को काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हरमनप्रीत की कप्तानी वाली भारतीय टीम का एशिया कप में दबदबा रहा है जिसने चार में से तीन टी20 खिताब और चारों बार 50 ओवरों के प्रारूप में जीत दर्ज की है।

महिला एशिया कप टी20 टूर्नामेंट में भारत ने 20 में से 17 मैच जीते हैं। उसने 2022 में फाइनल में बांग्लादेश को हराया था। पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने इस टूर्नामेंट में 14 मैचों में 11 जीत दर्ज की है और हरमनप्रीत कौर का लक्ष्य इस सिलसिले को आगे बढ़ाने का होगा। इस महीने की शुरूआत में भारत ने दक्षिण अफ्रीका से 1-1 से ड्रॉ खेला जबकि तीन टी20 मैचों में से दूसरा बारिश में धुल गए।

पाकिस्तान का मनोबल गिरा हुआ होगा जिसे मई में इंग्लैंड ने 3-0 से हराया था। भारत के लिए सबसे अच्छी बात स्मृति मंधाना का शानदार फॉर्म है और हाल ही में गेंदबाजों ने एक ईकाई के रूप में बेहतरीन प्रदर्शन किया है। तेज गेंदबाज पूजा वस्त्राकर ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों में आठ विकेट लिए जबकि स्पिनर राधा यादव भी कामयाब रही है।

स्पिनरों में दीप्ति शर्मा, सजीवन साजना और श्रेयांका पाटिल शामिल है। पाकिस्तान ने एशिया कप के लिए निदा दर को कप्तान बनाए रखा है लेकिन टीम में काफी बदलाव किये गए हैं। ईरम जावेद, ओमैमा सोहेल और सैयदा आरूब शाह को इस साल पहली बार टीम में जगह मिली है जबकि तस्मिया रूबाब पदार्पण करेंगी। ग्रुप ए में नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात का भी सामना पहले दिन होगा। दोनों ग्रुप से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल खेलेंगी। नेपाल 2016 के बाद पहली बार टूर्नामेंट में खेल रहा है जबकि यूएई का यह लगातार दूसरा टूर्नामेंट है।

टीमें

भारत = हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना, शेफाली वर्मा, जेमिमा रौड्रिग्स, रिचा घोष, उमा छेत्री, पूजा वस्त्राकर, दीप्ति शर्मा, अरूंधति रेड्डी, रेणुका सिंह, डी हेमलता, आशा शोभना, राधा यादव, श्रेयांका पाटिल, संजीवन साजना।

पाकिस्तान

निदा दार (कप्तान), आलिया रियाज, डायना बेग, फातिमा सना, गुल फिरोजा, ईरम जावेद, मुनीबा अली, नजीहा अल्वी, नाशरा संधू, ओमैमा सोहेल, सादिया इकबाल, सिदरा अमीन, सैयदा अरूब शाह, तस्मिया रूबाब, तूबा हसन।

शिखर बने मोटोजीपी के ब्रांड एंबेसडर

मुंबई -यूरोस्पोर्ट इंडिया ने भारत में मोटोजीपी के लिए ब्रांड एंबेसडर के रूप में भारतीय क्रिकेट आइकन शिखर धवन की नियुक्ति की आज घोषणा की। धवन यूरोस्पोर्ट इंडिया के अभियान, 'फेस कर रेस कर के जरिए रेसिंग के प्रति अपने जुनून का प्रदर्शन करेंगे।

धवन ने कहा, 'प्रतिष्ठित मोटोजीपी के साथ इसके भारत के राजदूत के रूप में साझेदारी करना मेरे लिए सम्मान की बात है। भारत में मोटोजीपी को लेकर बढ़ता उत्साह वास्तव में रोमांचकारी है, और यह मेरे लिए एक पूर्ण-चक्र क्षण जैसा है, खासकर जब मैं अपने गृहनगर, दिल्ली की सड़कों पर अपनी पसंदीदा बाइक की सवारी करने के अपने दिनों को याद करते हुए सोचता हूं। इस जीवंत शहर में जन्मे और पले-बढ़े एक क्रिकेटर के रूप में मेरी यात्रा यूरोस्पोट इंडिया के माध्यम से इस नई भूमिका के साथ एक व्यक्तिगत संबंध जोड़ेगी। 2024 मोटोजीपी सीजन में अब तक 9 रेस हो चुकी हैं। यूरोप, एशिया और डाउन अंडर में 11 और दौड़ें निर्धारित हैं, जिनका समापन दो अगस्त से सिल्वरस्टोन में ब्रिटिशजीपी के साथ होगा। मौजूदा 2024 सीजन के लीडर, फ्रांसेस्को बगानिया (डुकाटी लेनोवो टीम) को जॉर्ज मार्टिन (प्रामैक डुकाटी) पर केवल 10 अंकों की बढ़त के साथ कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है।

चेन रुओलिन: 23 साल में लिया संन्यास

नईदिल्ली, एजेंसी। चीन ओलिंपिक के सबसे सफल देशों में शामिल है। हर ओलिंपिक में अमेरिका और चीन में सबसे ज्यादा मेडल जीतने की टक्कर होती है। लेकिन क्या आपको पता है कि टीम की सबसे सफल ओलिंपियन कौन है? चीन के लिए 4 खिलाड़ियों ने सबसे ज्यादा 5-5 मेडल जीते हैं। इसमें एक ऐसी भी खिलाड़ी का नाम है, जिसने सिर्फ 23 साल की उम्र में ही खेल से संन्यास ले लिया था। उस खिलाड़ी का नाम है- चेन रुओलिन।डाइविंग की खिलाड़ी चेन रुओलिन ने घरेलू बीजिंग ओलिंपिक में ही डेब्यू किया था। तब उनकी उम्र 15 साल थी। उन्होंने बीजिंग 10 मीटर प्लेटफॉर्म और 10 मीटर सिंक्रो प्लेटफॉर्म में गोल्ड मेडल जीता था। फिर लंदन ओलिंपिक में भी इन दोनों इवेंट में गोल्ड पर कब्जा जमाया।चेन का जन्म जिआंग्सू के नानटोंगमें हुआ था। वह 2016 में हुए रियो ओलिंपिक में सिर्फ सिंग्रो प्लेटफॉर्म इवेंट में ही उतरीं। यहां भी उन्होंने गोल्ड मेडल पर कब्जा जमाया। उन्होंने 2014 यूथ ओलंपिक में मशाल प्रज्वलित की थी।अक्टूबर 2016 में 23 साल की उम्र में चेन को संन्यास लेना पड़ा। रियो ओलिंपिक से पहले ही उनके गर्दन में समस्या थी। इसके कारण एक ही इवेंट में क्वालीफाई कर पाई थीं। अगर वह खेलना जारी रखती तो जीवन को भी खतरा हो सकता था।चेन रुओलिन चीन की सबसे सफल ओलिंपियन में शामिल हैं। वह ओलिंपिक में 5 गोल्ड जीतने वाली टीम की चार खिलाड़ियों में एक हैं।

बीसीसीआई सचिव जय शाह पर रहेगी नजर, बन सकते हैं चेयरमैन

नई दिल्ली -अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के कोलंबो में शुक्रवार से शुरू होने वाले चार दिवसीय वार्षिक सम्मेलन के दौरान सभी की निगाहें भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह पर होंगी जहां इस बात पर गंभीर चर्चा हो सकती है कि वह न्यूजीलैंड के ग्रेग बार्कले से वैश्विक संस्था के अध्यक्ष का पद कब संभालेंगे।

शुक्रवार को बोर्ड की बैठक के साथ शुरू होने वाले आईसीसी सम्मेलन में वैश्विक संस्था द्वारा अमेरिका में टी20 विश्व कप मैचों की मेजबानी में दो करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक के नुकसान पर चर्चा होने की उम्मीद है। हालांकि एजीएम (वार्षिक आम बैठक) के नौ सूत्रीय एजेंडे (जिसकी एक प्रति पीटीआई के पास है) में टूर्नामेंट का वित्तीय विवरण शामिल नहीं है, लेकिन बोर्ड द्वारा 'कार्यक्रम के बाद की रिपोर्ट के रूप में इस पर चर्चा की जाएगी जो एक मानक संचालन प्रक्रिया है।

आईसीसी की सदस्यता, एसोसिएट सदस्यों की बैठक की रिपोर्ट और आईसीसी विकास पुरस्कार प्रस्तुति पर चर्चा के साथ-साथ आईसीसी के नए बाहरी लेखा परीक्षक की नियुक्ति भी एजेंडे में है। एक अन्य महत्वपूर्ण बिंदू- चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत का पाकिस्तान नहीं जाना - आईसीसी बोर्ड के

आधिकारिक एजेंडे का हिस्सा नहीं है जब तक कि इसे 'कोई अन्य काम वर्ग के तहत अध्यक्ष की अनुमति से नहीं लाया जाता। हालांकि चीजों की जानकारी रखने वाले आईसीसी के एक सूत्र ने कहा कि आईसीसी में सभी की मुख्य रूप से इसमें है कि शाह वैश्विक संस्था की बागडोर कब संभालेंगे।

आईसीसी सूत्र ने कहा, 'यह कैसे के बारे में नहीं है, बल्कि कब के बारे में है क्योंकि बीसीसीआई सचिव के रूप में उनके पास अब भी एक साल बचा है जिसके बाद संविधान के अनुसार भारतीय बोर्ड में उनका ब्रेक (कूलिंग ऑफ पीरियड) 2025 में शुरू होगा। हालांकि अगर उन्हें 2025 में पदभार संभालना है तो बार्कले दिसंबर 2024 से दिसंबर 2026 तक दो साल का अपना तीसरा कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएंगे।

उन्होंने कहा, 'एक विचारधारा यह है कि क्या होगा यदि आईसीसी की अध्यक्षता का कार्यकाल दो-दो साल के तीन कार्यकाल से बदलकर तीन-तीन साल के दो कार्यकाल हो जाए तो कुल कार्यकाल छह साल ही रहेगा।% माना जा रहा है कि अगर बार्कले का मौजूदा कार्यकाल तीन साल का होता है तो शाह बीसीसीआई सचिव के रूप में छह साल पूरे कर सकते हैं और फिर 2025 में तीन साल के लिए आईसीसी चेयरमैन बन सकते हैं जबकि उस दौरान बीसीसीआई में उनका ब्रेक शुरू होगा। फिर 2028 में वह बीसीसीआई में वापसी करके बोर्ड अध्यक्ष बन सकते हैं।

जय शाह को लिखा पत्र, दो राष्ट्रीय दिव्यांग टीम बनाने का रखा प्रस्ताव

नई दिल्ली-इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रिचर्ड गोल्ड ने अपने समकक्ष बीसीसीआई सचिव जय शाह को पत्र लिखकर दो राष्ट्रीय दिव्यांग टीम बनाने का प्रस्ताव दिया है जिससे समुदायों में इस खेल को लोकप्रिय बनाने में मदद मिल सके। इसमें एक दृष्टिबाधित (नेत्रहीन) और एक संयुक्त (शारीरिक रूप से विकलांग, बौद्धिक रूप से विकलांग और श्रवण बाधित) टीम बनाने का प्रस्ताव दिया गया है।

इस समय भारत में एक 'डिफरेंटली एबल्ड क्रिकेट काउंसिल ऑफ इंडिया (डीसीसीआई) है जो बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) की एक उप समिति है। लेकिन भारतीय बोर्ड स्वतंत्र रूप से कोई टूर्नामेंट आयोजित नहीं करता है। कोलंबो में आईसीसी सालाना कांफ्रेंस के दौरान कुछ चर्चा होगी जिसमें गोल्ड को मुख्य कार्यकारी अधिकारियों की बैठक में हिस्सा लेना है। गोल्ड ने एक पत्र लिखा है जिसे ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी निक हॉकले, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के मुख्य परिचालन अधिकारी सलमान नासिर और दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी फ्लेट्सी मोसेकी को भी भेजा गया है।

पेरिस ओलंपिक
सेमीफाइनल पर तैराक श्रीहरि नटराज की नजरें

नई दिल्ली - पिछले साल राष्ट्रीय खेलों में आठ स्वर्ण समेत दस पदक जीतने वाले भारतीय तैराक श्रीहरि नटराज 2017 से लगातार खेल रहे हैं और कड़े अभ्यास से थककर आखिर उन्हें कुछ समय का ब्रेक लेना पड़ा। नटराज ने कहा, 'मुझे आराम की जरूरत थी क्योंकि 2023 सत्र काफी व्यस्त था जिसमें इतने सारे टूर्नामेंट थे। मुझे लगा कि अगर ब्रेक नहीं लिया तो शरीर टूट जाएगा।

उन्होंने कहा, 'इससे चोट का भी डर रहता या अभ्यास की इच्छा ही मर जाती। शरीर पर काफी दबाव था लिहाजा मैने कुछ समय का ब्रेक ले लिया। ब्रेक के बाद तरोताजा होकर 23 बरस के नटराज दूसरा ओलंपिक खेलने को तैयार हैं जिसमें वह सौ मीटर बैकस्ट्रोक में भाग लेंगे। 'यूनिवर्सिलिटी कोटा से ओलंपिक जा रहे नटराज ने तोक्यो ओलंपिक के लिए सरधे क्वालीफाई किया था। यूनिवर्सिलिटी कोटा के तहत जिस देश के तैराक सीधे क्वालीफाई नहीं कर सके हों , उनके सर्वोच्च रैंकिंग वाले दो तैराकों को ओलंपिक खेलने का मौका मिलता है।

नटराज ने कहा, 'यह निराशाजनक था कि मैं सीधे क्वालीफाई नहीं कर सका लेकिन इसे लेकर चिंतित नहीं हूं। मुझे कोटा मिल गया है और अब या तो मैं अपने अभ्यास पर फोकस कर सकता हूं या इसका दुख मना सकता हूं कि मुझे सीधे क्वालीफिकेशन नहीं मिला। मैं अभ्यास पर फोकस कर रहा हूं। ब्रेक से लौटने के बाद उन्होंने स्पेन और फ्रांस में मेयर नोस्ट्रम मीट में दो रजत पदक जीते।

कुछ वर्षों में विश्व चैंपियन बनने के लिए एक-दूसरे के सामने होंगे भारतीय

नईदिल्ली, एजेंसी। 64 खानों के खेल के मैदान पर भारतीय प्रतिभाओं की तीव्र प्रगति ने 5 बार के विश्व चैंपियन विश्वनाथन आनंद को यह विश्वास दिलाया है कि जल्द ही ऐसी स्थिति आ सकती है, जहां दो भारतीय विश्व चैंपियन के ताज के लिए एक-दूसरे के खिलाफ खेल रहे होंगे। आनंद ने भविष्यवाणी की कि वे (भारतीय खिलाड़ी) कुछ वर्षों में (विश्व शतरंज चैंपियनशिप में) एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी हो सकते हैं। आनंद पत्नी अरुणा और भारत के शीर्ष रैंक वाले शतरंज खिलाड़ी अर्जुन एरिगैसी के साथ मुख्य अतिथि थे। तीनों ने द इंडियन एक्सप्रेस समूह के कार्यकारी निदेशक अनंत गोयनका और द इंडियन एक्सप्रेस के सहायक संपादक अमित कामथ के साथ बातचीत की।

विश्वनाथन आनंद ने कहा, 'शतरंज के खिलाड़ियों की यह मौजूदा भारतीय पीढ़ी शीर्ष के इतने करीब है कि वे ज्यादातर चीजों को सूंघ रहे हैं। जाहिर है, सबसे अधिक बाजी (विश्व चैंपियनशिप में) के साथ

खेलना एक ऐसा अनुभव है, जिसका आपको बहुत ही प्राकृतिक तरीके से सामना करना पड़ता है, ताकि आप यह समझ सकें (कि वहां दबाव कैसा होता है)।'

देश के पहले ग्रैंडमास्टर आनंद ने देश में शतरंज क्रांति की अगुआई की। इसी का नतीजा है कि तीन भारतीय अर्जुन एरिगैसी (विश्व नंबर 4), डी गुकेश (विश्व नंबर 7) और आर प्रज्ञानंद (विश्व नंबर 8) मौजूदा शीर्ष 10 रैंक में जगह बना पाए हैं। गुकेश इस साल के अंत में विश्व चैंपियन के ताज के लिए डिंग लिरेन को चुनौती देंगे। अगर वह चीनी ग्रैंडमास्टर से खिताब छीनने में कामयाब हो जाते हैं, तो वह सबसे कम उम्र के विश्व चैंपियन बन जाएंगे।विश्वनाथन आनंद ने कहा, 'भारतीय अब बहुत सारे खेलों का आनंद ले रहे हैं। हम कुछ नया चाहते हैं इसलिए पिछले साल हमारे पास ग्लोबल शतरंज लीग थी, जो खेल को आयोजित करने का एक नया भारतीय तरीका था। कुल मिलाकर, मैं कहूंगा कि आज भारत में खिलाड़ी बनना 20 साल पहले की तुलना में बहुत आसान है।

परिवार ही नहीं, पूरे गांव का अधूरा सपना सच करने के लिए खेलेंगे गाजीपुर के राजकुमार

नई दिल्ली-करीब तीन हजार की आबादी वाले करमपुर गांव से हॉकी स्टिक थामकर सैकड़ों लड़कों ने ओलंपिक खेलने का सपना देखा लेकिन इसे पूरा करने का मौका सिर्फ राजकुमार पाल को मिला है और 'गाजीपुर के राजकुमार के नाम से मशहूर मिडफील्डर की ख्वाहिश पेरिस में अच्छा प्रदर्शन करके हर एक अधूरे सपने को पूरा करने की है।

वाराणसी से करीब 40 किलोमीटर दूर गाजीपुर के गांव करमपुर के मेघबरन स्टेडियम पर हॉकी का ककहरा सीखने वाले बच्चों के प्रेरणास्रोत बन गए हैं राजकुमार। एक ऐसा गांव जहां से 400 से अधिक लड़कों को हॉकी के जरिए रोजगार तो मिला लेकिन भारत की नुमाइंदगी का मौका नहीं। इनमें राजकुमार के दोनों भाई जोखन और राजू भी शामिल हैं जो देश के लिए नहीं खेल पाए।

राजकुमार ने अपने पहले ओलंपिक के लिए रवाना होने से पहले इंटरव्यू में कहा, 'हम तीनों भाई हॉकी खेलते हैं। बीच वाले भाई भारतीय टीम के शिविर में रह चुके हैं और बड़े भाई राष्ट्रीय स्तर पर खेले हैं। दोनों भारत के लिए नहीं खेल सके और अब एक रेलवे से और एक सेना से खेलते हैं। अभावों के बीच अपने कोच तेज बहादुर सिंह की

मदद से हॉकी के शौक को परवान चढ़ाने वाले 26 वर्ष के इस मिडफील्डर ने कहा, 'मेरे गांव के मैदान से 400 से ज्यादा लड़कों को हॉकी के जरिए नौकरी मिल गई लेकिन इस स्तर पर कोई नहीं खेला। मेरे गांव के लोगों की नजरें मुझ पर है और मैं अपने भाइयों और उन सभी के अधूरे सपने पूरा करने के लिए पेरिस में कोई कोर कसर नहीं छोड़ूंगा।

10 साल की उम्र में शुरुआत

दस बरस की उम्र में करमपुर के मेघबरन स्टेडियम से हॉकी के अपने सफर की शुरूआत करने वाले राजकुमार ने 2018 में बेल्जियम में पांच देशों के अंडर 23 टूर्नामेंट में खेला और 2020 में भारतीय टीम में पदार्पण किया। अब तक 53 अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके राजकुमार के पिता कल्पनाथ का 2011 में एक सड़क हादसे में निधन हो गया था। राजकुमार ने कहा, 'वह दो साल परिवार के लिए बहुत कठिन थे और मुझे लगा था कि अब आगे नहीं खेल पाऊंगा लेकिन मेरे परिवार ने हार नहीं मानी। तोक्यो ओलंपिक में मेरा चयन नहीं हो सका था लेकिन उससे निराश हुए बिना मेहनत की तो अब पेरिस जा रहा हूं। जब पेरिस में मैदान पर उतरूंगा तो यह सब कुर्बानियां याद रखूंगा। उन्होंने कहा, 'जब ओलंपिक टीम में चयन की खबर मिली थी तो अपना अतीत याद करके मेरे आंसू निकल गए और पिताजी को बहुत याद किया। घर पर फोन किया तो मम्मी भी रो पड़ी थी। मैं अपने अतीत को कभी नहीं भूलता और इससे प्रेरणा मिलती है।

एशिया कप (जकार्ता 2022) और एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी (ढाका 2021) में कांस्य पदक विजेता रही भारतीय टीम के सदस्य राजकुमार ने कहा कि पहला ओलंपिक खेलने का कोई दबाव वह महसूस नहीं कर रहे।

संक्षिप्त समाचार

जनता को सच्चाई बतानी चाहिए, गहलोत ने भजनलाल के दावों पर उठाए सवाल

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के बिजलीघरों को आपूर्ति के लिए छत्तीसगढ़ में कोयला ब्लॉक आवंटन को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दावों पर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने सवाल उठाए हैं। गहलोत ने कहा- राजस्थान और छत्तीसगढ़ की जनता को इसकी सच्चाई बताई जानी चाहिए. क्या दोनों मुख्यमंत्रियों को अधिकारी इस मुद्दे पर गुमराह कर रहे हैं ? या दोनों मुख्यमंत्री मिलकर अपने-अपने राजनीतिक हितों के अनुरूप जनता को गुमराह कर रहे हैं. बिजली जैसे जरूरी मुद्दे पर दोनों सरकारों को संवेदनशील होने की आवश्यकता है। इस तरह की भ्रम फैलाने वाली राजनीति से किसका भला होगा ? उन्होंने छत्तीसगढ़ में मुख्यमंत्री के बयान का हवाला देते हुए कहा है कि राजस्थान के मुख्यमंत्री को जनता को इसकी सच्चाई बतानी चाहिए। दरअसल, राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का दावा है कि छत्तीसगढ़ सरकार ने 91.21 हेक्टेयर वन भूमी का उपयोग करने की अनुमति दे दी है, जबकि छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का कहना है कि ऐसी कोई बात नहीं है। अशोक गहलोत ने आज एक बयान जारी कर कहा कि यह बेहद ही आश्चर्यजनक है कि राजस्थान के मुख्यमंत्री और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री के बयानों में विरोधाभास है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा दावा करते हैं कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा राजस्थान के विद्युत गृहों के लिए कोयले की आपूर्ति के लिए हसदेव अरण्य कोलफील्ड में संचालित परसा ईस्ट एवं कांता बासन (पीईकेबी) कोल ब्लॉक की 91.21 हेक्टेयर वनभूमि का उपयोग करने की अनुमति प्रदान कर दी है, लेकिन आज छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय कहते हैं कि ऐसी कोई बात ही नहीं है।

बेटे के साथ हैवानियत कर मां ने बनवाया वीडियो

हरिद्वार, एजेंसी। वह 11 साल के लड़के के पेट पर बैठ जाती है। फिर लगातार मुक्कों से उसपर हमला करने लगती है। बच्चे का बाल पकड़कर नोचने लगती है। उसका सिर जोर-जोर से जमीन पर पटकती हुई दिखती है। वायरल हो रहे वीडियो में हैवानियत की हदें पार करने वाली कोई और नहीं बल्कि उस मासूम की मां निकली। जन्म देने वाली मां अपने बेटे को पीटते हुए चिल्लाकर कहती है, बनाओ इसका वीडियो। यह देवभूमि उत्तराखंड के हरिद्वार के झबरेडा का मामला है। मां की दरिंदगी का वीडियो वायरल हो गया है। वीडियो में मासूम रो-रोकर चिल्ला रहा है। वह पीने के लिए पानी मांग रहा है। लेकिन उसकी मां लगातार पीट रही है। वह उसका दोनों हाथ पकड़कर उसके छाती को दांत से काटने लगती है। ऐसा वह दो बार करती है। बेटे का मुंह नोचकर गला दबाने लगती है। मासूम अपनी मां को पीछे हटाने की कोशिश करता है। लेकिन उसकी मां गर्दन मोड़ देती है। फिर वह उसे लात मारकर भगा देती है।

कुत्ते से हैवानियत, डंडे से पीटा फिर गले में रस्सी डाल सड़क पर घसीटा

नंदुरबार, एजेंसी। महाराष्ट्र के नंदुरबार शहर में पुलिस ने एक शख्स पर कुत्ते से हैवानियत की हदें पार करने के मामले में मामला दर्ज किया है। उसने कथित तौर पर पहले डंडे से कुत्ते को बेरहमी से पीटा और फिर गले में रस्सी डालकर उसे सड़क पर घसीटा। इस घटना में कुत्ते की दर्दनाक मौत हो गई। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पीपुल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स के लिए काम करने वाली महिला की शिकायत पर मुकदमा दर्ज हुआ है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि 10 जुलाई की शाम माधव गुरव (50) ने लावारिस कुत्ते की डंडे से बेरहमी से पिटाई कर दी। उन्होंने बताया कि गुरव ने कथित तौर पर कुत्ते के गले में रस्सी बांध उसे सड़क पर घसीटा। अधिकारी ने बताया कि पीपुल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनिमल्स (पेटा) के लिए काम करने वाली प्रीति जायसवाल और उनकी दोस्त घायल कुत्ते को नंदुरबार के एक सरकारी अस्पताल ले गईं, लेकिन दो घंटे के भीतर ही कुत्ते ने दम तोड़ दिया। जब जायसवाल ने पेटा के अन्य सदस्यों को घटना के बारे में बताया तो सिनचना सुब्रमण्यम (30) ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। अधिकारी ने बताया कि इसके बाद गुरव के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 325 और पशु क्रूरता निवारण अधिनियम के तहत पशु को मारने या अपंग करने का मामला दर्ज किया गया। अधिकारी ने बताया कि पुलिस ने गुरव को नोटिस भेजा है और मामले की जांच जारी है।

विवाद के बाद धाम शब्द हटाया, दिल्ली में केदारनाथ मंदिर बनाकर रहेंग

रौतेला ने किया ऐलान

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली में केदारनाथ मंदिर बनाने के मुद्दे पर उपजा विवाद बढ़ता ही जा रहा है। बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) ने केदारनाथ मंदिर की नकल बनाने की योजना के लिए ट्रस्ट के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की धमकी दी है। वहीं, श्री केदारनाथ धाम दिल्ली ट्रस्ट के संस्थापक सुरेंद्र रौतेला ने बुधवार को कहा कि वह यहां केदारनाथ मंदिर बनाकर ही रहेंगे।

श्री केदारनाथ धाम दिल्ली ट्रस्ट के संस्थापक सुरेंद्र रौतेला ने कहा कि वह दिल्ली में केदारनाथ मंदिर की प्रतिकृति बनाने से पीछे नहीं हटेंगे और जरूरत पड़ने पर कानूनी लड़ाई लड़ने के लिए भी तैयार हैं।

उत्तराखंड में मंदिरों और मंदिरों की देखरेख करने वाली शीर्ष संस्था बद्रीनाथ-

केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) ने दिल्ली के बुराड़ी में मूल केदारनाथ मंदिर की नकल बनाने की योजना के लिए दिल्ली ट्रस्ट के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की धमकी दी है। वहीं, चार धाम से जुड़े उत्तराखंड के पुजारियों ने भी दिल्ली में केदारनाथ मंदिर बनाने की योजना पर घोर आपत्ति जताई है। विवाद के बीच ट्रस्ट के संस्थापक रौतेला ने कहा कि उन्होंने भ्रम से बचने के लिए अपने ट्रस्ट के नाम से धाम शब्द हटाने का फैसला किया है, लेकिन यहां भक्तों के लिए मंदिर बनाने से पीछे नहीं हटेंगे। रौतेला ने पीटीआई-भाषा से कहा, केदारनाथ की तर्ज पर मंदिर बनाने वाले हम पहले लोग नहीं हैं। इंदौर और मुंबई में भी ऐसा है। अगर वे (बीकेटीसी) कानूनी कार्रवाई करना चाहते हैं तो उन्हें सभी के खिलाफ ऐसा करना चाहिए। उन्होंने कहा, हमने कुछ भी गलत नहीं किया है, हम हिंदुओं और सनातन धर्म के लिए अच्छा काम कर रहे हैं। कानूनी चुनौती के बावजूद हम मंदिर बनाना जारी रखेंगे। रौतेला ने बताया कि दिल्ली में केदारनाथ मंदिर उनके ट्रस्ट द्वारा एकत्रित दान राशि से बनाया जाएगा और अगले दो से तीन वर्षों में तैयार हो जाएगा। वहीं, बीकेटीसी के अध्यक्ष अजेंद्र अजय ने आरोप लगाया कि एक ऑनलाइन एप्लिकेशन का उपयोग करके भक्तों को दिल्ली में केदारनाथ धाम के ऑनलाइन दर्शन की व्यवस्था करने का वादा किया जा रहा है। इसके खिलाफ उन्होंने उत्तराखंड में श्री केदारनाथ धाम दिल्ली ट्रस्ट के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। अजय ने कहा, हमने कानूनी राय ली है और दिल्ली में केदारनाथ मंदिर के निर्माण को रोकने के लिए विभिन्न विकल्पों पर विचार कर रहे हैं।

उमर अब्दुल्ला ने कहा, सरकार को आतंकी हमलों में जिम्मेदारी लेनी होगी

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने डोडा जिले में सोमवार शाम सुरक्षाबलों पर आतंकवादी हमले को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधा। इस हमले में एक अधिकारी सहित सेना के चार जवान और एक स्थानीय पुलिसकर्मी शहीद हो गया था। उमर अब्दुल्ला ने कहा कि पिछले एक साल से जम्मू में आतंकी गतिविधियां बढ़ी हैं। शायद ही जम्मू का कोई ऐसा इलाका है, जो आतंकी गतिविधियों से बचा है। पीर पंजाल में लगातार आतंकी हमले हो रहे हैं। रियासी, सांबा, कठुआ में भी हमले हो रहे हैं। अगर हमारी सूचना सही है तो पिछले एक साल में हमारे सुरक्षा बलों के 55 लोग मारे गए हैं। हर हमले के बाद केंद्र सरकार कहती है कि आतंकवाद अपनी अंतिम सांसें ले रहा है, लेकिन हमें आतंकवाद का खात्मा होता नजर नहीं आ रहा है।

सरकार यह नहीं बताती है कि आतंकवाद को खत्म करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं। ऐसे हमलों के बाद किसी न किसी की जिम्मेदारी जरूर बनती है। सरकार को अपनी जिम्मेदारी स्वीकारनी होगी।उन्होंने जम्मू-कश्मीर के डीजी के बारे में कहा कि उन्होंने सियासत में कदम रख दिए हैं। बेहतर यह होता कि सियासत का काम नेताओं को करने देते। उनका काम यहां के हालातों को बेहतर बनाना, आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई करना है। डीजी का काम आतंकवादियों के खिलाफ लड़ना है, इसलिए उनको अपना काम करना चाहिए और हमको अपना काम करने दें।

उमर अब्दुल्ला ने मुहर्रम के जुलूस में लोगों की गिरफ्तारी पर कहा कि पुलिस को इस तरह की कार्रवाई नहीं करनी चाहिए। किसी और धर्म के लोगों को निशाना नहीं बनाया जाता है।

शिमला में अंग्रेजों के जमाने से हो रहे शोर के खिलाफ शिकायत

शिमला, एजेंसी।
हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में रोजाना ऑफिस टाइमिंग के दौरान सुबह व शाम को बजने वाले सायरन के खिलाफ पुलिस में शिकायत की गई है। शिकायतकर्ता महिला ने सायरन बजने से होने वाले ध्वनि प्रदूषण का हवाला देते हुए शहर के दो थानों में शिकायत दर्ज करवाई है। इस शिकायत मिलने से पुलिस भी हैरान है और उसने सायरन बजाने वाले सरकारी विभागों से पत्राचार कर इस सम्बन्ध में जवाब मांगा है। साथ ही पुलिस सायरन को लेकर कानूनी पहलुओं पर भी विचार कर रही है, क्योंकि यह मामला सीधे तौर पर प्रशासन व सरकार से जुड़ा है।

शहर के दो पुलिस थानों सदर व छोटा शिमला में दी शिकायत में मानवाधिकार कार्यकर्ता सुमन कदम ने सायरन बजाए जाने की परम्परा पर सवाल खड़े किए हैं, साथ ही यह भी कहा है कि इसकी तीखी आवाज से शहरवासी परेशान हो रहे हैं और खासकर बुजुर्गों व बीमार लोगों के लिए यह बेहद नुकसानदायक है।

दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने सायरन बजाए जाने को गैर कानूनी ठहराते हुए इसके लिए जिम्मेवार अधिकारियों के खिलाफ स्रढ्ढक्र दर्ज करने की भी मांग की है। अपनी शिकायत में महिला ने तर्क दिया है कि आज के तकनीकी युग में ऑफिस टाइमिंग के लिए सायरन बजाना तर्गसंगत नहीं है, क्योंकि सभी के पास मोबाइल व घड़ियां हैं और किसी को भी ऑफिस टाइमिंग की सूचना देने की जरूरत नहीं है।

सर्वोच्च न्यायालय व हिमाचल सरकार द्वारा किसी भी प्रकार की ध्वनि बजाने के लिए इसकी मात्रा 55 डेसिबल निर्धारित की गई है, जबकि शिमला शहर के सी.टी.ओ. कार्यालय और छोटा शिमला में राज्य सचिवालय के समीप पुलिस थाना के पीछे दीवार पर लगे सायरन की ध्वनि इससे कहीं अधिक है। छोटा शिमला में लगे सायरन की ध्वनि को मापा गया तो यह 89.3 डेसिबल पाई गई, जबकि सी.टी.ओ. में लगे भौंपू की ध्वनि की मात्रा 88.30 डेसिबल पाई गई। इस संबंध में शिकायतकर्ता महिला ने पुलिस थाना छोटा शिमला व सदर पुलिस थाना शिमला में इनकी शिकायत देते हुए हिमाचल प्रदेश इंस्ट्रूमैंटल्ज (कंट्रोल ऑफ नोइसेज) एक्ट-1969 की धारा-3 के तहत स्रढ्ढक्र दर्ज करने को लेकर शिकायत पत्र भेजा है। शिकायतकर्ता का कहना है कि इस संबंध में जब जिला प्रशासन से इसकी अनुमति के बारे में पूछा गया तो ए.डी.एम. कानून व्यवस्था ने साफ कहा है कि इस प्रकार की कोई अनुमति जिला प्रशासन की ओर से नहीं दी गई है। यानी जो सायरन लंबे समय से शिमला में बज रहे है, वह पूरी तरह से गैर कानूनी है।

बिजली बिल आधे की जगह दोगुने हुए, बढ़ी दरों को लेकर कांग्रेस का एकसाथ प्रदर्शन

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने बुधवार को डिस्कॉम द्वारा बिजली दरों में बढ़ोतरी के खिलाफ राष्ट्रीय राजधानी में 55 से अधिक स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किया। हाथों में तख्तियां लिए प्रदर्शनकारी कांग्रेसियों ने आम आदमी पार्टी के नेतृत्व वाली दिल्ली सरकार के खिलाफ नारे लगाए और शहर में डिस्कॉम के साथ मिलीभगत का आरोप लगाया। पार्टी कार्यकर्ताओं और जनता को संबोधित करते हुए दावा किया कि केजरीवाल सरकार ने बिजली की दरों को आधा करने का वादा किया था लेकिन पिछले एक दशक में सरकार ने पिछले दरवाजे से दरों को दोगुना कर दिया। यादव ने कहा, आम आदमी पार्टी की सरकार इस वादे के साथ आई थी कि ये बिजली बिल आधे कर देंगे, आज 10 साल बाद यह साफ दिख रहा है कि जो बिल आधे होने चाहिए थे वह दोगुने हो गए हैं। शीला दीक्षित की सरकार के समय 2013 में औसत बिलिंग

दर लगभग 5 रुपए थी, अब यह 10 रुपए प्रति यूनिट हो गई है। अगर केजरीवाल ने आधी दर पर बिजली देने का अपना वादा पूरा किया होता तो दर 2.50 रुपए होनी चाहिए थी। इस सरकार ने वादे बहुत किए लेकिन पूरे कुछ नहीं किए। यह सरकार लगातार लोगों को धोखा देने का काम कर रही है। यादव ने आरोप लगाया कि डिस्कॉम को बिजली खरीद समायोजन शुल्क में नौ प्रतिशत से अधिक की बढ़ोतरी करने की अनुमति मिल गई है। कांग्रेस नेता ने कहा कि बिजली दरों में इस वृद्धि से दुकानदारों, लघु एवं मध्यम औद्योगिक इकाइयों और आम घरों पर भारी वित्तीय बोझ पड़ा है। यादव ने आरोप लगाया कि केजरीवाल सरकार पिछले 10 वर्षों से बिजली उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त वित्तीय बोझ डालने के लिए बिजली कंपनियों को हर वर्ष चुपचाप पीपीएसी सरचार्ज में छह से 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी करने की अनुमति दे रही है। उन्होंने यह भी दावा किया कि कांग्रेस सरकार ने अपने 15 साल के कार्यकाल में बिजली दरों में केवल चार बार और नाममात्र वृद्धि की थी, लेकिन केजरीवाल सरकार के तहत डिस्कॉम को पीपीएसी सरचार्ज के नाम पर बिजली दरें बढ़ाने की खुली छूट दी गई, जिससे बिजली उपभोक्ताओं पर असहनीय वित्तीय बोझ पड़ा है।

पेरिस में ओलंपिक से पहले बवाल 100 सालों से गंदगी के लिए बैन नदी में मेयर ने लगा दी छलांग

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस की राजधानी पेरिस में 26 जुलाई से 10 अगस्त तक ओलंपिक खेलों का आयोजन होना वाला है। इस दौरान पूरी दुनिया की नजर राजधानी पर होगी। ओलंपिक शुरू होने से कुछ दिन पहले शहर के बीच बह रही सीन नदी को लेकर बवाल शुरू हो गया है। कुछ समय पहले तक लोग जिस नदी में पेशाब करने की धमकी दे रहे थे, पेरिस की 65 साल की मेयर एने हिडाल्गो ने उसी नदी में छलांग लगा दी और लोगों को नया संदेश दिया । जानकारी के मुताबिक पेरिस की सीन नदी काफी सालों से गंदगी को लेकर चर्चा में रही है। गंदगी के कारण ही इस नदी में पिछले 100 सालों से तैराकी पर बैन है। पेरिस ओलंपिक में मैराथन तैराकी और ट्राइथलॉन के इवेंट्स इसी नदी पर होने हैं। के लिए इस नदी को साफ करने के लिए 11 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा रकम खर्च हुई है। इसके बावजूद पेरिस के कई लोगों का मानना है यह कि नदी अब भी इवेंट्स के आयोजन के लिए तैयार नहीं है। 2024 ओलिंपिक के दौरान

तैराकी स्पर्धाओं की मेजबानी के मद्देनजर सीन नदी की स्वच्छता दिखाने के लिए मेयर ने बुधवार को इसमें डुबकी लगाई। 'वेटसूट' पहनकर हिडाल्गो ने अपने कार्यालय सिटी हॉल और नोट्रे डेम कैथेड्रल के पास नदी में छलांग लगाई। पेरिस 2024 के प्रमुख टोनी एस्टांगुएट और पेरिस क्षेत्र के शीर्ष सरकारी अधिकारी मार्क गिलियूम भी उनके साथ शामिल थे। एने हिडाल्गो ने नदी से बाहर निकलते हुए कहा, 'पानी बहुत अच्छा है। थोड़ा ठंडा है, लेकिन इतना खराब नहीं है।' यह 26 जुलाई से शुरू होने वाले ओलिंपिक खेलों से पहले नदी की स्वच्छता दिखाने का प्रयास है जिसमें सीन नदी पर नावों पर खिलाड़ियों की परेड भी शामिल है। जून के शुरू में जल गुणवत्ता जांच में ई कोलाई बैक्टीरिया का असुरक्षित स्तर मिला था जिसके बाद हाल ही में सुधार हुआ। नदी की स्वच्छता के लिए डेढ़ अरब डॉलर का खर्चा किया गया है। सीन नदी के प्रदूषण स्तर को लेकर भी चिंता बनी हुई है जिससे हर दिन नदी के पानी की जांच की जा रही है और हाल में जांच के परिणामों में सुधार दिखा है। उल्लेखनीय है कि इसके आयोजक इन खेलों के जरिए ऐसी विरासत तैयार करना चाहते हैं जिससे ओलिंपिक्स के लिए बनाई गई सुविधाओं का इस्तेमाल लंबे समय तक स्थानीय बच्चे और युवा कर सकें। पेरिस के बाहरी इलाके में किशोर और युवा लड़कियों को ओलिंपिक्स और पैरालिंपिक्स के खत्म होने का इंतजार है। ऐसा इसलिए क्योंकि जिस स्विमिंग क्लब में 10 वर्षीय लायला केबी प्रशिक्षण लेती है, उसे एक ओलिंपिक्स पूल विरासत में मिलेगा।

बांग्लादेश में आरक्षण को लेकर बवाल, दूसरे दिन भी छात्रों ने किया प्रदर्शन

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में सरकारी नौकरी में आरक्षण के खिलाफ बुधवार को भी छात्रों का प्रदर्शन जारी रहा। छात्रों को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले और रबर की गोलियां चलाई। एक दिन पहले हुई हिंसक झड़पों में छह लोगों की मौत हो गई थी और कई घायल हुए थे।

सुरक्षा बलों की इस कार्रवाई के विरोध में प्रदर्शनकारियों ने गुरुवार को देशव्यापी बंद का आह्वान किया है। आंदोलन के एक प्रमुख समन्वयक आसिफ महमूद ने एक पोस्ट में कहा कि अस्पताल और आपातकालीन सेवाओं को छोड़कर सभी प्रतिष्ठान बंद रहेंगे।

प्रदर्शनकारियों की ओर से सरकारी नौकरी में 1971 के बांग्लादेश मुक्ति युद्ध में शामिल परिवार के सदस्यों के लिए आरक्षण समाप्त करने की मांग की जा रही है। लेकिन, प्रधानमंत्री शेख हसीना की तरफ से इससे साफ इन्कार कर दिया गया, जिसके बाद प्रदर्शन तेज हो गए। छात्रों ने परिसर के बाहर लगाए नारे प्रदर्शनकारी छात्रों ने बुधवार को ढाका विश्वविद्यालय परिसर के बाहर नारे लगाए। विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर सभी विश्वविद्यालयों को अनिश्चितकाल के लिए बंद करने की घोषणा की गई है। ढाका विश्वविद्यालय ने छात्रों को छात्रावास खाली करने का भी आदेश दिया है। वहीं, प्रधानमंत्री ने हत्याओं की न्यायिक जांच कराने की घोषणा की है।

दक्षिण एशिया के प्रवासियों ने अमेरिका को समृद्ध किया-जेडी वैंस

वाशिंगटन, एजेंसी।
अमेरिका में इस साल पांच नवंबर को राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान होना है। उसके लिए सियासी दलों का चुनाव प्रचार तेज हो गया है। इस बीच, रिपब्लिकन पार्टी की ओर से उप राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार जेडी वैंस ने गुरुवार को अपनी पत्नी उष चिलुकुरी की प्रशंसा की। इसके साथ ही उन्होंने देश को वास्तव में समृद्ध बनाने में दक्षिण एशिया के प्रवासियों की भूमिका की भी सराहना की। उनकी ओर से यह बयान ऐसे समय में आया है, जब उन्होंने अमेरिका के उप राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी के नामांकन आधिकारिक रूप से स्वीकार कर लिया है।

यहां रिपब्लिकन नेशनल कन्वेंशन के तीसरे दिन अपने भाषण में वैंस ने कहा, मेरी शादी इस देश में आए दक्षिण एशियाई प्रवासियों की बेटी से हुई है। इन लोगों ने वास्तव में देश को कई तरीकों से समृद्ध किया है। उन्होंने कहा कि वह पक्षपाती हैं क्योंकि वह अपनी पत्नी से प्यार करता हूं। वैंस ने कहा कि वह

अपनी खूबसूरत पत्नी उषा से येल विश्वविद्यालय में मिले थे। उन्होंने कहा, आज शाम मेरी खूबसूरत पत्नी उषा भी यहां शामिल हुई हैं। वह एक अच्छी वकील और एक बेहतर मां हैं।

भारतीय प्रवासियों की बेटी उषा सैन डिएगो के एक उपनगर में पली-बढ़ीं। वह येल विश्वविद्यालय से पढ़ीं हैं। उषा अभी मुंगेर, टॉल्स एंड एलएलपी में नागरिक मुकदमों की वकील हैं। जेडी वैंस और उषा की शादी 2014 में केंटकी में हुई थी। दंपति के तीन बच्चे हैं। जिनमें दो बेटे इवान और विवेक और एक बेटी मीराबेल शामिल हैं। ओहायो से सीनेटर वैंस ने ट्रंप पर हमले को लेक कहा, हम यह नहीं भूल सकते कि यह शाम बहुत अलग हो सकती थी। यह उत्सव के बजाय दर्द और शोक का दिन हो सकता था। पिछले आठ वर्षों से राष्ट्रपति ट्रंप ने हमारे देश के लोगों के लिए लड़ते हुए अपना सब कुछ दिया है। उन्हें राजनीति की जरूरत नहीं थी। बल्कि देश को उनकी जरूरत थी। उन्होंने आसान रास्ता चुनने के बजाय अपमान, बदनामी और उत्पीड़न को सहना चुना। उन्होंने ऐसे इसलिए किया क्योंकि वह इस देश से प्यार करते हैं। वह लोगों की चिंता करते हैं। वह एक पल में एक हत्यारे के खिलाफ लड़ने के लिए खड़े हो सकते हैं। वैंस ने राष्ट्रपति जो बाइडन पर निशाना साधते हुए कहा, जब मैं चौथी कक्षा में था, तब बाइडन नाम के एक राजनेता ने नाफ्टा (उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौता) का समर्थन किया। यह एक खराब व्यापार समझौता था, जिसने मेक्सिकों को अनगिनत अच्छी नौकरियां भेजीं।

बांग्लादेशी पीएम का नौकर निकला अरबपति; हेलीकॉप्टर में करता है सफर

अकूत सम्पत्ति को लेकर हो रही खूब चर्चा

ढाका , एजेंसी। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना के नौकर को लेकर बड़ी आश्चर्यजनक खुलासा हुआ है। जानकारी के अनुसार रहे प्रधानमंत्री शेख हसीना का नौकर कोई मामूली इंसान नहीं बल्कि अरबपति निकला जिसकी अकूत संपत्ति की चारों तरफ चर्चा है। जो शख्स कभी घर पर पानी पिलाने का काम किया करता था, आज उसके पास लगभग 3 अरब रुपए की संपत्ति है। पीएम शेख हसीना ने अब उसके खिलाफ एक्शन लिया है। बांग्लादेश में भ्रष्टाचार के मामले में जमकर किरकिरी के बाद प्रधानमंत्री शेख हसीना ने एक्शन लेने की बात कही है। जिन लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, उनमें शेख हसीना का पूर्व नौकर भी है, जिसने 3.4 करोड़ डॉलर (लगभग 2.84 अरब भारतीय रुपए) की दौलत जमा की है। यही नहीं, वह अब हेलीकॉप्टर से यात्रा करता है। बांग्लादेश की मीडिया में हसीना के इस नौकर की खूब चर्चा है। अन्य आरोपियों में एक पूर्व सेना प्रमुख, एक पूर्व पुलिस प्रमुख, वरिष्ठ कर अधिकारी और राज्य भर्ती अधिकारी शामिल हैं। हसीना ने कार्रवाई की जानकारी देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार एक पुरानी समस्या है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129